हमारा इब्ने बतुता

(दिलचस्प और सबक आमोज़ सफ़रनामा)

माइल ख़ैराबादी

अनुवाद
नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

विषय-सूची

क्या ? | कहां ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा रहमवाला, निहायत मेहरबान है।

हमारा इब्ने बतूता

अरब सय्याह इब्ने बतूता की तरह 'हमारा इब्ने बतूता' कोई तारीख़ी (Historical) इंसान नहीं है, बल्कि वह एक अच्छा किरदार है, जिसके नमूने हर ज़माने में अनेकों जगहों पर चलते–फिरते पाए जाते रहे हैं। और ख़ुदा ने चाहा तो रहती दुनिया तक पाए जाते रहेंगे। नाज़ुक से नाज़ुक और सख़्त से सख़्त हालात भी में यह अच्छा किरदार अपनी राह पर सिर्फ़ जमा ही नहीं रहता, बल्कि वह हालात से टकरा कर उन्हें अपने लिए सही बनाने की कोशिश करता दिखाई देता है, जैसा कि इसके सफ़रनामे से साबित होता है। 'हमारा इब्ने बतूता' इसलिए सफ़र नहीं करता कि सिर्फ़ दुनिया के चमत्कार ही देखे, बल्कि वह जगह–जगह पहुंचकर वे रास्ते तलाश करता है, जिनसे इस्लाम की राहें खुलती हैं। अल्लाह उसकी मदद करता है और उसका सफ़र इस हैसियत से बहुत कामियाब कहा जा सकता है।

'हमारा इब्ने बतूता' सफ़र करता हुआ अजनबी जगहों पर पहुंचता है, भयानक जंगलों से गुज़रता है, सूखे और रेतीले मैदानों को पार करता है। भयानक समुद्रों और बड़ी–बड़ी नदियों को पार करता है। उसका मुक़ाबला डाकुओं से होता है, उसका मुक़ाबला ख़ूंख़ार जानवरों से होता है। इन सख़्त हालात में भी वह एक सच्चे मुसलमान और इस्लाम के नुमाइन्दे के रूप में सामने आता है। वह बड़ी बेख़ौफ़ी से हर जगह अपने ईमान का इज़हार करता है। हर जगह इस्लाम का चलता–फिरता नमूना दिखाई देता है। वह गिरफ़्तार भी होता है। उसे अपनी जान का ख़तरा भी होता है। वह ज़ख़्मी होता है, लूट लिया जाता है। वह इन हादसों का शिकार होता है, लेकिन न तो वह सब्र का दामन हाथ से जाने देता है और न ही घबराता है। वह इन नाज़ुक हालात में सिर्फ़ अल्लाह से मदद मांगता है और अल्लाह उसकी मदद फ़रमाता है। फिर कुफ़्र के अंधेरे हटते हैं, इस्लाम की रोशनी फैलती है और इस तरह जब 'हमारा इब्ने बतूता' आज़माइश के घेरों से निकलता है तो उसकी हिम्मत ऐसे ही दूसरे समुद्रों की तलाश की तरफ़ मोड़ देती है। 'हमारा इब्ने बतूता' आगे बढ़ता है। पीछे हटना वह अपनी नहीं इस्लाम की हार समझता है।

सवाल पैदा होता है कि 'हमारा इब्ने बतूता' के इस मज़बूत और अच्छे किरदार

की असलियत क्या है ? इसका जवाब ख़ुद उसका सफ़रनामा है । उसका सफ़रनामा पढ़ने वाला अच्छी तरह से समझ लेता है कि हमारे इब्ने बतूता का अक़ीदा 'ला इला–ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' है । उसकी ज़िन्दगी का असल मक़सद अल्लाह को ख़ुश करना और आख़िरत की कामियाबी हासिल करना है और वह अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह के दीन का बोलबाला चाहता है ।

'हमारा इब्ने बतूता' हमारे लिए एक नमूना है । उसका सफ़रनामा हमारे लिए एक रोशनी की हैसियत रखता है । हम उसका सफ़रनामा पढ़कर अपनी हालत भी देख सकते हैं और यह भी समझ सकते हैं कि मुसलमान होने की हैसियत से हमें कहां खड़ा होना चाहिए था, लेकिन हम खड़े कहां हैं ?

अगर हम इस मक़सद से उसका यह सफ़रनामा पढ़ेंगे तो हमारे ईमान में ताज़गी और हमारे इस्लाम में ताक़त आएगी और फिर यह भी हो सकता है कि हमारे अन्दर वह भावना उभरे जो ख़ुदा की मदद से हमें वह मर्तबा दिला दे जो मर्तबा इस सफ़रनामे में हमारे इब्ने बतूता का है ।

यह सफ़रनामा इसी मक़सद के लिए मुरत्तब किया गया है । सफ़रनामा मुरत्तब करते वक़्त जो ऊंचा क़िरदार जहां मिला उसे मुरत्तब करने वाले ने अपना इब्ने बतूता मान लिया है और फिर उसके क़िस्सों और वाक़यों को अपने लफ़्ज़ों में ढाल कर इस सफ़रनामें का हिस्सा बना दिया, साथ ही और ज़्यादा दिलचस्पी और फ़ायदे के लिए अपनी ओर से भी कुछ वाक़यात शामिल कर दिए । इस तरह सफ़रनामा बहुत ही दिलचस्प हो गया ।

'हमारा इब्ने बतूता' दिल्ली के मशहूर अख़बार 'दावत' में क़िस्तवार छप चुका है । अल्लाह का शुक्र है, पढ़ने वालों ने इसे बहुत पसंद किया । इसकी पसन्दीदगी का अन्दाज़ा उन ख़तों से लगाया जा सकता है जो इस बारे में आते रहे । उन ख़तों में यह मांग थी कि जल्दी से जल्दी इसे किताबी शक्ल में प्रकाशित कर दिया जाए । अतः इस वक़्त हम इसे नज़रसानी और इज़ाफ़े के साथ प्रकाशित कर रहे हैं । हमारी कोशिश यह रही है कि इसकी ज़ुबान आसान और दिलचस्प रहे । ताकि हर आदमी इससे लाभ उठा सके ।

अल्लाह तआला से हमारी दुआ है कि जिस मक़सद के लिए यह सफ़रनामा मुरत्तब किया है, वह पूरा हो । इस सफ़रनामे के पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि वे इस सफ़रनामे के मुरत्तिब के लिए दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला उसे इस सफ़रनामे के हीरो के नक़्शे–क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । आमीन ।

—माइल ख़ैराबादी

जंगली लड़की

☆ शेर और घड़ियाल के बीच में

☆ दलदल

☆ लल्ली

☆ लल्ली का बापू

☆ बापू की आपबीती

☆ इस्लाम की तब्लीग़

☆ एक राजा

☆ राजा का इस्लाम कुबूल करना

☆ लल्ली की राजा से शादी

□

हमारे इब्ने बतूता के सफ़रनामे को पढ़ने से मालूम होता है कि एक बार वह जंगल में सात दिन भटकता फिरा। इस पूरे हफ़्ते में उसने जंगल में जो कुछ देखा, जिस तरह उसने जंगल में दिन काटे और जिस तरह अपने को जंगली जानवरों से बचाया वह सब उसने ख़ूब फैलाकर और मज़े ले–ले कर लिखा है। लेकिन हमारी नज़र में उस जंगल की सबसे मज़ेदार और नसीहत वाली बात वह है जो उसने आख़िर में लिखी है। हम उसे यहां बयान करते हैं।

शेर और घड़ियाल के बीच में

वह लिखता है कि—

अस्र का वक़्त था। मैंने सोचा नमाज़ पढ़ लेनी चाहिए। मैं पानी की तलाश में एक तरफ़ चला। कुछ दूर चलने के बाद एक नदी मिल गई। मैं उसके किनारे बैठकर वुज़ू करने लगा। अचानक पानी में ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई जानवर मेरी तरफ़ आ रह हो। मैंने देखा वह घड़ियाल था। मुंह खोले धीरे–धीरे मेरी तरफ़ आ रहा था। इस ख़तरे को अचानक सामने देखकर 'अल्लाह ख़ैर !' मेरी ज़ुबान से निकला और मैंने झट एक तरफ़ छलांग लगा दी। मैं दूर जा गिरा। ठीक उसी वक़्त जब मैंने छलांग लगाई थी, शेर की गरज सुनाई दी। अब जो देखा ठीक उसी जगह जिस जगह मैं बैठा वुज़ू कर रहा था, एक शेर घड़ियाल के जबड़ों में फंसा हुआ था और उसके मुंह से बच निकलने के लिए तड़प रहा था, लेकिन शेर के बनाए कुछ न बन सका। घड़ियाल शेर को पानी में घसीट ले गया और फिर न उभरा।

मैं सोचने लगा यह कैसे हो गया ? शेर घड़ियाल के मुंह में किस तरह आ फंसा ? आख़िर समझ में आया, मेरे सामने पानी में से घड़ियाल ने मुझे देखा और पीछे से शेर ने। फिर ठीक उस वक़्त जब घड़ियाल मुंह खोलकर मुझ पर झपटा, शेर ने मुझ पर छलांग लगा दी और ठीक उसी वक़्त मैं दूसरी तरफ़ कूद गया तो फिर हुआ यह कि मैं तो घड़ियाल से बच गया और मेरे बदले शेर घड़ियाल के मुंह में जा गिरा। मैं थोड़ी देर तक हक्का–बक्का सा रहा। फिर मैंने सोचा शायद अभी ज़िन्दगी बाक़ी है। मौत का एक दिन तय है, वह अपने वक़्त पर ही आएगी, तो फिर घड़ियाल मुझे कैसे पकड़ सकता था। इस वक़्त मुझे एक

बुज़ुर्ग का वह फ़रमान याद आया, जिसके हक़ होने में कोई शक नहीं, फ़रमाया–'मौत ज़िन्दगी की ख़ुद हिफ़ाज़त करती है ।'

दलदल

मैं यही सोच रहा था और अल्लाह का शुक्र अदा कर रहा था कि मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं किसी दलदली ज़मीन में आ फंसा । सचमुच मैं दलदल में था, और मेरे पैर पिंडलियों तक उसके अन्दर । अब तो मैं घबराया, वही बात हुई जो किसी ने कही है—

'एक आफ़त से तो मर–मर के हुआ था जीना,
और कैसी पड़ी सिर पर मेरे अल्लाह नई !'

मैंने दलदल से पैर निकालने की कोशिश की तो पैर निकलने के बदले घुटनों तक दलदल में चले गए । अब तो मैं परेशान होने लगा मैंने और ज़ोर लगाया तो एक बालिश्त और नीचे चला गया । यह देखकर मेरी परेशानी और बढ़ी और भई सचमुच पूछिए तो थी भी परेशान कर देने वाली बात । मैं दलदल से निकलने के लिए जितना ज़ोर लगा रहा था उतना ही अन्दर धंसता जा रहा था । यहां तक कि मैं क़मर तक अन्दर चला गया । अब मैंने चीख़ना शुरू कर दिया, 'बचाओ, बचाओ ख़ुदा के लिए बचाओ, मुझे यह ज़मीन निगले जा रही है ।' मैं पूरी ताक़त से चिल्ला रहा था । देर तक चिल्लाने के बाद जब मेरी मदद को कोई न आया तो मैंने यक़ीन कर लिया कि मेरी मौत घड़ियाल के मुंह में नहीं, बल्कि इस दलदल में थी । और अब घंटा आध घंटे में पता भी न चलेगा कि मैं कहां गया ?

मौत का यक़ीन हो गया तो मैंने ख़ुदा को याद किया और कलिमा पढ़ने लगा, अभी मैंने पांच, छः बार ही कलिमा पढ़ा था कि अचानक मेरे कानों में आवाज़ आई । 'ज़ोर न लगाओ, ज़ोर न लगाओ, एक तरफ़ झुक जाओ ।'

लल्ली

मैं उस तरफ़ देखने लगा, जिधर से आवाज़ आ रही थी । मैंने देखा सत्रह–अठारह साल की एक लड़की शेर की खाल पहने, एक मोटा–सा रस्सा कंधे पर डाले नदी की तरफ़ दौड़ी चली आ रही थी और पुकार रही थी, 'ज़ोर न लगाओ, ज़ोर न लगाओ ।'

उसे देखकर मैं ख़ुश हो गया । वह एक पेड़ के पास आकर रुकी उसने रस्से

का एक सिरा पेड़ से बांधा और दूसरा सिरा मेरी तरफ़ फेंका । रस्से का दूसरा सिरा ठीक मेरे ऊपर आकर गिरा । मैंने उसे पकड़ लिया । 'शाबाश जवान !' छोड़ना नहीं, देखो मैं तुम्हें खींचती हूँ ।' यह कह कर उस लड़की ने ज़ोर लगाया, लेकिन मैं फंसा का फंसा रहा । उसने और ज़ोर लगाया, मैं अब भी ऊपर न आ सका, उसने और ज़्यादा ज़ोर लगाया, अरे भई उसने पूरा ज़ोर लगा दिया । उसका चेहरा तमतमा उठा, लेकिन मैं तो कमर तक दलदल के अन्दर था । मुझे खींचने के लिए हाथी की ताक़त चाहिए । जी हां हाथी की ताक़त । वह थक कर चूर हो गई । उसने इधर-उधर देखा । लकड़ी का एक लट्ठा पास ही पड़ा था । उसने रस्से को पेड़ से कस दिया । फिर बढ़ कर लट्ठा उठा लिया । यह देखकर मैंने दिल में कहा, 'बड़ी ताक़तवर है यह लड़की । लट्ठा उठा कर उस ने मुझ से कहा, 'जवान ! रस्सा पकड़ कर ख़ुद ज़ोर लगाओ तो ! रस्सा पेड़ से बंधा हुआ था ही । मैंने मज़बूती से पकड़ा और ज़ोर लगाया तो मैं कुछ ऊपर आ गया । ठीक उसी वक़्त लट्ठा लड़की ने मेरी तरफ़ फेंका । लट्ठा मेरे पास ही दो तीन हाथ की दूरी पर गिरा और अन्दर चला गया । उसके अन्दर जाने से मुझे ऐसा लगा जैसे दो-चार अंगुल मैं आप-से-आप ऊपर आ गया । अब मैंने पुकारा 'कोई लट्ठा और फेंको, ख़ुदा तुम्हारी मदद करे ।' यह सुनकर लड़की ख़ुश हो गई, लेकिन मुश्किल यह थी कि आस-पास कोई और लट्ठा नहीं था । उसने कुछ सोचकर फिर रस्सा पकड़ा और मुझको ख़ीचने की एक कोशिश और की । कामियाबी न हुई तो अब उसने जंगल की तरफ़ रुख़ करके पुकारा, 'बापू, बापू ओ बापू, बापू.....

लल्ली का बापू

जंगली लड़की पूरी ताक़त से बापू को पुकार रही थी । उसे पुकारते ज़्यादा देर न लगी थी कि जंगल से अधेड़ उम्र का एक आदमी निकला । वह भी शेर की खाल पहने हुए था । उसके पास बल्लम था और तीर कमान भी । चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूछें और घनी दाढ़ी थी । उसने लड़की की तरफ़ देखा, देखते ही दौड़ पड़ा । लड़की के पास आया । लड़की ने मेरी तरफ़ इशारा किया और इशारा करते ही रस्सा पकड़ कर खींचा । उस आदमी ने भी रस्सा पकड़ा और अब दोनों ने जो मिलकर ज़ोर लगाया तो मैं ऊपर आ गया और फिर दोनों ने अपनी तरफ़ मुझे खींच लिया ।

मुझको दलदल से निकाल कर दोनों बहुत ख़ुश हुए । जंगली लड़की तो इतना

ख़ुश थी जैसे उसने किसी अपने घर के आदमी की जान बचाई हो । ख़ुशी के मारे वह फूले नहीं समा रही थी । उसका बापू पचास के लगभग था । उसने मुझ से कहा—

'जवान ख़ुदा ने तुमको बचाया, मैं इस समय बहुत ख़ुश हूँ, लेकिन मैं नहीं जानता कि उस ख़ुदा का शुक्र कैसे अदा करूं जिसने तुम्हारी मदद के लिए मुझे भेज दिया ।'

यह कह कर उसने लड़की से कुछ कहा और उसी तरफ़ को चल दिया जिधर से आया था । लड़की की मदद से मैंने अपने कपड़े कुछ-न-कुछ इस तरह साफ़ कर लिए कि पहन कर चल सकता । इसके बाद लड़की मुझे लेकर चली । आगे-आगे वह थी, उसके पीछे मैं । धूप अब पीली पड़ चुकी थी । सूरज के डूबने में देर नहीं थी । जंगली लड़की तेज़-तेज़ चलने लगी । मैं भी जल्दी-जल्दी क़दम उठाने लगा । मेरा दिल बहलाने के लिए लड़की मुझ से बातें भी करती जाती थी । बड़ी बातूनी थी वह लड़की । ज़ुबान क़ैंची की तरह चल रही थी ।

'जवान ! तुम जंगल में डरते तो नहीं । मैं तो बिल्कुल नहीं डरती । मेरे बापू ने बताया है कि इंसान से बड़े-से-बड़ा जानवर डरता है । मेरे बापू ने बताया कि इंसान में बड़ी ताक़त है । इंसान शेर को क़ाबू में कर लेता है, हाथी को बस में कर लेता है । बड़े से बड़े अजगर को मार सकता है । पानी में तैर सकता है, पहाड़ों पर चढ़ सकता है । जवान ! तुम भी कभी पहाड़ों पर चढ़े हो, मैं पहाड़ों पर कई बार चढ़ चुकी हूँ । जब भी मैं पहाड़ों पर चढ़ी, मुझे लगा मैं सबसे बड़ी हूँ । इंसान सबसे बड़ा है । मैंने बापू से यही बात कही तो बापू ने बताया, 'इंसान से बड़ा, बहुत बड़ा, बहुत बड़ा ख़ुदा है ।'

'ख़ुदा ! ख़ुदा ! ऐ जवान ! मैंने बापू से कई बार कहा, 'ख़ुदा कहां है ? लेकिन अफ़सोस वे ख़ुदा को जानते हुए भी मुझे नहीं बताते । जवान ! तुमने ख़ुदा को देखा है, बताओ, बताओ जवान ! तुम ज़रूर जानते होगे.......!'

मैं बिल्कुल ख़ामोश उसके साथ चल रहा था । सूरज अब नज़र नहीं आ रह था । पश्चिम की तरफ़ लाली छाई हुई थी । मग़रिब के वक़्त जंगली लड़की मुझे लेकर घर पहुंची । 'घर' का मतलब यह नहीं कि वहां कोई महल खड़ा था या झोपड़ा पड़ा था । कुछ झाड़ियों को काट-छांट कर कोठरी सी बना ली थी । उसके सामने ज़मीन साफ़ कर ली थी और उसके चारों तरफ़ जिस तरह बाड़ा बना लिया जाता है, उस तरह लकड़ियों को खड़ा करके आपस में बांध दिया था । बस यह था उसका घर । उसका बापू पहले ही वहां पहुंच चुका था । उसने हमें हाथों हाथ

लिया । मैंने जाते ही कहा, 'मेरे मददगार दोस्तो, मैं नमाज़ पढूंगा '

'नमाज़ ? नमाज़ किसे कहते हैं ? हम नहीं समझे, जवान तुम क्या चाहते हो ?' मैंने कहा, 'मुझे पानी चाहिये ।' लड़की ने मुझे पानी दिया । मैंने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ने लगा । दोनों बड़ी हैरत के साथ मुझे देख रहे थे । जब मैं नैमाज़ पढ़ चुका तो दोनों ने मुझ से एक साथ पूछा—

'जवान तुमने यह क्या किया ?'

'मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया ।'

'तुमने ख़ुदा का शुक्र अदा किया । तुमने ख़ुदा का शुक्र अदा किया, यही तो मैं जानना चाहता था ।' जंगल का वह आदमी जो अकेला वहां रह रहा था, कई जुमले बोल गया और जवाब सुनने के लिए बेचैन होने लगा ।

बताओ जवान ! बापू दिन–रात यही तो सोचते रहते हैं । जंगली लड़की मुझ से कह रही थी । 'और देखो, तुम यह भी बताना कि ख़ुदा कहां मिलेगा । मैं जानती हूँ जवान ! तुमको सब मालूम है ।'

'देखो लल्ली ! ठहरो, जवान भूखा होगा, उसे पहले खाना खिलाओ । तुम भी खाओ । मैं भी खाऊं । उसके बाद इस जवान से बातें करें । यह जवान जानता ज़रूर है । यह हमें ज़रूर बताएगा । लेकिन जवान ! मुझे कुछ ऐसा लगता है कि तुम इस देश के वासी नहीं हो ।'

लल्ली से कहते-कहते आदमी ने मुझ से कहा और मैंने कहा कि मैं अरब का रहने वाला हूँ ।

लल्ली एक डलिया में जंगली फल ले आई । ज़मीन पर उसने चटाई बिछा दी थी । हम सब उस चटाई पर बैठ गए । किसी जानवर की खाल बिछाकर लल्ली ने फल उस पर चुन दिए । फिर चांद की रोशनी में हम सब फल खाने लगे ।

मैं फल खाता जाता और सोचता जाता कि ये दोनों कौन हैं ? जंगल में क्यों रह रहे हैं ? वे दोनों बार–बार मेरा चेहरा देखते, वे मुझ से कुछ कहना चाहते, मगर उस समय तक चुप रहे, जब तक हम खाते रहे । खाकर उठे तो इससे पहले कि वे मुझ से पूछें, मैंने उनसे कहा, 'पहले आप बताएं कि आप कौन हैं ? और इस भयानक जंगल में क्यों बस गए ?'

यह सुनकर लड़की बापू का मुंह तकने लगी ।

'पहले मैं बताऊं, पहले मैं बताऊं ! बापू ने दो बार कहा और इसके बाद बोला, 'अच्छा लो, पहले मेरी ही कहानी सुनो—

बापू की आपबीती

अब से बीस साल पहले की बात है, उस वक़्त मेरी उम्र 25–30 साल के बीच थी। मैं बचपन ही से देखा करता कि लोग मूर्तियों को पूजते हैं। उन पर चढ़ावे चढ़ाते हैं। उनसे मन्नतें मांगते हैं, उनसे डरते और उम्मीदें लगाते हैं। मूर्ति–पूजा के अलावा मैं देखा करता कि लोग देवी–देवताओं और भूत–प्रेतों से बहुत डरते हैं। मैं सोचा करता कि ये मूर्तियां तो पत्थर की हैं, ये तो ख़ुद बेबस हैं। इंसान इन्हें ख़ुद गढ़ लेता है, फिर इनको क्यों पूजता है ? ये मूर्तियां तो अपने ऊपर बैठी हुई मक्खियां तक नहीं उड़ा सकतीं, तो हमें क्या नुक़सान या फ़ायदा पहुंचा सकती हैं ? मैंने यही बात अपने बाप से कही। बाप मुझ पर बहुत नाराज़ हुआ। ग़ुस्सा होकर बोला कि अगर ऐसी बातें करोगे तो तुमको घर से निकाल दूंगा। मेरा बाप मूर्तियां बनाकर बेचा करता था। इसलिए वह और भी नाराज़ हुआ। लेकिन मैं बराबर यही सोचता रहा। फिर जब मैं और बड़ा हुआ तो मैंने देखा कि लोग तरह–तरह के रीति–रिवाजों में फंसे हुए हैं। शादी–विवाह के मौक़ों पर अपनी हैसियत से ज़्यादा ख़र्च करते हैं और बड़ी-बड़ी रक़में फ़िज़ूल कामों में उड़ा देते हैं। फिर चोरियां करते हैं, डाके डालते हैं, जुआ खेलते हैं, ब्याज खाते हैं, आपस में लड़ते हैं, औरतों की बेइज़्ज़ती करते हैं। मैंने लोगों से कहा कि ये बातें बुरी हैं, इन्हें छोड़ दो।

मेरा ख़्याल था कि बुरी बातों पर टोकूंगा तो लोग मेरा साथ देने वाले हो जाएंगे, मगर उन पर उल्टा असर पड़ा। लोग उल्टे मुझ से नाराज़ हो गए। फिर जब मैं जवान हो गया तो बाप ने मेरी शादी कर दी। लोगों ने बताया था कि शादी कर दो तो लड़का आप से आप ठीक हो जाएगा, मगर शादी के बाद भी मैं इसी तरह सोचता। मैंने यही बातें बीवी के सामने रखीं। मेरी बीवी भी मेरी तरह सोचने लगी। इस तरह कई साल हो गए। यह लल्ली पैदा हुई तो न जाने कैसी–कैसी बुरी रस्में घर में होने लगीं। मैंने सारी रस्में रोक दीं तो महल्ले टोले के लोग बहुत बिगड़े। मैं जवान तो था ही, मैंने किसी की परवाह न की। फिर जब बाप ने मुझे डांटा तो मुझे ग़ुस्सा आ गया। मैंने रात के वक़्त घर की सारी मूर्तियां एक गड्ढे में डाल दीं। सुबह को लोगों ने देखा तो समझ गए कि यह काम किसने किया ? मुझ से पूछा गया तो मैंने कहा, 'जब तुम उनको ख़ुदा मानते हो तो उनसे पूछ लो, ये मूर्तियां बता देंगी कि किसने इन्हें फेंका है। फिर उनसे कहो कि गड्ढे से निकल आएं।

मैंने ज़रा ज़ोर देकर कहा, 'ये बेबस हैं, गड्ढे से निकल नहीं सकतीं । जब ये कुछ नहीं कर सकतीं तो तुम लोग किधर बहके जा रहे हो !'

अच्छा फिर तुम्हीं बताओ, हम ख़ुदा को किस तरह पूजेंगे ! मुझ से सबने पूछा । जवान ! तुम्हें सच बताऊं यह बात मुझे भी मालूम नहीं थी । मैंने बुराई को तो पहचान लिया था, लेकिन ख़ुदा के बारे में मैं कुछ न बता सका तो लोगों ने मुझे पीटना शुरू कर दिया । मेरी बीवी उस वक़्त लल्ली को लिए लेटी हुई थी । उसने सुना तो दौड़ती हुई आई, मुझे बचाने लगी । लोग उसे भी मारने लगे । अब तो मुझ से न रहा गया । मैंने भी लात–घूंसे चलाए, मगर मैं अकेला कर ही क्या सकता था । लल्ली की मां को चोटें ज़्यादा आ गईं और वह बेहोश होकर गिर पड़ी । मैंने उसे बेहोश देखकर हाथ रोका, उसकी तरफ़ लपका । लोगों ने भी मार–पीट बन्द कर दी । वे सब अपने–अपने घर चले गए । मैंने बीवी को उठाया, उसमें दम नहीं था । वह मर चुकी थी । मैं उसे उठा कर घर ले गया तो मेरे बाप ने घर में न आने दिया । मेरी इस लल्ली को गोद में देकर कहा, 'अब इस घर में क़दम न रखना, अपने उसी ख़ुदा के पास जाओ जिसे तुम पहचानते भी नहीं ।'

जवान ! सच जानो, मुझे बहुत पीटा गया था, लेकिन उस मार–पीट से मुझे उतना दुख नहीं हुआ जितना दुख बाप की उस बात से हुआ । मैं अपनी बीवी की लाश लिए और लल्ली को कन्धे से लगाए घर से चल दिया । बस्ती भर में किसी ने मेरी मदद नहीं की । मैंने एक साफ़ गड्ढे में बीवी की लाश रख दी । ऊपर से कुछ लट्ठे रख दिए और झाड़ियां लगाकर उसे बन्द कर दिया और ऊपर से मिट्टी डाल दी । मेरी समझ में उस वक़्त यही आया । फिर मैं लल्ली को लिए–लिए गांव–गांव घूमा फिरा । मैं जहां भी गया लोगों ने मुझे सताया । हर जगह मुझ से यही पूछा गया कि जब तुम मूर्तियों को पूजने से मना करते हो, रीति–रिवाजों से रोकते हो, तो फिर बताओ कि ख़ुदा को किस तरह से पूजें और इन रिवाजों के बदले किस तरह से ज़िन्दगी गुज़ारें !

जवान ! मैं इस बात का जवाब न दे सका । मैं बहुत दिनों तक सोचता रहा । मेरी समझ में कुछ न आया तो परेशान होकर मैंने बस्तियों में रहना छोड़ दिया । इस जंगल में आ बसा । मैं हर वक़्त यही सोचता हूँ । अब जब मैंने तुमको देखा तो न जाने क्यों मेरा दिल कहता है कि तुम वह बात जानते हो जो मैं नहीं जानता । मुझे इस जंगल में पन्द्रह–सोलह साल हो गए ।'

यह कह कर बापू ख़ामोश हो गया । मेरी तरफ़ देखने लगा । लल्ली भी मुझे ताक रही थी । मैंने कहा—

इस्लाम की तब्लीग़

'बापू ! मैं आपको बताऊंगा । शायद ख़ुदा ने इसीलिए मुझे यहां भेज दिया है । आप ख़ुदा का शुक्र अदा करें ।'

'जवान ! मैं तो यही पूछता हूँ कि ख़ुदा का कैसे शुक्र अदा करूं ?' बापू ने झट पूछा । मैंने कहना शुरू किया, 'बापू सुनो, बिल्कुल ऐसे ही लोग जैसे आपने अपनी बस्ती में देखे, अरब में भी थे । उस वक़्त भी आप जैसे लोग मौजूद थे । वे भी समझ गए थे कि मूर्तियां पूजना बुरी बात है । एक ख़ुदा को पूजना चाहिए जिसने हमको पैदा किया है, जिसने हमारे लिए हवा बनाई, पानी बरसाया और हमारे लिए तरह–तरह के फल–फूल और अनाज पैदा किए । जिसने हमें जानवर दिए । उन जानवरों से हम काम लेते हैं । है न ठीक बात !'

'हां जवान् ! बिल्कुल ठीक, यही मैं भी सोचता हूँ । अच्छा तो फिर क्या हुआ ?'

'फिर यह हुआ कि ख़ुदा ने मक्का शहर में एक इंसान को पैदा किया । वह बचपन से बड़ा नेक और सच्चा था । उसका प्यारा नाम मुहम्मद (सल्ल०) था । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पास ख़ुदा ने अपना फ़रिश्ता भेजा । ख़ुदा ने उन पर अपनी किताब उतारी ।'

'किताब उतारी ! जवान सचमुच !'

'मैं आप से सच कहता हूँ । उस किताब से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जाना कि ख़ुदा को कैसे पूजें और कौन से काम करें कि वह पैदा करने वाला ख़ुश हो जाए ।'

'हां ! ऐ जवान बस यही बताओ ।'

'हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया कि वह ख़ुदा एक ही ख़ुदा है । उसके सिवा कोई पूजने के लायक़ नहीं । फिर बताया कि नमाज़ पढ़ो । तुमने देखा बापू ! मैंने अभी थोड़ी देर पहले नमाज़ ही तो पढ़ी थी । मैंने नमाज़ में ख़ुदा से कहा था कि ऐ ख़ुदा तू ही सबका रब (पालने वाला) है । हम तेरी ही पूजा करते हैं और तेरी ही मदद चाहते हैं ।'

'जवान् ! सुनो, सुनो, मैं भी यही चाहता हूँ ।'

'बापू हर समझदार आदमी यही चाहता है । अच्छा फिर समझदार आदमियों

ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बात मान ली । बुरे लोगों ने नहीं मानी और झगड़ने लगे ।'

'उफ़ ख़ुदा ! बुरे आदमी बुरे ही होते हैं, ख़ुदा उनसे बचाए ।'

'हां बापू ! तो फिर बुरे आदमियों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को बहुत सताया । उन्हें भी सताया जो मुसलमान हो गए थे ।'

'क्या हो गए थे मुसलमान ? मुसलमान किसे कहते हैं जवान ?'

'बापू ! मुसलमान उसे कहते हैं जो ख़ुदा को एक माने और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में यह माने कि उन्होंने जो कुछ कहा, ख़ुदा की तरफ़ से कहा ।'

'अच्छा तो सुनो जवान ! मेरा दिल कहता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ये बातें ख़ुदा की तरफ़ से कहीं, तो क्या मैं मुसलमान हुआ ।'

'बेशक !'

'और मैं भी तो मुसलमान हुई जवान ! मैं भी तो यही समझती हूँ ।'

'हां लल्ली ! तुम भी मुसलमान हुई, और देखो एक बात कैसी अच्छी बतायी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कि एक दिन ऐसा आएगा, जब यह दुनिया ख़त्म हो जाएगी । उसके बाद अल्लाह फिर सबको ज़िंदा करेगा । सबके कामों की जांच करेगा । जिससे ख़ुश होगा उसे जन्नत (स्वर्ग) देगा और बुरे लोगों को जहन्नम (नरक) में झोंक देगा । पूरा–पूरा बदला मिलेगा सबको ।'

'जवान मुझे भी बदला मिलेगा ना ।'

'बेशक ! आपको भी अच्छा बदला मिलेगा ।'

'वाह ! कैसी सच्ची बात कही तुमने जवान ! इस दुनिया में तो अच्छों के लिए बड़ी आज़माइश है । अच्छा हां ! अब यह बताओ कि जिस किताब के बारे में तुमने बताया कि ख़ुदा ने उसे उतारा, वह कहां है ?'

'वह किताब मेरे दिल में है बापू ।'

'यानी तुमको याद है सब !'

'हां बापू ।'

'अच्छा तो सुनाओ ।'

मैंने बापू को जगह–जगह से क़ुरआन सुनाया, उसका मतलब समझाया । बापू और लल्ली बहुत ख़ुश हुए । वे रोज़ाना मुझ से क़ुरआन सुनते, जो सुनते उस

पर अमल करते—इस तरह हम तीनों जंगल में रहते रहे । एक दिन मैंने कहा 'बापू ! यहां जंगल में कब तक पड़े रहोगे, आओ चलो बस्ती–बस्ती में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की लाई हुई बातें लोगों को सुनाएंगे ।'

'न जवान ! मत जाओ, बुरे लोग सताएंगे ।'

'बापू ! एक बात और बताऊं, लोगों के सताने से मत घबराओ । अगर इस काम में हम मार भी डाले जाएं तो यह सौदा सस्ता है ।'

'वह कैसे ?'

यह पूछने पर मैंने क़ुरआन की वह आयतें सुनाईं, जिनमें शहीदों के लिए ख़ुशख़बरी है और यह है कि ऐसे लोग बे हिसाब–किताब जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे ।

यह ख़ुशख़बरी सुननी थी कि बापू बहुत ख़ुश हुआ । लल्ली भी बहुत ख़ुश हो गई और अब हम सब जंगल से बस्ती की तरफ़ जाने के लिए सामान तैयार करने लगे । फिर एक दिन बापू ने मुझे और लल्ली को लिया, रास्ता वह जानता ही था, सबको लेकर एक तरफ़ चल दिया ।

एक राजा

बापू के साथ हम दोनों दिन भर चलते रहे । शाम को एक जगह ठहरे । बापू ने बताया कि अल्लाह ने चाहा तो हम कल सुबह के वक़्त जंगल पार कर लेंगे । यह सुनकर मैं बहुत ख़ुश हुआ, लल्ली भी ख़ुश हुई । सुबह हुई तो फिर चलने लगे—अभी थोड़ी ही दूर चले थे कि एक पेड़ के नीचे एक नौजवान को बेहोश पड़ा देखा हम झट उसके पास गए । हमने उसके मुंह पर पानी की छींटे मारीं । उसके होटों पर पानी टपकाया । कुछ देर के बाद उसने मुंह खोल दिया । हमने उसे पानी पिलाया । उसने आंखें खोल दीं और हमें देखने लगा । फिर हमने उसे सहारा देकर बिठाया, मैंने कहा—

'शायद आप भूखे–प्यासे हैं ?' वह कुछ न बोला । लल्ली ने झट अपनी डलिया से कुछ फल निकाले । उन्हें काटा और उस आदमी को खिलाया । हम सबने भी खाया । कुछ खा–पीकर वह नौजवान मुस्कुराया । अब हमने उसका हाल पूछा, तो अपनी कहानी इस तरह सुनाने लगा—

'ऐ आने वालो ! मैं इस देश का राजा हूँ । परसों मैं अपने लाव–लश्कर को लेकर इस जंगल में शिकार खेलने आया था । मैंने एक जगह देखा, एक अपाहिज लोमड़ी पड़ी थी । वह गहरे गड्ढे में थी और वह किसी भी तरह न निकल सकती

थी । उसे देखकर अचानक मेरे दिल में यह बात आई कि इस गड्ढे में उसे खाना कहां से मिल सकेगा । मैं यही सोचता हुआ आगे बढ़ गया । एक ऊंची जगह बैठ गया । मेरी नज़र गड्ढे पर पड़ रही थी । मैंने देखा कि थोड़ी देर में जंगल से एक शेर निकला, उसके मुंह में एक हिरन दबा हुआ था । शेर ने एक जगह हिरन को खाना शुरू किया । जब उसका पेट भर गया, तो उसने बचा हुआ हिस्सा उठा कर फेंक दिया । वह सीधा लोमड़ी के गड्ढे में जाकर गिरा । यह देखकर मैंने सोचा कि ख़ुदा सबको रोज़ी देने वाला है । वह राजा को भी देता है, जो दिन–रात राज–काज के चक्कर में जान खपाता है, दुश्मनों से लड़ता है । हर वक़्त एक खटके में रहता है और मजबूर और लाचार लोगों को भी ख़ुदा ही रोज़ी पहुंचाता है । आख़िर उस लोमड़ी को उसकी रोज़ी पहुंचा ही दी ।

यही बात अपने लश्कर के लोगों से कही । इसके बाद मैंने कहा, जब यह बात ठीक है तो फिर दुनिया के झंझटों और ज़िन्दगी के झमेलों में फंसने से क्या फ़ायदा । क्यों न चुपके से एक कोने में बैठ जाऊं, ख़ुदा तो रोज़ी पहुंचाने वाला है ही । तो ऐ आने वाले भाइयो ! मैंने सेनानियों से कहा—तुम सब जाओ, मैं यहीं जंगल में रहूंगा, अब मैं राज–काज के झगड़ों में जान नहीं खपाऊंगा । वे लोग मुझे समझाने लगे, मैं नहीं माना । सबको वापस कर दिया । अकेला इस पेड़ के नीचे बैठ गया और ख़ुदा को याद करने लगा । शाम हो गई, लेकिन ख़ुदा ने मेरे लिए रोज़ी नहीं भेजी । मैंने सोचा शायद ख़ुदा मेरा इम्तिहान ले रहा है । मैं भूखा ही पड़ा रहा । सुबह को मुझे बड़ी भूख लगी थी । मेरा यक़ीन था कि आज सारी दुनिया का ख़ुदा रोज़ी ज़रूर भेजेगा । कल का दिन भी बीत गया । तुम जानो ! मैं राजा आदमी, मैं भूख को क्या जानूं । अब जो भूख लगी, तो मैं परेशान होने लगा, लेकिन अपनी बात पर अड़ा रहा । मुझे पूरा यक़ीन था कि ख़ुदा ज़रूर रोज़ी भेजेगा । वह मेरा इम्तिहान ले रहा है । आख़िर आज जब मैं भूख के मारे बेहोश हो गया, तो ख़ुदा ने तुम को भेज दिया और इस तरह मेरी रोज़ी मुझे मिल गई । कितनी ठीक है मेरी बात । तो मैं ज़िन्दगी के झमेलों में क्यों फंसू ? क्यों भाइयो ! मैंने ठीक किया ना ?' राजा ने बात ख़त्म करते–करते हम से पूछा, तो लल्ली झट बोल पड़ी, 'बिल्कुल ग़लत किया आपने राजा साहब !'

'वह कैसे ?' राजा लल्ली की तरफ़ देखने लगा । हम सब लोग भी लल्ली की तरफ़ देखने लगे कि देखें लल्ली इस बात का क्या जवाब देती है । लल्ली ने कहा—

'राजा होकर आप से यह न हुआ कि शेर की तरह ज़िंदगी गुज़ारते । जिस तरह शेर ने शिकार करके लोमड़ी तक खाना पहुंचाया, उसी तरह ख़ुद दूसरों को

खाना खिलाते। उल्टे लोमड़ी बन गए, अपाहिज लोमड़ी और दूसरों की कमाई की तरफ़ देखने लगे।'

'अरे ! हम सब लल्ली की बात पर चौंक पड़े। मैं यह सोच रहा था कि लल्ली ने बात तो जंची–तुली और बिल्कुल ठीक कही, लेकिन ज़रा तीखेपन से कही। मैं राजा को देखने लगा। राजा लल्ली को देख रहा था। वह देर तक देखता रहा। हम सब चुप रहे। कुछ देर के बाद राजा ने सिर झुका लिया फिर कुछ सोच कर बोला—

'लड़की ! तूने बिल्कुल ठीक कहा, इसमें कोई शक नहीं कि रोज़ी तो मिलेगी ही, लेकिन हम से जहां तक हो सके, दूसरों को फ़ायदा पहुंचाएं, न कि लोमड़ी की तरह अपाहिज होकर रह जाएं।' लल्ली कुछ और कहना चाहती थी लेकिन मैंने उसे रोक दिया। मैंने सोचा लल्ली अल्हड़ है फिर जंगली भी। न जाने क्या कह दे। मेरा इशारा पाकर वह चुप हो गई। अब मैंने कहा—

राजा का इस्लाम कुबूल करना

'राजा साहब ! ख़ुदा ने हमें इंसान पैदा किया। हमें इंसानों के साथ ही रहना चाहिए। उनके दुःख दर्द में शरीक होना चाहिए। यही इंसानियत है। यह ठीक नहीं कि दुनिया को छोड़ दें। सबसे अलग–थलग रहें। हमें दुनिया में ही रह कर दीन का काम करते रहना चाहिए। अल्लाह इसी तरह ख़ुश होगा।'

राजा मेरी बात सुनकर बोला, 'ऐ जवान ! तुमने क्या बात कही ? दुनिया में रहकर हम किस तरह ख़ुदा को ख़ुश कर सकते हैं। जबकि ज़िन्दगी में न जाने कितनी रुकावटें हमारे सामने आती हैं। कभी–कभी हमारा पापी मन हमसे कहता है कि हम दूसरों का माल छीन लें। कभी ऐसा होता है कि लोगों के कहने–सुनने से दूसरों को सताना पड़ता है। फिर लड़ाइयां छिड़ती हैं तो हमारा यह पापी मन ही सब से पहले हमें बुराइयों पर उभारता है। फिर दुनिया में बुरे लोग भी हैं कि उनकी वजह से हमसे बुराइयां हो जाती हैं।'

'राजा साहब ! मर्द का काम यही है कि हर उस ताक़त को ठुकरा दे जो बुराइयों की तरफ़ ले जाने वाली हो !'

मैंने यह कहा तो लल्ली बोल पड़ी, 'जवान ! तुमने तो हमें बताया था कि यह काम तो मुसलमान का है। अगर मुसलमान अपने पापी मन का कहना न माने, बुरों का कहना न माने, बल्कि अल्लाह के हुक्मों पर चले तो अल्लाह उसे

जन्नत देगा । तो ऐसा तो मुसलमान ही कर सकता है ।'

'लल्ली ! तुम ठीक कहती हो, लेकिन राजा साहब मुसलमान तो हैं नहीं, इसीलिए मैंने राजा साहब को इस तरह समझाया ।'

राजा ने मेरी और लल्ली की बात बड़े ध्यान से सुनी । फिर बोला, 'यह मुसलमान की बात कैसी । बताओ तो मुसलमान क्या करता है और कैसे करता है ?'

राजा ने यह पूछा तो मैंने जिस तरह जंगल में बापू को इस्लाम के बारे में समझाया था । उसी तरह राजा से कहा । बात सच्ची और साफ़ थी । पूरी बात राजा की समझ में आ गई और उसने भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया । उसके मुसलमान होने से हम सब बहुत ख़ुश हुए । इसके बाद राजा उठा । उसने हम सबसे कहा, 'आप लोग मेरे साथ राजधानी चलें और यही बात सबको समझाएं ।'

राजा की बात सुनकर मैं तो ख़ुश हुआ ही, मुझ से ज़्यादा बापू ख़ुश हुआ । उसने कहा, 'राजा को ख़ुदा अच्छे कामों की तौफ़ीक़ दे, हम ज़रूर राजधानी चलेंगे । अल्लाह के दीन को फैलाएंगे और अल्लाह का दीन फैलाने में ही अपनी जान खपाएंगे । अगर हमने ऐसा कर लिया तो अल्लाह हमें अपनी ख़ुशी के घर (जन्नत) में जगह देगा ।'

राजा हमें लेकर राजधानी की तरफ़ चला । रास्ते में उसने हमसे कहा, 'राजधानी यहां से दूर है, ज़्यादा अच्छा यह है कि अपना-अपना हाल कहते चलें, इस तरह रास्ता आसानी से कटेगा ।'

मैंने अपना हाल बताया कि मैं एक अरब मुसाफ़िर हूं । दुनिया की सैर करने घर से निकला और घूमता-फिरता इस जंगल में आ निकला । मैंने अपने सफ़र के बहुत से क़िस्से राजा को सुनाए । राजा बहुत ख़ुश हुआ । फिर बापू ने अपनी आपबीती सुनाई । बापू की आपबीती सुनकर राजा पर बड़ा असर पड़ा । उसने कहा, 'बापू ! ख़ुदा तुम को इसका अच्छा बदला दे ।'

'और मुझे ?' लल्ली अचानक बोल पड़ी । हम सब हंसने लगे । 'तुम्हें भी !' राजा ने कहा ।

इस तरह चलते-चलते हम राजधानी पहुंचे । वहां लोगों को यह मालूम हुआ कि राजा वापस आ गया, तो वे बहुत ख़ुश हुए । हाथों-हाथ सबको लिया । राजा हम सबको लेकर महल में चला गया । उसने हम सबके लिए अलग-अलग कमरे दिए । हर कमरे में ज़रूरत का सामान भेज दिया । हमारी ख़िदमत के लिए नौकर-चाकर लगा दिए । राजा दिन भर तो राज-काज के कामों में फंसा रहता,

रात को दो तीन घंटे हमारे पास गुज़ारता और इस्लाम के बारे में पूछा करता ।

लल्ली की राजा से शादी

मैं राजा के साथ कुछ दिनों उसकी राजधानी में रहा । राजा की तब्लीग़ से बहुत से लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया । लेकिन उसका वज़ीर उसका दुश्मन हो गया । वह राजा से नाराज़ होकर दूसरे राज्य में चला गया, और वहां के राजा को उकसाया कि मुसलमान होने वाले राजा पर चढ़ाई कर दे । फिर वह उसे बड़े लाव-लश्कर के साथ चढ़ा लाया । मुसलमान राजा ने भी अपनी सेना को साथ लिया । मैं भी उसकी सेना के साथ था । बापू भी साथ था और लल्ली भी बल्लम लिए हुए लड़ने मरने को तैयार थी ।

राजधानी के बाहर बड़ी घमासान की लड़ाई हुई । राजा बड़ी बहादुरी से लड़ा । बापू को शहादत का शौक़ था । वह तो बड़ी ही बेजिगरी से लड़ा । लल्ली भी तड़प–तड़प कर लड़ रही थी । एक बार तो ऐसा हुआ कि दुश्मन के सिपाहियों ने पीछे से राजा पर हमला कर दिया । दुश्मन का एक सिपाही बिल्कुल राजा के पीछे आ गया । वह पीछे से हमला करना ही चाहता था कि लल्ली ने देख लिया । वह झपट कर आई और उसने बल्लम दुश्मन सिपाही की पीठ में भोंक दिया । सिपाही बेदम होकर गिरा, राजा ने मुड़कर देखा । लल्ली खड़ी मुस्कुरा रही थी । राजा बहुत ख़ुश हुआ । उसने लल्ली की पीठ ठोकी और फिर बढ़कर लड़ने लगा । शाम तक लड़ाई होती रही—शाम को दुश्मन हार कर भागा । उस लड़ाई में मुसलमान राजा की जीत तो हुई, लेकिन हमारा बापू किसी के बल्लम से शहीद हो गया । बापू की शहादत का हमें बड़ा अफ़सोस हुआ, मगर लल्ली ने समझाया, 'जवान ! इसमें अफ़सोस की क्या बात है । बापू तो शहीद हुए । अब वे बेहिसाब किताब जन्नत में जाएंगे, यही तो वे चाहते थे । तो आओ जवान ! अल्लाह से दुआ करें ।'

हम सबने बापू के लिए दुआ की । इसके बाद तीसरे दिन राजा ने मुझ से राय लेकर लल्ली से शादी कर ली । मैं बहुत ख़ुश हुआ । मैं कुछ दिन और राजा के यहां रहा । उसके बाद जैसा कि मेरी आदत थी, सैर को निकल खड़ा हुआ । राजा और लल्ली दोनों दूर तक मेरे साथ आए, फिर लौट गए । मैंने उनके लिए दुआ की कि ख़ुदा उन्हें इस्लाम पर क़ायम और ख़ुश रखे । (आमीन ।)

किरदार का असर

- ☆ डाकुओं का सामना
- ☆ डाकुओं की तौबा
- ☆ एक राजा से मुलाक़ात
- ☆ इंसान का दर्जा
- ☆ भेंट चढ़ना
- ☆ जाना एक टापू में
- ☆ रंगे सियार
- ☆ राजा और प्रजा का इस्लाम कुबूल करना

□

हमारा इब्ने बतूता अपने सफ़रनामें में एक जगह अपनी ऐसी आपबीती लिखता है, जिसे पढ़कर मालूम होता है कि अगर डाकुओं के साथ अच्छा सुलूक किया जाए और उन्हें क़ायदे से समझाया जाए तो वे भी नेक आदमी बन सकते हैं। हमारे इब्ने बतूता की यह आपबीती बड़ी मज़ेदार है और उसमें हमारे लिए बड़ी नसीहत है। वह लिखता है—

डाकुओं का सामना

'मैं एक बार जंगल से गुज़र रहा था। मैंने जंगल के किनारे एक बुढ़िया को देखा। वह बैठी भीख मांग रही थी, वह कह रही थी— 'भगवान भला करे, भगवान भाग्यवान करे।' मुझे उस बुढ़िया पर तरस आ गया। मैंने उसे अपनी चादर दे दी, कुछ पैसे भी दिए। चादर और पैसे पाकर बुढ़िया ज़ोर–ज़ोर से पुकारने लगी। 'भगवान भला करे, भगवान भाग्यवान करे।' मैं आगे बढ़ गया और जंगल में दाख़िल हो गया। बुढ़िया अभी तक उसी तरह चीख़े जा रही थी। मैं थोड़ी ही दूर और चला था कि अचानक एक तरफ़ से सात डाकू आ गए, उनके हाथों में भाले थे। उन्होंने मुझे घेर लिया। मेरे मुंह में रूई ठूंस दी और मेरा सामान लूट लिया और फिर मुझे रस्सियों से जकड़ कर अन्धे कुंए में डाल दिया। उस कुंए में पानी नहीं था। कुंए में गिरने से कुछ चोट भी आई। मैं बहुत परेशान हुआ कि कुंए से किस तरह निकल सकूंगा। अगर इसी तरह बंधा पड़ा रह तो भूखा मर जाऊंगा। मेरी समझ में कुछ न आया। मैं अल्लाह से दुआ करने लगा, 'ऐ अल्लाह ! तू बड़ा मेहरबान है, तेरा बड़ा एहसान है। ऐ अल्लाह ! मुझे इस नई मुसीबत से बचा ले, इस अंधे कुएं से निकाल दे।'

यह दुआ करते वक़्त मुझे हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) का क़िस्सा याद आया। मैं सोचने लगा इसी तरह उनको भी कुंए में डाला गया था। उन्होंने सब्र से काम लिया तो अल्लाह ने अपनी मेहरबानी फ़रमाई, उनको कुंए से निकाला और फिर उन्हें मिस्र में बड़ी इज़्ज़त दी।

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि०) का क़िस्सा याद आया तो मुझे बड़ी ढाढ़स बंधी। दिल ही दिल में कुरआन मजीद पढ़ने लगा और रस्सियों से छुटकारा पाने का तरीक़ा

सोचने लगा । कुंए में पत्थरों के टुकड़े भी पड़े थे । उनमें मैंने एक पत्थर को इस तरह टूटा हुआ देखा कि उसका एक तरफ़ का टूटा हुआ हिस्सा धारदार था । मैं हाथों पर बंधी रस्सी को पत्थर की धार पर रगड़ने लगा । देर तो लगी, लेकिन बार-बार रगड़ने से रस्सी कट गई । रस्सी कट जाने से मैं बहुत ख़ुश हुआ । अब मेरे हाथ छूट चुके थे । मैंने हाथों से जल्दी-जल्दी सारे बदन की रस्सियों को खोला । अल्लाह का शुक्र अदा दिया और अब सोचने लगा कि कुंए से कैसे निकलूं ? मैंने एक तरकीब सोची । मैं कुंए में पड़े हुए पत्थरों को कुंए की दीवार के बराबर चिनने लगा । मैंने सोचा था कि इस तरह तले-ऊपर पत्थर रखकर ऊंचा कर लूंगा फिर किसी तरह उचक जाऊंगा । पत्थरों को उखाड़ने से कुंए में गड्ढा होने लगा। कुछ और गड्ढा हुआ, तो अचानक एक लोटा निकला । उस लोटे में अशरफियां भरी हुई थीं । मैंने अशरफियों से भरा लोटा देखा तो बड़ा ख़ुश हुआ । अब मैंने अपना तहमद खोला । उसे लम्बाई से फाड़ा । एक हिस्सा ख़ुद बांध लिया, दूसरे हिस्से से लोटे को बांधा । उसके बाद पत्थरों को तले-ऊपर चिनकर इतना ऊंचा कर लिया कि आसानी के साथ कुंए में से निकल आया और लोटे को भी खींच लाया । मैं अशरफियां लिए हुए बुढ़िया के पास गया । मैंने बुढ़िया को एक अशरफ़ी दी और फिर जंगल के अन्दर चलने लगा, बुढ़िया अशरफ़ी पाकर गले की पूरी ताक़त से चीखने लगी, 'भगवान भला करे, भगवान भाग्यवान करे ।' बुढ़िया की यह आवाज़ सुनकर वे सातों डाकू जंगल से निकले । उनके हाथों में भाले थे । उन्होंने मुझे घेर लिया, मुझे पहचाना भी । उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ । मैं उनसे डरने के बदले मुस्कुराने लगा । मैंने उनसे कहा—

'भाइयो! देखो, न तुम मुझे जानते हो और न मैं तुमको जानता हूं । न तुम मेरे दुश्मन और न मैं तुम्हारा दुश्मन । देखो, मुझे न तो रस्सियों से बांधना और न मारना-पीटना । तुमको माल चाहिए तो लो, मैं तुम्हारे लिए बहुत बड़ी रक़म लाया हूं । मैं तुमको रक़म दे दूंगा, लेकिन तुम मुझे एक बात बताओ ?'

'क्या ! सारे डाकू एक साथ बोले और उन्होंने अपने भालों की नोक मेरी तरफ़ से हटा ली ।

'तुम मुसाफ़िरों को क्यों लूटते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि यह बुरा काम है ?'

डाकुओं की तौबा

डाकू सोच में पड़ गए । मैंने कहा, 'देखो भाइयो, लूट-मार बुरा काम है । लूट-मार करना अल्लाह को पसन्द नहीं । अल्लाह तआला हलाल कमाई को बहुत

पसन्द करता है, हलाल कमाई खाने वाले की दुआ कुबूल करता है । मेरा ख़्याल है कि तुम सब ग़रीब हो और काम करने से जी चुराते हो । प्यारे भाइयो ! बड़े दुख की बात है कि तुम सब हट्टे–कट्टे और जवान हो । बड़े–बड़े काम कर सकते हो और ज़्यादा-से-ज़्यादा कमाकर आराम के साथ जीवन बसर कर सकते हो । हलाल कमाई खाकर अल्लाह को ख़ुश कर सकते हो । देखो अल्लाह ने तुम पर बड़ी मेहरबानी की है । मुझे तुम्हारे पास भेज दिया, यह देखो मैं तुम्हारे लिए अशरफ़ियां लाया हूं । लो और तौबा करो कि आज से डाका न डालोगे । तुम इन अशरफ़ियों से कारोबार करो । कारोबार में सच्चाई से काम लोगे तो अल्लाह बरकत देगा ।'

यह कह कर मैंने अशरफ़ियां उनके आगे डाल दीं । अशरफ़ियां देख कर डाकू हक्का–बक्का रह गए । थोड़ी देर चुप रहे फिर बोले 'ये अशरफियां आपको कहां से मिलीं ?' मैंने जवाब दिया, 'प्यारे भाइयो ! अल्लाह बड़ा मेहरबान है । अगर उसे याद रखो, उसके हुक्मों पर चलो और सच बोलो और हराम बातों से बचो तो वह इसी तरह मदद करता है । अपने बन्दों को ऐसी राहों से देता है कि बन्दे सोच भी नहीं सकते । तुमने मुझे लूटा, रस्सियों से जकड़ा । अन्धे कुंए में डाल दिया । देखने को तो मैं एक मुसीबत में फंस गया लेकिन मैंने सब्र से काम लिया । कुंए में अल्लाह का नाम लिया । उससे दुआ की । अल्लाह ने मुझे कुंए से छुटकारा दे दिया । उसी में मुझे अशरफ़ियों का लोटा भी मिला । मैंने सोचा कि तुमको रक़म की ज़रूरत है, अगर तुम अच्छी ख़ासी रक़म पा जाओगे तो फिर डाका डालना छोड़ दोगे । इसीलिए मैं फिर तुम्हारी तरफ़ आया । मैंने जैसा सोचा था वह ठीक निकला ।'

यह कहकर मैं चुप हो गया और उनके चेहरों को देखने लगा । उनके चेहरों पर एक रंग आता और एक जाता । वे कुछ सोच रहे थे । अचानक वे सब मेरे क़दमों पर गिर पड़े और तौबा करके रोने लगे । मैंने ढाढ़स बंधाई और कहा 'अल्लाह बड़ा ही मेहरबान है । वह तौबा करने वालों को बहुत पसन्द करता है । अल्लाह तुमको ज़रूर माफ़ कर देगा और तुम पर रहमत नाज़िल फ़रमाएगा । और हां यह तो बताओ वह बुढ़िया कौन है ?'

'वह हमारी मां है' डाकुओं ने बताया । उसी ने पहले हमें चोरी सिखाई । जब हम छोटे थे तो उसके कहने से लोगों के घरों में चुपके से घुस जाते और आंख बचाकर चीज़ें चुरा लाते । चोरी करते–करते आज हम डाकू हो गए । अब हम सबसे पहला काम यह करेंगे कि अपनी मां को क़त्ल कर देंगे ।

'न, न ' मैंने डाकुओं को समझाया । 'जिस तरह मेरे समझाने से बात तुम्हारी

समझ में आ गई, उसी तरह हो सकता है कि अल्लाह तुम्हारी मां पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए । अब तुम जाओ अपनी मां को समझाओ और अल्लाह से दुआ भी करो ।'

'आप भी हमारे साथ चलिए ।'

मैं उनके साथ हो लिया । वे सब बुढ़िया के पास गए । बुढ़िया मुझे उनके साथ देखकर हैरान रह गई । उसके बेटों ने उसे सारा क़िस्सा सुनाया । फिर अपनी तौबा का हाल बयान किया और उससे भी तौबा करने को कहा, बुढ़िया को भी अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी, उसने भी तौबा की । फिर वे सब मुझे जंगल के किनारे एक पहाड़ पर ले गए । पहाड़ पर उनका मकान था । उन्होंने मुझे ठहराया । उन्होंने मेरी बड़ी ख़ातिर की । तीन दिन के बाद मैंने उनसे कहा, 'अच्छा, बस अब मैं चलूं ।' उन्होंने पूछा आप कहां जायेंगे ? मैंने कहा, 'जहां अल्लाह ले जाए, घूमने फिरने तो निकला ही हूं ।' बुढ़िया के सातों बेटों ने कहा 'दो चार दिन और रुकिए । हमने सोचा है कि हम इस मकान को छोड़ दें, शहर में जाकर रहें । बसें और कोई रोज़गार करके हलाल कमाई खाएं । हमने लूट का सामान अलग कर दिया है । यह सारा सामान हम ख़ैरात कर देंगे । 'शाबाश ! बहुत अच्छा सोचा आपने ।' मैंने उनकी हिम्मत बढ़ाई । दो-तीन दिन और उनके साथ रहा । फिर जब वे अपना सामान लेकर शहर की तरफ़ चले तो मैं भी उनके साथ हो लिया कि देखूं किस शहर में ये लोग जाते हैं और वह कैसा शहर है । आख़िर घूम-फिर कर मैं यही तो देखना चाहता था ।'

एक राजा से मुलाक़ात

आगे चलकर हमारा इब्ने बतूता एक अनोखा और निराला क़िस्सा लिखता है । उसको पढ़कर मालूम होता है कि उसका ईमान बड़ा पक्का था । साथ ही यह भी मालूम होता है कि जहां उसे कुछ मौक़ा मिला, उसने दूसरों तक अल्लाह का दीन पहुंचाने में कमी नहीं की । अल्लाह ने भी उसकी मदद की । अब आप ज़रा क़िस्से को पढ़िए और देखिए कि शहर पहुंच कर क्या पेश आया । वहां हमारे इब्ने बतूता ने अपने ईमान की मज़बूती का क्या सबूत दिया और फिर अल्लाह ने उस शहर पर क्या रहमत नाज़िल फ़रमाई । वह लिखता है कि—

'यह देश बड़ा हरा-भरा और पेड़—पौधों से भरा हुआ है । यहां बड़े—बड़े मैदान हैं । यहां की ज़मीन बड़ी अच्छी है और उस पर बड़ी आसानी से खेती होती है । यहां ज़्यादातर किसान बसते हैं । पानी काफ़ी बरसता है, अनाज ख़ूब पैदा

होता है, लेकिन अफ़सोस है कि यहां के रहने वाले अपने सच्चे मालिक को नहीं पहचानते, वे ख़ुदा को मानते और उसका नाम तो लेते हैं, लेकिन साथ ही देवी–देवताओं की पूजा भी करते हैं । खेत बोते वक़्त देवी देवताओं से लौ लगाते हैं । खेती बोकर वे देवी देवताओं से पानी मांगते हैं । बिजली कड़कती है तो वे उसके आगे सिर झुका देते हैं । बादल की गरज सुनकर उसकी तरफ़ हाथ जोड़ते हैं । नदियों में बाढ़ आती है तो नदियों की पूजा करते हैं । कभी–कभी ऐसा होता है कि इंसान की भेंट चढ़ाते हैं । अफ़सोस कि यहां के लोग शिर्क (अनेकेश्वरवाद) में फंसे हुए हैं और अपने हाथों अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं । इस दुनिया में भी परेशान हैं और आख़िरत में भी उनके लिए घाटा ही घाटा है, लेकिन अगर कोई अल्लाह का बन्दा उनके सुधार के लिए उठ खड़ा हो तो बड़ी आसानी के साथ यहां के लोग मूर्तिपूजा और देवी–देवताओं और तरह–तरह के वहमों से निकल सकते हैं, शिर्क से बच सकते हैं और एक ख़ुदा के मानने वाले हो सकते हैं ।'

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि मुझे शहर पहुंच कर ऐसा ही तजुर्बा हुआ । हुआ यह कि जब मैं अपने नए दोस्तों के साथ शहर में पहुंचा तो शहर में बड़ी हलचल देखी । पूछने पर मालूम हुआ कि शहर में आसपास दूर–दूर तक बहुत दिनों से पानी नहीं बरसा, खेत सूखे जा रहे हैं और सूखा पड़ जाने का डर है । पंडितों ने बताया कि पानी का देवता नाराज़ हो गया है । जब तक वह एक सुन्दर और कुंवारी लड़की की भेंट न ले लेगा, ख़ुश न होगा । आज शहर की सबसे ज़्यादा सुन्दर और कुंवारी लड़की खोज निकाली गई, पर वह निकली यहां के राजा की बेटी । राजा बहुत परेशान है । वह पंडितों से कहता है कि देवता को मनाएं और इस बात पर राज़ी करें कि इस एक लड़की के बदले सौ लड़कियां भेंट ले ले, लेकिन पंडितों का कहना है कि देवता राज़ी नहीं होता ।

यह सुनकर मुझे बड़ा दुख हुआ । मैंने अपने साथियों से कहा कि सीधे राजा के पास चलो, मुझे राजा से कुछ बात करनी है । मेरे साथी मुझे राजा के पास ले गए और उन्होंने राजा से मेरा हाल कहा और कहा कि हमारा यह परदेसी भाई आप से अकेले में कुछ बातें करना चाहता है । हमें उम्मीद है कि आजकल आप जिस फ़िक्र में हैं, इससे बातें करने के बाद आपकी वह फ़िक्र दूर हो जाएगी ।

राजा यह सुनकर उसी वक़्त मिलने के लिए तैयार हो गया । उसने एक मकान में मुझसे मिलने का इन्तिज़ाम किया और हुक्म दे दिया कि इस मकान के आसपास चिड़िया तक न आने पाए । इसके बाद वह मुझको लेकर उस मकान में गया । मैंने उससे कहा, 'मैं चाहता हूं कि आप अपनी बेटी को भी यहां बुला लें, क्योंकि मैं उसी के बारे में बात करूंगा । वह न होगी तो काम न बनेगा ।'

राजा ने बेटी को भी वहीं बुला लिया । हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि वह बड़ी सुन्दर लड़की थी । उसकी उम्र 16–17 साल की थी और वह बड़ी ही भोली-भाली और सीधी-सादी लड़की थी । मैंने उसे देखा तो मेरी ज़ुबान से 'माशा अल्लाह' निकला ।

'तो फ़रमाइए, आप क्या कहना चाहते हैं ?' राजा की आवाज़ सुनकर मैं चौंका । मैंने राजा से कहा—

इंसान का दर्जा

'राजा साहब ! पहले आप मेरी एक बात सुन लीजिए । यह तो आप जानते ही हैं कि इस संसार में जितनी चीजें हैं वे सब इंसान के फ़ायदे के लिए हैं । ज़मीन पर इंसान रहता-बसता है । पानी को अपने काम में लाता है । फूल, फल, पौधे, पेड़ और तरकारियों से फ़ायदा उठाता है । ज़मीन के अन्दर जो कुछ है, सोना, चांदी, लोहा वग़ैरह भी इंसान निकालता है और जिस तरह चाहता है इस्तेमाल में लाता है । इसी तरह चिड़ियां और जानवर भी इंसान के लिए हैं । यूं कहना चाहिए कि दुनिया में जो चीज़ें हैं, हर चीज़ से इंसान का दर्जा बड़ा है, और हर चीज़ इंसान की ख़िदमत के लिए है । इंसान इन सारी चीज़ों का मालिक है और ये सब उसके नौकर हैं । क्या इंसान के लिए यह सही है कि वह अपने से कम दर्जे की चीज़ों के आगे सिर झुकाए । उनसे डरे, उन्हें देवता समझकर पूजे ?'

मैं इतना ही कह सका था कि राजा चौंका, 'हाय यह आपने क्या कहा ?' उसकी ज़बान से निकला । उसकी बेटी मेरी बात बड़े ध्यान से सुन रही थी । बोली, पिताजी ! नौजवान ने बिल्कुल ठीक बात कही । इनका कहना है कि भगवान ने मनुष्य जाति को संसार की सारी चीज़ों से बड़ा बनाया है । इसलिए इंसान को चाहिए कि इन चीज़ों को अपने काम में लाए न कि उनकी पूजा करे ।'

मैं लड़की की यह बात सुनकर बहुत ख़ुश हुआ । कितनी समझदार थी यह लड़की । कितनी जल्दी उसने मेरी बात समझ ली । वह अपनी बात कहकर राजा की तरफ़ देखने लगी । मैं भी राजा की तरफ़ देखने लगा । राजा किसी सोच में था । उसने आंखें बन्द कर लीं, वह सोचता रहा, उसको सोचते–सोचते कई मिनट हो गए । अब लड़की ने फिर कहा—

'पिताजी !'

'हां मेरी प्यारी बेटी !'

'आप क्या सोच रहे हैं ?'

'मैं यह सोच रहा हूं कि इस नौजवान ने बात तो ठीक कही, लेकिन अगर हम इसकी बात मान लें तो हमें इन सारे देवी-देवताओं की पूजा से इनकार करना पड़ेगा, जिन्हें हम और हमारे बाप-दादा मानते चले आए हैं। डर है कि जल देवता हम से बिल्कुल ही नाराज़ न हो जाएं और फिर कभी बारिश ही न हो।'

राजा से यह सुना तो मेरी ज़बान से 'उफ़ अल्लाह' निकला। मैंने कहा, 'राजा साहब ! आप बिल्कुल न डरें। जिस ख़ुदा ने इंसान को सारी चीज़ों से बढ़कर बनाया, उसी के बस में पानी बरसाना भी है, वही तो सबका मालिक है, यह तो हम इंसानों ने अपनी नासमझी से अपने और ख़ुदा के बीच देवी देवताओं का पाख़ण्ड खड़ा कर रखा है।' 'नौजवान परदेसी संभल कर बात करो; राजा की आवाज़ ज़रा तेज़ हो गई और वह देवताओं के डर से कांपने लगा, लेकिन लड़की बोली 'पिताजी ! इस नौजवान का कहना बिल्कुल ठीक है, जो परमेश्वर हर चीज़ का स्वामी है वही पानी का भी स्वामी है। हमें चाहिए कि हम उसी परमेश्वर को मानें, उसी से डरें और किसी से न डरें क्यों यही तो मतलब है, नौजवान भाई !'

राजा से बात करते-करते राजकुमारी ने मेरी तरफ़ देखा। मैंने कहा, हां ! मेरा यही मतलब है। अब राजा ने बेटी को कुछ ग़ुस्से से देखा। बोला 'प्यारी बेटी ! ऐसा जान पड़ता है कि तेरा विश्वास पहले से देवी देवताओं पर नहीं था, इसीलिए तू ख़तरे में पड़ी। जल देवता तेरी भेंट लेने पर अड़ गया।' यह कहते-कहते राजा की आंखों में आंसू आ गए। राजकुमारी की भी आंखों में आंसू आ गए। वह आंसू भरे नैनों से मेरी तरफ़ देखने लगी। वह चुप थी मगर मैं समझ रहा था कि वह क्या कहना चाहती है। वह यही कहना चाहती थी कि बात तो तुम्हारी ठीक है, पर राजा को कैसे समझाया जाए ?

मैंने दिल में ख़ुदा को याद किया और फिर कहा, 'राजा साहब ! मैं आप से सच कहता हूं कि मालिक सिर्फ़ एक ही है और वह है अल्लाह, जिसे आप किसी भी अच्छे नाम से याद करें। उसके सिवा सब बेबस हैं। उसकी मर्ज़ी के बिना कोई कुछ नहीं कर सकता। अगर आप इजाज़त दें तो मैं उन लोगों की पोल खोल सकता हूं जो ख़ुदा और बन्दे के बीच अपनी चालाकी से आ गए और अपनी ख़ुदाई के डंके बजा-बजाकर भोले-भाले लोगों को ठग रहे हैं।' 'क्या मतलब ?' राजा की ज़बान से निकला और राजकुमारी भी मेरी तरफ़ देखने लगी। मैंने कहा कि 'मुझे पूरा-पूरा यक़ीन है कि कुछ चालाक लोग आपको धोखा दे रहे हैं। अगर आप मेरी मदद करें तो मैं उनकी पोल खोल सकता हूँ।'

'वह कैसे ?' राजा ने चुपके से कहा । राजकुमारी लम्बी–लम्बी सांसे लेने लगी और प्यार भरी नज़रों से मेरी तरफ़ देखने लगी ।

भेंट चढ़ना

मैंने कहा, 'पहले आप बताइए कि कुंवारी लड़कियों की किस जगह भेंट दी जाती है ?'

'परदेसी जवान !'राजा बताने लगा 'वह एक टापू है । जहां कुंवारी लड़कियों को छोड़ दिया जाता है, फिर जब लड़की के साथ जाने वाले उसे छोड़कर वापस आ जाते हैं तो जल देवता उस लड़की को बादलों की तरफ़ उठा लेता है, फिर लड़की का पता नहीं चलता कि वह कहां गई ?' 'क्या किसी ने टापू में जाकर पता भी लगाया ?' मैंने पूछा । 'नहीं, टापू में उन ग्यारह साधुओं के अलावा कोई नहीं जा सकता जो मेंघराज की तरफ़ से वहां दिन–रात पूजा पाठ में लगे रहते हैं ।' 'वह टापू यहां से कितनी दूर है ?'

'बारह कोस, समुद्र तट से बारह कोस पर, नाव बारह कोस तक पानी में चलकर टापू पर पहुंचती है ।'

'क्या कभी और लड़की भेंट दी गई है !'

'परदेसी जवान ! लगभग हर साल ऐसा ही होता है ।'

'अच्छा तो आप यह करें कि जिस दिन राजकुमारी को भेंट के लिए टापू में ले जाया जाए, उससे एक दिन पहले टापू में जाने की इजाज़त मुझे दे दें । फिर मैं उस देवता से निबट लूंगा ।'

'लेकिन अगर कोई बुरी नीयत से टापू की तरफ़ जाएगा तो समुद्र में डूब जाएगा ।'

'आप इसकी परवाह न करें, आप तो बस इजाज़त दे दें और मेरे लिए दो नावों का इन्तिज़ाम कर दें । अगर मेरे अल्लाह ने चाहा तो मैं राजकुमारी को ख़ैरियत के साथ वापस ले आऊंगा । साथ ही आप देखेंगे कि कैसे–कैसे रंगे सियार आपको हर साल धोखा देते रहे हैं ।'

'क्या सचमुच ऐसा कर सकते हो ? तुम डरते नहीं ?'

'मैं अपने अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता और जो अल्लाह से डरता है वह किसी से नहीं डरता ।'

'अच्छा अगर तुमने यह साबित कर दिया कि यह सब कुछ चालाक लोगों का धोखा है तो मैं तुमको मुंह-मांगा इनाम दूंगा।'

'मैं किसी इनाम के लालच में नहीं, बल्कि अल्लाह के बन्दों को पाखण्ड से बचाने के लिए यह ख़िदमत करूंगा। मेरा अल्लाह बहुत बड़ा देने वाला है और वह किसी का बदला नष्ट नहीं करता। वह मुझ से ख़ुश हो जाए तो समझिए कि मुझे सब कुछ मिल गया।

'प्यारे परदेसी !' अब राजा की ज़बान बिल्कुल नर्म पड़ चुकी थी। उसने कहा, 'मैं सब इन्तिज़ाम कर दूंगा।'

'लेकिन एक काम यह करना होगा कि आप किसी को बताएं नहीं और रात के समय मुझे टापू की तरफ़ रवाना करें।'

'यही होगा।'

'अच्छा तो अब आप इजाज़त दें। मेरे साथी मेरा रास्ता देख रहे होंगे। मुझे इस बारे में उनसे मशविरा करना है। वे मेरे सच्चे साथी हैं। वे मेरे साथ टापू को चलेंगे।'

'प्यारे परदेसी ! उनको यहीं बुला लो। तुम्हारे साथ वे सब मेरे मेहमान रहेंगे।'

इस बातचीत के बाद राजा उठ खड़ा हुआ। राजकुमारी उसके साथ हो ली। राजा के हुक्म से मेरे साथी उस महल में आ गए। मैंने उनके सामने पूरी बात रखी। उन्होंने कहा, 'परदेसी भाई ! बिल्कुल न घबराओ, जहां तुम्हारा पसीना गिरेगा, वहां हम अपना ख़ून बहा देंगे।'

उनसे यह सुना तो मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और हर वक़्त इस इन्तिज़ार में रहने लगा कि कब राजा हमें टापू की तरफ़ भेजता है और वहां जाकर हमें क्या करना होगा। हम यही मशविरा करते रहे।

जाना एक टापू में

फिर अचानक एक रात जब हम सब गहरी नींद में थे, राजा ने आकर मुझे जगाया और बताया कि कल भेंट का दिन है। समुद्र तट पर दो नावों का इन्तिज़ाम कर दिया गया है और किसी को नहीं बताया गया कि वे किसके लिए हैं। तुम अपने ख़ुदा का नाम लेकर जाओ। और देखो अगर तुम सब ज़िन्दा लौटे तो मैं वादा करता हूं कि तुम्हारा दीन और धर्म क़ुबूल कर लूंगा। तुम्हारी बातें सुन कर मैंने ग़ौर किया तो मुझे वे सब ठीक मालूम होती हैं।'

'अल्लाह मालिक है' कहकर मैंने अपने साथियों को जगाया। राजा से मिलाया। मेरे साथियों ने अपने–अपने लट्ठ सम्भाले, कुछ और ज़रूरी सामान लिया। उन्होंने

अपनी मां को जगाया और बताया कि 'हम सब आज एक ज़रूरी काम से जा रहे हैं । अल्लाह ने चाहा तो जल्दी ही लौट आएंगे ।'

इसके बाद जब हम चलने लगे तो राजा ने एक बहुत अच्छी तलवार मुझे दी । तलवार पाकर मैं बहुत ख़ुश हुआ । बचपन में हम अरबों को तीर–तलवार चलाना ख़ूब सिखाया जाता है । बचपन का ज़माना मेरी नज़रों के सामने फिर गया। मैंने राजा को सलाम किया और अपने साथियों के साथ समुद्र तट की तरफ़ चल दिया । वहां सचमुच दो नावें बंधी थीं । हम चार–चार आदमी एक–एक नाव में बैठे और चाँद की रोशनी में नावें खेने लगे । रास्ते में अल्लाह से दुआ करते जा रहे थे ।

रात ही के वक़्त टापू पर जा उतरे । एक झाड़ी में जाकर छिप गए और सुबह होने का इन्तिज़ार करने लगे । पौ फटने के बाद हम सबने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी, इसके बाद आगे बढ़े । आगे बढ़े तो टापू के बीचों बीच एक मन्दिर नज़र आया । हम उसी तरफ़ चले, मन्दिर के पास पहुंचे तो देखा कि मन्दिर के चारों ओर कमरे बने हैं, घूम–फिर कर इधर–उधर देखा तो कोई दिखाई न दिया 'या अल्लाह ! वे ग्यारह साधु कहां गए ?' मेरी ज़बान से निकला । इतने में दूर कहीं से आवाज़ आई 'बचाओ, मुझे बचाओ, भगवान के लिए मुझे बचाओ ' हम सब आवाज़ की तरफ़ दौड़ पड़े, देखा तो साधू एक दुबली–पतली लड़की को ज़मीन में ज़िंदा दफ़न कर रहे थे । हमने दूर ही से डांटा, 'ख़बरदार !'

'ख़बरदार' की डांट से वे सब चौंके । उन्होंने हमारी तरफ़ देखा, उनकी त्योरियां चढ़ गईं, घुड़क कर बोले—

'तुम कौन हो और इस टापू में बिना इजाज़त कैसे आ गए ?'

'हम कोई भी हैं, लेकिन पहले तुम बताओ, कौन हो और इस लड़की को क्यों ज़िंदा ज़मीन में दफ़न कर रहे हो ?'

'अच्छा तो ठहरो, बताते हैं, हम कौन हैं ?'

साधुओं के पास मोटे–मोटे सोटे थे । सोटो पर लोहे के तार लिपटे हुए थे । उन्होंने देर नहीं लगाई । सोटे तान कर हमारी तरफ़ झपटे । हमारे साथियों ने भी लट्ठ उठाए, मैंने तलवार म्यान से निकाली और देखते–देखते मार–धाड़ होने लगी । हम आठ थे, वे ग्यारह। लेकिन हमने जान की बाज़ी लगा दी। घंटा डेढ़ घंटा लड़ाई होती रही, इतनी देर में तीन साधु मेरी तलवार से मारे गए और सात मेरे साथियों के हाथों गिरे, एक मोटा साधु बच कर भागा । मैंने अपने साथियों से कहा, 'जाने न पाए ।'

हमने उसका पीछा किया, पीछा करते–करते हम वहीं पहुंच गए जहां हमारी

नावें बंधी हुई थीं । वहां पहुंचकर राजकुमारी को बड़े ही क़ीमती कपड़े और तरह–तरह के ज़ेवर पहने बैठा देखा । उसके आसपास मनों मिठाई और पूजा–पाठ का सामान रखा था । आहट पाकर राजकुमारी ने हमारी तरफ़ देखा । वह हैरान रह गई कि यह मामला क्या है । साधु भागकर समुद्र में छलांग लगाना ही चाहता था कि मेरे एक साथी ने उसकी टांग पकड़ ली और उसे गिरा दिया । फिर सबने मिलकर उसे रस्सियों से जकड़ दिया ।

राजकुमारी उठकर हमारे पास आ गई । उसने साधु को देखा । पहचान कर बोली, 'ये तो हमारे पुरोहित जी हैं ।' फिर मुझसे हाल पूछने लगी । मैंने लड़की को ज़िन्दा दफ़न करने का क़िस्सा सुनाया । वह सुनकर राजकुमारी कुछ सोचने लगी । फिर मुस्कुराई । मैंने पूछा, 'राजकुमारी ! तुम क्यों मुस्कुराई ?' बोली 'परदेसी जवान ! मेरा ख़्याल है कि तुमने जो कुछ कहा था, वह सच ही निकला । अब चलो ज़रा देखें वह लड़की कौन है ? उससे हाल पूछें ।'

रंगे सियार

साधू को घसीटते हुए हम सब उस गड्ढे के पास पहुंचे जिसमें उस लड़की को धकेला जा रहा था । लड़की बेचारी हैरान परेशान उसी जगह बैठी थी । उसने हम से पानी मांगा । हमने पानी लाकर उसे पिलाया । होश ठीक हुए तो उसने राजकुमारी को पहचान लिया । वह राजकुमारी के पैरों पर गिर पड़ी । राजकुमारी ने भी उसे पहचान लिया । वह उसकी सहेली कमला थी, जो पिछले साल भेंट चढ़ाई गई थी । राजकुमारी ने कमला से हाल पूछा तो उसने रो–रो कर बताया कि यह सब इन साधुओं का ढोंग है । ये भेंट चढ़ने वाली लड़की को यहां ले आते हैं और फिर मैं अपनी ज़बान से कुछ नहीं कह सकती कि उस बेचारी के साथ यहां क्या–क्या सलूक करते हैं, बस यह समझ लीजिए कि वह साल भर तक ऐसी लड़की को रखते हैं और आख़िरी दिन ज़िन्दा ही दफ़न कर देते हैं ।

हम लोग सब कुछ समझ गए । कमला ने बताया कि यहां जितने कमरे हैं उन में धन–दौलत के अम्बार लगे हैं । साधुओं ने बड़ा धन इकट्ठा कर रखा है । कमला के कहने से हमने कमरों को खोल कर देखा । बेशुमार दौलत हमारे सामने थी । हमने कमरों को उसी तरह बन्द कर दिया । इसके बाद राजकुमारी के साथ फिर वहीं गए, जहां राजकुमारी को बैठे पाया था । पेट भर कर खाया-पिया, कमला को भी खिलाया । खा-पीकर थोड़ी देर सुस्ताए । फिर नावें खोलीं । राजकुमारी और कमला को एक नाव पर बैठाया, उसी पर मैं बैठा । मेरा एक साथी नाव

खेने लगा । दूसरी नाव पर दूसरे साथी चले और दिन रहे राज महल में पहुंच गए ।

राजा और प्रजा का इस्लाम क़ुबूल करना

राजा ने हम सबको ज़िन्दा और सलामत देखा तो ख़ुशी के मारे हम से लिपट गया । राजकुमारी की मां यानी राजमाता ने मेरी बलाएं लीं और कहा कि इस परदेसी की बदौलत मेरी बच्ची ज़िन्दा बची । फिर जब कमला ने अपनी राम कहानी सुनाई तो राजा ने मुझ से कहा–

'परदेसी जवान ! तुम जो कुछ कहते थे, सच ही निकला । अब मैं वादे के मुताबिक़ तुम्हारा धर्म क़ुबूल करता हूं ।'

मैंने राजा को कलिमा पढ़ाया । राजा के साथ ही रानी, राजकुमारी, कमला और राजमहल के दूसरे लोग भी मुसलमान हो गए । दूसरे दिन राजा ने दरबार किया । शहर के बड़े–बड़े लोगों को दरबार में बुलाया । सबके सामने सारा हाल बयान किया । कमला को देखकर उसका बाप बहुत ख़ुश हुआ । फिर पुरोहित जी का मुक़दमा पेश हुआ । राजा ने उसे फांसी पर लटका दिया । इन साधुओं की पोल खुली तो शहर के सारे लोग मुसलमान हो गए । ख़ुदा की क़ुदरत कि इन सबके मुसलमान होने के थोड़ी देर बाद ही आसमान पर बादल छाने लगे और फिर देखते–देखते बारिश होने लगी । इस बारिश से लोगों का ईमान और भी मज़बूत हुआ । मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया । राजा ने अपने राज महल के पास मेरे और मेरे साथियों के रहने के लिए एक दूसरा महल बनवा दिया और मैं वहां रहने लगा ।

मैं दो साल वहां रहा । दो साल में मैंने वहां के लोगों को इस्लाम की ज़रूरी बातें सिखा दीं । इसके बाद वहां से चल दिया । चलते वक़्त लोगों ने बहुत रोका, लेकिन मैं 'सैर व सफ़र का रसिया' अब भला वहां कहां रुकने वाला था । अल्लाह का नाम लेकर चल दिया ।'

यह क़िस्सा लिखकर हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि इस देश के लोगों को पढ़े-लिखे कुछ चालाक लोगों ने शिर्क में फंसा रखा है । जगह–जगह बुतख़ाने बने हैं । चालाक लोग इन बुतों के नाते अपनी ख़ुदाई का डंका बजाते हैं । अगर कोई मर्दे मुजाहिद यहां के लोगों के सामने इस्लाम पेश करे तो यहां के लोग बड़ी आसानी से शिर्क छोड़ सकते हैं और वहमों के जाल को ख़ुद तोड़ सकते हैं ।

कहानी एक भयानक वन की

☆ हाथी और बिच्छू
☆ शेर और गेंडे की लड़ाई
☆ बौनों से मुलाक़ात
☆ जंगल से निकलना

□

हमारे इब्ने बतूता के सफ़रनामें को पढ़िए तो मालूम होगा कि जिस तरह उसने शहरों, जातियों और बादशाहों आदि का हाल ख़ूब फैलाकर लिखा है, उसी तरह पहाड़ों, जंगलों, नदियों और रेगिस्तानों के बारे में भी अनोखी बातें लिखी हैं। बल्कि हमारे इब्ने बतूता का वह भाग ज़्यादा दिलचस्प है जो जंगलों और पहाड़ों के बारे में है। उन भयानक जगहों का नक़्शा उसने अपने लफ़्ज़ों में इस तरह खींचा है, जिससे साफ़ मालूम होता है कि मानो हमारे इब्ने बतूता को ख़तरे में पड़ने का ही शौक़ था। उसकी वह अनोखी और दिलचस्प घटना पढ़िए जो उस पर एक जंगल में बीती। वह लिखता है—

हाथी और बिच्छू

एक जंगल में मैं अकेला रह गया। (वह अकेला किस तरह रह गया, यह बात भी बड़ी दिलचस्प है लेकिन उसे हम इस वक़्त छोड़ते हैं। वह अपने क़ाफ़िले से अचानक बिछड़ गया) मैं जंगल में इधर–उधर भटकता फिरा। जंगल में जंगली जानवर होते ही हैं। मैं बहुत डर रहा था कि कहीं कोई दरिंदा झपट पड़े और तिक्का–बोटी कर डाले। मैं यही सोचता हुआ बड़ी सावधानी के साथ इधर–उधर रास्ते की खोज में था कि अचानक एक तरफ़ पत्ते खड़खड़ाए। मैंने उधर देखा। एक झाड़ी के उस तरफ़ एक हाथी नज़र आया। हाथी को देख कर मैं घबराया। मैं उल्टे पांव भागा, हाथी मेरी तरफ़ झपटा। मैंने अंधाधुन्ध भागना शुरू कर दिया। मुझे यह बिल्कुल होश न था कि सामने जो घास है उसमें कोई सांप छिपा हो और मुझे डस ले। मैं इधर से उधर बार–बार मुड़ता और आगे बढ़ता चला जा रहा था। हाथी को मुड़ने में ज़रा कठिनाई होती है फिर भी उसने मेरा पीछा न छोड़ा। वह मुड़–मुड़कर मेरी तरफ़ दौड़ने लगता।

मैं दौड़ते–दौड़ते बेदम हो गया। मैं अल्लाह से दुआ करने लगा कि ऐ अल्लाह! इस मुसीबत में तेरे सिवा कोई बचाने वाला नहीं। यह दुआ करते ही मेरी समझ में आया कि एक बहुत मोटे और पुराने पेड़ पर चढ़ जाना चाहिए। बस मैंने एक बड़े पेड़ को ताका। इधर से उधर और उधर से इधर होता हुआ उस पेड़ के नीचे जा पहुंचा। झट उस पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर जा बैठा। हाथी भी पेड़ के नीचे आ गया। उसने एक टक्कर पेड़ में मारी, लेकिन पेड़ था

पुराना और बहुत ही मोटा । उसकी जड़ें बहुत ही गहराई और फैलाव में थीं । हाथी उसे गिरा न सका । मैंने मोटी–मोटी टहनियां बड़ी मज़बूती से पकड़ रखी थीं और दिल ही दिल में ख़ुदा को याद कर रहा था । मैंने देखा कि हाथी कुछ पीछे हटा और उसने बढ़कर फिर एक टक्कर मारी । लेकिन पेड़ का कुछ न बिगड़ा । मैं पेड़ पर बैठा दुआएं करता जाता और नीचे देखता जाता । एक बार मैंने नीचे देखा । हाथी ने पेड़ की एक मोटी टहनी को पकड़ कर खींचा । ख़ुदा का करना उस टहनी की जड़ में खोखली जगह थी । उस खोखली जगह से एक भूरा बिच्छू निकला । मेरी आंखों ने देखा वह भूरा बिच्छू मुर्ग़ी के चूज़े के बराबर था । न जाने क्या हुआ । वह बिच्छू खोखली जगह से निकल कर ठीक हाथी के कान पर गिरा । उसने हाथी के कान के अन्दर पहुंच कर इस ज़ोर से डंक मारा कि हाथी चीख़ उठा । देखते–देखते वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा । बिच्छू उसके कान से निकल कर एक तरफ़ रेंग गया । हाथी ज़मीन पर गिरकर चिंघाड़ने लगा । वह कान फटफटाता और सिर और सूंड ज़मीन पर पटकता रहा । ज़्यादा देर न लगी, वह बिच्छू के ज़हर से उसी जगह मर गया । मर ही नहीं गया, ख़ुदा की पनाह, अल्लाह तआला ने कैसे–कैसे ज़हरीले जानवर पैदा किए हैं, उस बिच्छू के डंक में न जाने कौन–सा ज़हर था कि हाथी की सूंड से पानी निकलना शुरू हो गया । फिर आंखें बह पड़ीं । कानों से भी कुछ सफ़ेद–सफ़ेद निकल रहा था । मुझे ऐसा लगा कि ज़हर के मारे हाथी का पूरा बदन पानी हो गया । मैं उस वक़्त न जाने क्या–क्या सोचने लगा । उस वक़्त मेरे दिल में ख़ुदा की वह सारी मख़लूक़ आ रही थी, जो भयानक और बहुत ही डरावनी शक्ल में ख़ुदा ने पैदा की है । ख़ुदा की क़ुदरत मेरे दिल और दिमाग़ पर छाई हुई थी ।

शेर और गेंडे की लड़ाई

हाथी के मरने से मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया । मैंने समझ लिया कि ख़ुदा ने मेरी दुआ सुन ली । मेरी ज़िंदगी अभी बाक़ी है । इसीलिए तो अल्लाह ने बिच्छू को मेरी मदद के लिए भेज दिया । मैंने सोचा कि अब पेड़ से उतरना चाहिए, मगर अल्लाह को एक करिश्मा और दिखाना था । मैं पेड़ से उतरने के लिए सोच ही रहा था कि अचानक शेर की गरज सुनाई दी । मैं उधर देखने लगा । शेर ने मुझे देख लिया था । वह फिर गरजा, उसके दहाड़ने से मेरा दिल दहल–दहल जाता था । मगर मैंने टहनियों को ख़ूब अच्छी तरह पकड़ लिया था, हाथों से भी और पैरों से भी । शेर ने दो तीन बार छलांग लगाई, लेकिन वह टहनियों में उलझ–उलझ कर गिर गया । फिर मैं इतनी ऊंचाई पर था कि अगर टहनियां भी न होतीं तब

भी शेर इतनी ऊंची छलांग नहीं लगा सकता था ।

शेर मुझे अपना शिकार समझ कर दहाड़ता था । मैं सोचता था कि यह ख़ूब रही, हाथी से छूटा तो शेर से पाला पड़ गया । अब देखिए अल्लाह इससे किस तरह बचाता है । मैंने फिर अल्लाह को याद किया । अल्लाह ने फिर मेरी सुन ली । एक तरफ़ से किसी जानवर के आने की आहट हुई, पेड़ों और झाड़ियों की आड़ से एक गेंडा निकला । गेंडे की तस्वीर तो मैंने देखी थी, लेकिन असल जानवर को देखने का मौक़ा नहीं मिला । यह गेंडा हाथी से क़द में छोटा था । पैर हाथी ही की तरह थे, लेकिन छोटे थे । सूंड के बदले गेंडे की थूथन पर एक सींग निकला हुआ था। बहुत ही नुकीला सींग । बड़े ही भद्दे रंग और मोटी–मोटी खाल वाला यह सींगदार हाथी यानी गेंडा झाड़ियों से बाहर आकर खड़ा हो गया । उसने शेर को और शेर ने उसको देखा । गेंडे को उस मौक़े पर मौजूद देखकर शेर को बड़ा ग़ुस्सा आया । शेर यह समझ रहा होगा कि जंगल के राजा के सामने इस मुटल्ले की हिम्मत क्यों हुई कि आए । शेर उसे देख कर गरजा और फिर उसने गेंडे पर छलांग लगा दी । शेर की छलांग बड़ी सच्ची होती है । वह गेंडे के ठीक कंधे पर जाकर गिरा । कंधे पर शेर ने पंजा मारा । मैंने सुना था कि शेर पंजा मार कर सवा सेर गोश्त नोच ले जाता है, मगर मोटे गेंडे की खाल भी न जाने लोहे की बनी थी, शेर नोंच न सका, फिर बात यह भी थी कि शेर को गेंडे के सींग का भी ख़तरा था । इधर उसने उसका कंधा नोचा उधर उसने सींग मारा । शेर पहले से शायद होशियार था । जैसे ही गेंडे ने सिर ऊपर की तरफ़ करके उसको सींग मारना चाहा, शेर छलांग लगा कर दूर जा गिरा ।

गेंडा ज़ख़्म खाकर बिफर गया । मैंने सुना था कि गेंडा बड़ा सीधा जानवर होता है । मैंने यह भी सुना था कि वह घास खाने वाला जानवर है । मेरा ख़्याल था कि वह डरपोक होगा । मगर वह शेर के सामने डट गया । सींग तानकर शेर की नज़र से नज़र लड़ा दी, मानो यह कह रहा था कि आ तू अब की बार ।

शेर छलांग लगा कर मुड़ चुका था । वह भी बिफरा हुआ था । फिर जंगल का राजा किसी की निगाहों को कब देख सकता था । उसने फिर छलांग लगाई और फिर गेंडे के कंधे पर उसी जगह जाकर गिरा और फिर पंजा मारा । इस बार गेंडा बिलबिला गया । इस बार गेंडा थोड़ी दूर भागा । शेर ने पंजा मारने के साथ जबड़ा भी भर लिया । लेकिन गेंडे की खाल उससे अब भी नोची न जा सकी । मजबूर होकर शेर कंधे पर फिर कूदा, मगर वह हार मानने वाला कब था । वह फिर मुड़ा । उधर गेंडा शेर के दो हमलों से बहुत ही ज़ख़्मी हो चुका था लेकिन वह भी पीठ नहीं दिखाना चाहता था । वह फिर सींग तान कर खड़ा हो गया

कि अब की बार आ तो बताऊं ।

शेर ने फिर उस पर छलांग लगाई । अब की बार उसने छलांग लगाई तो गेंडा एकदम पीछे हट गया । पीछे हटने का नतीजा यह निकला कि शेर ठीक उसकी सींग पर आकर गिरा । गेंडे ने नुकीला सींग उसकी छाती में घुसेड़ दिया । अब शेर गेंडे के सींग पर तड़प रहा था और इस तरह आवाज़ निकाल रहा था जैसे वह बहुत जल्दी मरने वाला हो ।

गेंडा थोड़ी देर तक अपनी जीत के घमण्ड में शेर को सींग पर लिए रहा, फिर जब शेर का तड़पना बंद हुआ यानी जब वह मर गया तो उसी तरह सींग पर लिए हुए एक तरफ़ घास में चला गया । मैं पेड़ पर बैठा यह अनोखा खेल देखता रहा । इसमें शक नहीं कि मैं पेड़ पर इन दोनों जंगली जानवर से बचा हुआ बैठा था, मगर दो–तीन घंटे मैंने जो कुछ देखा, उससे मेरी हिम्मत नहीं हुई कि मैं पेड़ से उतरूं । शाम हो गई थी, मैंने पेड़ पर ही बसेरा करने की ठानी । टहनियों को एक–दूसरे से अटका और फंसा–फंसा कर मज़बूत–सा छप्पर बना लिया और उसी पर लेट गया फिर जब नींद आ गई तो फिर कैसा डर कैसा भय ! मैं रात भर सोता रहा । सुबह सवेरे जब चिड़ियां चहचहाने लगीं तो मेरी आंख खुली । मैंने दूर–दूर तक नज़र डाली । जब अच्छी तरह इत्मीनान हो गया कि कोई जंगली जानवर नहीं है तो उतरा । एक जगह नमाज़ पढ़ी । फिर एक तरफ़ चल दिया । मैं बहुत ही चौकन्ना था, किसी तरफ़ ज़रा भी आहट होती कि मैं चौंक पड़ता, बड़े–बड़े पेड़ों को मैंने निगाह में रखा कि ख़तरा सामने आते ही किसी बड़े पेड़ पर चढ़ जाऊंगा ।

बौनों से मुलाक़ात

मैं कुछ ही दूर गया था कि एक तरफ़ किसी के चीख़ने की आवाज़ आई । मैंने उधर देखा । चीख़ने वाला तो मुझे दिखाई न दिया, हां, एक कुत्ते को देखा, वह अपने मुंह में बालिश्त डेढ़ बालिश्त का कोई जानवर दबाए भागा जा रहा था । नज़र जमाकर देखा तो जाना कि कुत्ते के मुंह में जानवर नहीं, बल्कि इंसान का बच्चा था काले–काले हाथ-पांव वाला बच्चा । यह देखकर मैंने एक बड़ा-सा पत्थर उठा लिया । फिर जब कुत्ता मेरे निकट आया तो पत्थर उस के सिर पर दे मारा । पत्थर कुत्ते के सिर में लगा । पत्थर लगते ही उसके मुंह से 'पें' की आवाज़ निकली । 'पें' करने से कुत्ते का मुंह खुला तो बच्चा उसके मुंह से छूटकर अलग जा गिरा । मैंने एक पत्थर और मारा और फिर एक और, और फिर पथराव

कर दिया । कुत्ता चोट खाकर एक तरफ़ भाग गया । मैंने बच्चे को उठाया । वह सचमुच इंसान का बच्चा था । मैं उसे हाथ में लिए देख ही रहा था कि चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ बिल्कुल मेरे ही निकट आ गई । मैंने इधर–उधर देखा । काली–काली नंग–धड़ंग एक बौनी औरत हांफती–कांपती और चिल्लाती चली आ रही थी और अपनी जंगली ज़बान में न जाने क्या–क्या कह रही थी । उसने आते ही बच्चे को मेरे हाथों से ले लिया । सीने से लगाकर मुझे देखने लगी । उसका क़द गज़ भर से कम ही था । वह मेरे सामने खड़ी थी । वह अपने बच्चे को प्यार कर रही थी और मुझ से कुछ कह रही थी । मैं उसकी बोली न समझ सका तो उसने मेरा कुरता पकड़ा और एक तरफ़ ले चली । मैं चुपचाप उसके साथ हो लिया । लगभग आधा घण्टा चलकर उसने किसी को पुकारना शुरू कर दिया । उसकी पुकार सुनकर दस-बारह बौने तीर कमान लिए हुए इधर–उधर से निकल आए ।

मुझे देखकर सबके सब खड़े हो गए । बौनी औरत ने उनसे कुछ कहा तो वे सब आकर मेरे सामने औंधे लेट गए । अपना माथा ज़मीन पर रगड़ा और खड़े होकर मेरे आसपास नाचने और उछलने–कूदने लगे । मैं खड़ा यह सब देख रहा था । मैं उनकी बोली तो न समझ सका, लेकिन यह समझ गया कि वे सब मुझ से ख़ुश हैं और अपनी इन हरकतों से मुझे ख़ुश करना चाहते हैं । मैं भी खड़ा मुस्कुराता रहा । जब ये बौने अपना नाच कर चुके तो मुझे घेरे में लिए हुए एक तरफ़ चले । थोड़ी दूर चलकर झाड़ियों का एक कुंज दिखाई दिया । वे औरत और बौने उस कुंज में घुस गए । मैं समझ ही न सका कि कुंज के अन्दर कैसे जाऊं । शायद बौने समझ गए । कई बौनों ने झाड़ियों को पकड़ कर इधर–उधर खींचा तो रास्ता हो गया । उस रास्ते से मैं अन्दर गया । अन्दर जाकर कुछ जगह मिली । यह जगह उनके रहने की थी । मैंने वहां हाथी के दांतो के अलावा कुछ न देखा । मुझे बड़ी भूख लग रही थी । मैंने अपना थैला खोला । रूखी–सूखी रोटियां और कुछ मेवे निकाले । मेरे पास जो कुछ था उसमें से ज़रा–ज़रा सा बौनो को भी दिया । मैंने भी खाया । रूखी–सूखी रोटियां बौनों ने ख़ूब मज़े ले–लेकर खाईं । खाकर उन्होंने मुझे एक खेल दिखाया । वे एक–दूसरे के कंधों पर सवार होकर नाचे, कंधों से कूदे और फिर उचक–उचक कर वहीं जा बैठे । ख़ूब ही मज़ेदार तमाशा दिखाया । उसके बाद हाथ उठाकर उस औरत से कुछ कहा । औरत ने एक तरफ़ इशारा किया । बौने उस तरफ़ गए । फिर जब लौटे तो हाथी के दांतों से लदे हुए थे । उन्होंने मुझ से चलने का इशारा किया । मैं उनके साथ चल दिया । रास्ता उनको मालूम था । मैं समझ गया कि वे मुझको जंगल से बाहर करने जा रहे हैं ।

जंगल से निकलना

मैं उन सबके झुरमुट में था । औरत अपने बच्चे को लिए मेरे बराबर चल रही थी । हम सब दिन भर चलते रहे । ज़ुह्र की नमाज़ मैंने रास्ते में पढ़ी । अस्र के वक़्त बौने मुझे लेकर जंगल के किनारे जा पहुंचे । जंगल के किनारे बहुत से लोग मौजूद थे । बौनों को देखकर वे सब आगे बढ़े । वे सब अपने साथ बहुत–सी रोटियां लाए थे । मैं समझ गया कि वे सब रोटियां देकर बौनों से हाथी के दांत ले जाया करते हैं । मैंने यह बात सुनी भी थी । लेकिन आज बौनों ने रोटियों की तरफ़ कोई ध्यान न दिया । उन्होंने सारे के सारे दांत मेरे आगे ढेर कर दिए और मेरे पीछे खड़े हो गए और अपने–अपने तीर कमान सम्भाल लिए । शायद उनका मक़सद यह था कि अगर किसी आदमी ने ज़बरदस्ती हाथी के दांत लेने चाहे तो उसको तीर मार देंगे ।

यह देखकर लोगों ने मुझसे हाथी के दातों के दाम पूछे । मैंने कहा कि नीलाम करूंगा, जो ज़्यादा दाम देगा उसे दूंगा । मैंने बोली बुलवानी शुरू की । हज़ारों की रक़म मेरे हाथ आई । इसी रक़म से रोटियां ख़रीद कर मैंने बौनों को दीं । उन्हें इशारा किया कि ज़रा ठहरे रहें । यह मेरा पहला इशारा था कि बौने समझ गए । लोगों से पूछा कि यह रोटियां कहां मिलती हैं । लोगों ने रोटियों की दुकानें बता दीं । मैंने जाकर ढेरों रोटियां ख़रीद लीं । लदवा कर बौनों के सामने लाया । बौने बहुत ख़ुश हुए । मैंने इशारा किया, ले जाओ । बौनों ने अपने–अपने सिरों पर रोटियां लादीं । रोटी लादे–लादे फिर एक बार मेरे चारों तरफ़ नाचे और जंगल की तरफ़ चले गए । वे बार–बार मुड़कर मुझे देखते थे । मैं भी उनको देख रहा था । मैं सोच रहा था कि हम इंसानों के लिए अल्लाह ने कैसे–कैसे मददगार पैदा किए हैं । अगर ये बौने जंगल में न हों तो हाथी के दांत हमें किस तरह मिलें ? कैसी–कैसी रहमतें हैं अल्लाह की ।

जब बौने नज़र से ओझल हो गए तो मैं भी लोगों के साथ आबादी की तरफ़ चल दिया ।

जंगल के हालात लिखने के बाद हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि मोमिन का सबसे बड़ा सहारा दुआ है । मोमिन को चाहिए कि अपने मालिक की याद करता रहे, और वक़्त पड़ने पर ज़्यादा से ज़्यादा उसी की तरफ़ दिल को लगाए । अल्लाह अपने बन्दे की मदद ऐसे तरीक़े से करता है कि इंसान सोच भी नहीं सकता । इस जंगल में अल्लाह ही ने मुझे बड़े से बड़े ख़तरों से बचाया । मैंने हर ख़तरे में अल्लाह ही से दुआ की, और अल्लाह ने मेरी दुआ सुन ली ।

ईमान की बात

- ☆ गिरफ़्तारी
- ☆ कुत्ता अच्छा या तुम ?
- ☆ ईमान और हिदायत
- ☆ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)
- ☆ बादशाह का मुसलमान होना
- ☆ मैं तो पहले से मुसलमान हूं
- ☆ और तुम किस तरह मुसलमान हुए
- ☆ अमीर जिरास
- ☆ कुश्ती और ग़ैबी मदद

□

हमारा इब्ने बतूता अपने सफ़रनामे में अपना एक ऐसा क़िस्सा लिखता है, जिसे पढ़कर ईमान में मज़बूती आती है और बड़ी नसीहत मिलती है । और यह भी मालूम होता है कि अगर इंसान अल्लाह को याद करता रहे, तो अल्लाह ठीक उस वक़्त अपने बन्दे की मदद करता है जब सारे सहारे टूट जाते हैं । वह लिखता है कि—

गिरफ़्तारी

मैं एक बार कुछ लोगों के साथ एक जंगल से गुज़र रहा था । जंगल में चारों तरफ़ हरियाली छाई हुई थी । तरह–तरह के फूलों की ख़ुशबू आ रही थी । रंग–बिरंगी चिड़ियां पेड़ों और पौधों पर फुदक रही थीं । हिरनों के झुण्ड के झुण्ड जगह–जगह चरते फिर रहे थे । नील गायें भी इधर–उधर घूम रही थीं । जंगल में जो नदी बह रही थी उसका पानी बहुत साफ़ था । यह देखकर हम सब एक साफ़ जगह ठहर गए । ख़्याल था कुछ देर सुस्ता कर चलेंगे ।

हम लोगों ने ज़मीन पर बिस्तर लगा दिए । अभी कुछ ही देर लेटे थे कि अचानक एक तरफ़ से कुछ सिपाही आते दिखाई दिए । वे सिपाही हमारे पास आए । उन्हें देखकर हम सब उठ बैठे । सिपाहियों ने हम से पूछा—

'तुम लोग कौन हो और यहां क्यों ठहरे हो ?'

'हम लोग मुसलमान हैं और आराम करने के लिए यहां ठहरे हैं ?' मैंने अपने साथियों की तरफ़ से जवाब दिया । मेरी ज़बान से यह बात निकली ही थी कि सिपाहियों ने हमें हथकड़ियां पहना दीं । हमारा सामान छीन लिया और हमें लेकर एक तरफ़ चल दिए ।

हमें चलते हुए ज़्यादा देर न लगी थी कि सामने एक बड़ा लश्कर दिखाई दिया । लश्कर पड़ाव डाले पड़ा था । लश्कर के बीचों-बीच बड़ा–सा शामियाना तना था । शामियाने में शाही तख़्त बिछा था और लोग बड़े अदब से तख़्त के आसपास बैठे थे । तख़्त पर एक जलाली इंसान त्योरियां चढ़ाए बैठा था । मैं समझ गया कि यह बादशाह है । सिपाही हम सबको पकड़ कर बादशाह के पास ले गए । बादशाह का कुत्ता भी तख़्त के पास ही चमड़े के एक गद्दे पर बैठा था । वह सुअर का गोश्त खा रहा था ।

'कौन हैं ये और इन्हें क्यों पकड़ लाए हो ?' बादशाह गरजा। सिपाहियों ने बड़े अदब के साथ अर्ज़ किया—

'हुज़ूर ये कुछ मुसलमान हैं। ये मुसलमान जंगल में ठहरे हुए थे। यह जंगल हुज़ूर की सीमा के अन्दर है। आपका हुक्म है कि आपकी सीमा के अन्दर कोई मुसलमान न आने पाए। हमने इन्हें देखा तो पकड़ लाए। अब जो आप हुक्म दें।'

यह सुनकर बादशाह ग़ुर्राया 'हूं'.........उसने घूर कर हमें देखा फिर त्योरियां चढ़ा कर बोला—

'तुम लोग हमारी सीमा में क्यों आए ?'

यह सुनकर मेरे साथियों ने मुझ से कहा, 'आप जवाब दें।' मैंने बादशाह से कहा—

'हमें यह मालूम न था कि आप अपनी सीमा में मुसलमानों को नहीं आने देते हैं। हम तो मुसाफ़िर हैं। रास्ते से जा रहे थे। रास्ते में जंगल पड़ा। हम ठहर गए। आपके सिपाहियों ने हमें देखा और बे-क़ुसूर पकड़ लाए।'

'बेक़ुसूर।' बादशाह आप ही आप दांत पीसने लगा। 'तुम जानते नहीं कि हमारी सीमा से मिला हुआ मुसलमानों का जो देश है उस देश के बादशाह से हमारी लड़ाई हुई थी। उस लड़ाई में हमें माल और जान का बहुत नुक़सान हुआ। मैं तुम लोगों को अभी कुत्तों से नुचवा डालूंगा।'

यह कहकर उसने हुक्म दिया कि शिकारी कुत्ते लाए जाएं। हुक्म की देर थी कि शिकारी कुत्ते आ गए।

'मरने के लिए तैयार हो जाओ' बादशाह हमें देखकर गरजा। हम कुछ न बोले तो बादशाह ने बे-इज़्ज़त करने के लिए हमसे पूछा—

कुत्ता अच्छा या तुम

'अच्छा यह बताओ, तुम इन कुत्तों से अच्छे हो या ये कुत्ते तुमसे अच्छे हैं ?'

मैंने जवाब दिया—

'अगर हमारी मौत ईमान के साथ हो तो हम सब इन से अच्छे वरना ये कुत्ते हम से अच्छे हैं।'

यह जवाब सुना तो बादशाह मेरा मुंह ताकने लगा । शायद वह मेरी बात समझ न सका । बोला 'तुमने क्या कहा ?' मैंने फिर जवाब दिया कि 'अगर हम ईमान की सलामती के साथ मरे तो हम कुत्तों से अच्छे और अगर बेईमान होकर मरे तो कुत्ते हमसे अच्छे ।'

मेरी यह बात शायद बादशाह फिर न समझ सका । उसने हुक्म दिया कि कुत्तों को वापस ले जाओ । ये मुसलमान एक ख़ेमे में क़ैद रखे जाएं और रात को ज़ब मैं खाना खाकर बैठूं तो सिर्फ़ इस जवान को मेरे पास लाया जाए ।

हुक्म के मुताबिक़ हम मुसलमानों को एक ख़ेमे में क़ैद रखा गया । हम सब नमाज़ और क़ुरआन पढ़ते रहे । अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते रहे और उसी से मदद मांगते रहे । हमने अपनी दुआ में अल्लाह से यह भी कहा कि 'ऐ अल्लाह ! अगर हम इस हालत में मारे जाएं कि हम मुसलमान ही हों और मुसलमान होना ही हमारा जुर्म हो तो हम इस पर राज़ी हैं । हमें यक़ीन है कि अगर हम इस हाल में मरे तो तू हम पर ज़रूर रहम फ़रमाएगा और क़ियामत में अपनी ख़ुशी के घर जन्नत में जगह देगा ।'

मग़रिब की नमाज़ के बाद हमारे पास सिपाही खाना पानी लाए । हमने खाया पिया । थोड़ी देर के बाद इशा की नमाज़ पढ़ी । अभी हम इशा की नमाज़ पढ़ कर दुआ ही मांग रहे थे कि मुझे पुकारा गया । मेरे साथियों ने मुझे 'ख़ुदा हाफ़िज़' और 'फ़ी अमानिल्लाह' कहा और दुआ के लिए हाथ उठा दिए ।

मैं अपने साथियों की दुआएं लेकर उठा । सिपाही मुझे लेकर चले । मेरे हाथों में हथकड़ियां पड़ी हुई थीं और कमर से रस्सी बंधी हुई थी । सिपाही मुझे लेकर बादशाह के पास पहुंचे । उस वक़्त बादशाह अपने ख़ेमें में बिल्कुल अकेला था । उस वक़्त अल्लाह ने अपनी रहमत से मेरे ऊपर ऐसा इत्मीनान उतारा कि मैं ज़रा भी तो नहीं डरा । निडर खड़ा हुआ यह सोचता रहा कि बादशाह जो कुछ कहेगा उसका ठीक-ठीक जवाब दूंगा । रहा मरना–जीना तो वह ख़ुदा ही के हाथ में है । ख़ुदा का हुक्म यही है कि बादशाह मुझे क़त्ल करा दे तो इससे अच्छी मौत हो ही क्या सकती है । मैं इस्लाम की राह में शहीद गिना जाऊंगा । और शहीद आख़िरत के दिन बिना हिसाब–किताब के जन्नत में जाएगा ।

अच्छा तो मैं बड़े ही इत्मीन से खड़ा था । बादशाह ने मेरी तरफ़ देखा, फिर सिपाहियों को ख़ेमें से बाहर जाने का हुक्म दिया । जब सिपाही चले गए तो बादशाह ने मुझ से पूछा, 'तुमने किस चीज़ का नाम लिया था जिसके होते हुए इंसान कुत्ते से अच्छा होता है और जिसके न होने से कुत्ते से बदतर हो जाता है ।

ईमान और हिदायत

'ऐ बादशाह ! अल्लाह आपको हिदायत दे, इस चीज़ का नाम 'ईमान' है । 'ईमान, ईमान' । बादशाह ने कई बार यह लफ़्ज़ दोहराया, फिर मुझसे बोला 'तुमने मुझे अभी क्या दुआ दी, ख़ुदा मुझे क्या दे ?'

ऐ बादशाह ! मैंने आपके लिए यह दुआ की कि अल्लाह आपको हिदायत दे ।'

'हिदायत, हिदायत' बादशाह ने भी यह लफ़्ज़ दोहराया, फिर बोला, 'मुझे बताओ ईमान और हिदायत का क्या मतलब है ? तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि ईमान और हिदायत बड़ी अच्छी चीज़ें हैं ।'

'बेशक ऐ बादशाह ! ईमान और हिदायत अल्लाह की सबसे बड़ी नेमतें हैं । ईमान का मतलब यह है कि हम अपने पैदा करने वाले को मानें । उस पैदा करने वाले को, जिसने हमारे लिए हवा बनाई, जिसने हमारे लिए पानी बरसाया, जिस मेहरबान ने ज़मीन को हमारे लिए बिछौना बना दिया । हमारी ज़रूरतों के लिए तरह–तरह का सामान पैदा किया और जिसने हमें दुनिया की सारी चीज़ों से बढ़कर बनाया ।'

'ऐ बादशाह ! सोचना चाहिए, अल्लाह चाहता तो हमें कुत्ता बना देता, सुअर बना देता या जंगल का कांटेदार ज़हरीला पौधा बना देता । उसकी मेहरबानी है कि उसने हमें इंसान बनाया ।

'बेशक' ! बादशाह की ज़बान से बेशक का लफ़्ज़ सुना तो मैंने दिल ही दिल में कहा, शायद मेरी बात वह समझ रहा है—अब मैंने फिर कहा—

'उस पैदा करने वाले का हम पर कितना बड़ा एहसान है ! उस पैदा करने वाले को कोई ख़ुदा कहता है और कोई अल्लाह। कोई ईश्वर कहता है और कोई किसी और अच्छे नाम से याद करता है । सारे अच्छे नाम उसी के लिए हैं । अब सोचना चाहिए कि वह ख़ुदा एक ही हो सकता है । अगर दुनिया में दो ख़ुदा होते तो दुनिया का यह कारख़ाना टूट–फूट जाता । बिल्कुल इसी तरह दोनों ख़ुदा लड़ते, जिस तरह हम बादशाहों को आपस में लड़ते देखते हैं ।'

'इसमें क्या शक है' यह बोल बादशाह की ज़बान से निकले तो मैंने नज़र भर के उसे देखा । मैंने देखा कि उसका ग़ुस्सा ख़त्म हो चुका था । माथे पर अब

बल न थे । मैं फिर कहने लगा—

'तो वह ख़ुदा एक ही हो सकता है । वह आसमानों और ज़मीन का मालिक है । उसी के बस में सब कुछ है । वह जिसे चाहे अमीर बना दे, जिसे चाहे ग़रीब कर दे । कोई उसे रोक नहीं सकता । हमें चाहिए कि उस ख़ुदा से मुहब्बत करें । उससे हर वक़्त डरते रहें कि हमारा मेहरबान ख़ुदा हम से नाराज़ न हो जाए ।'

'ख़ुदा नाराज़ हो जाएगा तो क्या होगा क़ैदी ?'

'ऐ बादशाह ! ईमान की बात यह भी है कि एक दिन दुनिया का यह कारख़ाना ख़त्म हो जाएगा, क़ियामत आ जाएगी । सारे जानदार मर जाएंगे, उसके बाद अल्लाह सबको फिर ज़िन्दा करेगा । उस दिन वह अदालत की कुर्सी पर बैठेगा और हमारी पूरी ज़िंदगी का हमसे हिसाब लेगा । जिसने उस अल्लाह को अपना मालिक जाना और माना होगा और उसके हुक्मों के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी गुज़ारी होगी उससे वह उस दिन ख़ुश होगा । उसे अपनी ख़ुशी के घर जन्नत में जगह देगा । अल्लाह का वह ख़ुशनसीब बन्दा सदा के लिए जन्नत में रहेगा ।'

'और जिससे नाराज़ होगा ?'

'जी हां, उसके बारे में बताता हूं । जिसने अल्लाह को अपना मालिक न माना होगा, जिसने अपने मालिक के एहसानों को भुला दिया होगा । उसके हुक्मों की परवाह न की होगी, उससे अल्लाह नाराज़ होगा और नाराज़ होकर नरक की सुलगती आग में डाल देगा ।'

'आग में ?' बादशाह चौंका । मैंने देखा बादशाह मेरी तरफ़ बड़े ध्यान से देख रहा था । मैंने कहा, 'जी हां ! वह अल्लाह जो चाहे सज़ा दे ।'

'हूं.....'बादशाह ने सिर झुका लिया । मैं भी ज़रा देर के लिए चुप हो गया । फिर मैंने कहा 'ऐ बादशाह ! ईमान की एक बात और कहना चाहता हूं । उम्मीद है, जिस तरह आपने ध्यान से सुना है, आख़िरी बात भी उसी तरह सुनेंगे ।'

'ठहरो क़ैदी ! पहले यह बताओ कि हमें अल्लाह के हुक्म कैसे मालूम हों, जिनके मुताबिक़ हम ज़िन्दगी गुज़ार कर अपने पैदा करने वाले को ख़ुश कर सकें ।'

अल्लाह के रसूल (सल्ल०)

'यही आख़िरी बात है । मैं यही बताना चाहता था । अल्लाह ने अपने हुक्म बताने के लिए हर देश और ज़माने में अपने ऐसे नेक बन्दे पैदा किए जो इंसानों

में श्रेष्ठ गुणवाले थे, जिनसे अच्छे इंसान हो ही नहीं सकते। अल्लाह ने अपने फ़रिश्ते जिब्रील (अ०) के ज़रिए उन पर अपना कलाम उतारा, अपने हुक्म उतारे, उन हुक्मों पर चलने का तरीक़ा बताया और उन्हें हुक्म दिया कि यही हुक्म सारे बन्दों को सिखाएं। उन बन्दों को रसूल (सल्ल०) कहते हैं। अल्लाह के सबसे आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम) हैं। अल्लाह ने आप (सल्ल०) पर क़ुरआन उतारा। क़ुरआन में वे सारी बातें लिखी हैं जो उसने अपने आख़िरी रसूल (सल्ल०) पर उतारीं। तो अब ईमान की पूरी बात यह हुई, अल्लाह को एक मानना, आख़िरत के दिन को मानना और उन सारी बातों को मानना जो क़ुरआन मजीद में बयान हुई हैं। जो इंसान ये बातें मानता है, उसको मुसलमान कहते हैं। जो नहीं मानता उसे काफ़िर (न मानने वाला) कहते हैं। मुसलमान अल्लाह का फ़रमाबरदार बन्दा होता है और काफ़िर नाफ़रमान। अब आप समझ सकते हैं कि ख़ुदा की नज़र में कौन अच्छा है और कौन बुरा? अच्छा वही जो अल्लाह पर ईमान लाए, आख़िरत के हिसाब से डरे और अल्लाह के हुक्मों पर इस तरह चले जिस तरह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने चलकर दिखाया।'

बादशाह का मुसलमान होना

यह कहकर मैं ख़ामोश हो गया। बादशाह थोड़ी देर सिर झुकाए कुछ सोचता रहा। उसके बाद वह उठा। उसने मेरे हाथों से हथकड़ियां और रस्सी ख़ोल दीं। मुझे पास रखी हुई कुर्सी पर बिठाया फिर बोला, मेरा दिल मानता है कि तुमने ईमान के बारे में जो बातें बताई हैं, वे बिल्कुल ठीक हैं.....अब यह बताओ कि हिदायत का क्या मतलब है? यह सुनकर मैं मुस्कुराया। मैंने कहा, 'हिदायत का मतलब है वह रास्ता जिस पर चलकर हम अपने अल्लाह को ख़ुश कर सकें, वह सीधा रास्ता जो हमें जन्नत की तरफ़ ले जाए।'

'मेरे क़ैदी मेहमान!' बादशाह की आवाज़ में नर्मी पैदा हो गई, उसने कहा, 'क़ैदी मेहमान, इसका मतलब तो यह हुआ कि हम इस तरह ज़िन्दगी गुज़ारें, जिस तरह क़ुरआन बताए.।'

'ठीक–ठीक ऐ बादशाह। बिल्कुल ठीक। आप पूरी बात समझ गए। अब मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआला आप के सीने को ठीक बात क़ुबूल करने के लिए खोल दे।'

'मैं तुम्हारे सामने इक़रार करता हूं कि मुझे ये सारी बातें क़ुबूल हैं। मैंने अल्लाह को एक मान लिया, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का आख़िरी रसूल

(सल्ल०) तस्लीम कर लिया, लेकिन तुम जानो अपने देश में मैं अकेला ही मुसलमान हूं। डर है कि लोग मेरा मुसलमान होना सुनें तो बग़ावत कर बैठें और मुझे क़त्ल कर दें।'

इस बात का जवाब मैंने कुछ न दिया तो कुछ देर सोचने के बाद बादशाह ने ख़ुद ही कहा, 'अच्छा, ठहरो, मैं बड़े वज़ीर को बुलाता हूं।' यह कहकर उसने ताली बजाई। ताली की आवाज़ के साथ ही दरबान हाज़िर हुआ। बड़े वज़ीर को बुलाने का हुक्म देकर बादशाह फिर सोच में पड़ गया। और मैं दिल ही दिल में कहने लगा, देखिए अब अल्लाह क्या करता है। फिर आप ही आप मैंने कहा, 'अल्लाह जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है।'

बड़ा वज़ीर थोड़ी देर में आ गया। उसने बादशाह को सलाम किया। उसने मुझे कुर्सी पर बैठे देखा तो पहले उसे हैरत हुई। फिर वह मुस्कुराया और बादशाह के इशारे पर एक कुर्सी पर बैठ गया। बादशाह ने वज़ीर से कहा, 'आप इस मुसलमान को कुर्सी पर बैठा देखकर मुस्कुराए क्यों ?'

'हुज़ूर ! मुसलमान क़ैदी को कुर्सी पर बैठा देखकर मुझे यह ख़्याल आया कि आपने इस पर मेहरबानी की और वह बादशाह बहुत नेक होता है जो दूसरों पर मेहरबान होता है।'

'और ख़ुदा तो सबसे बड़ा मेहरबान है, ऐ समझदार वज़ीर !' बादशाह ने वज़ीर से कहा।

'बेशक ख़ुदा सबसे ज़्यादा मेहरबान है।' वज़ीर ने इक़रार किया।

'तो फिर हमें चाहिए कि हम उस मेहरबान ख़ुदा का एहसान मानें।'

'हुज़ूर ! बेशक हमें उसका शुक्र अदा करना चाहिए।'

वज़ीर ने तस्लीम कर लिया तो बादशाह ने उसके सामने इस्लाम पेश किया। पूरी बात सामने आई तो वज़ीर ख़ुशी से फूला न समाया, उसने कहा—

मैं तो पहले से मुसलमान हूं

'हुज़ूर ! मैं तो बारह साल हुए मुसलमान हो चुका हूं' वज़ीर ने कहा।

बादशाह को भी और मुझे भी बड़ा ताज्जुब हुआ। बादशाह ने वज़ीर से कहा, 'जब आप मुसलमान हो चुके थे, तो आपने बताया क्यों नहीं ?'

'हुज़ूर बताता कैसे, डरता था कि कहीं क़त्ल न कर दिया जाऊं। हमारी पूरी

क़ौम मुसलमानों की दुश्मन हो रही है ।'

'अच्छा तो ज़रा बताइए कि आप किस तरह मुसलमान हुए ?'

'सुनिए हुज़ूर ! बड़ी नसीहत भरी बात है । पन्द्रह साल हुए कि समरक़न्द और बुख़ारा के कुछ मुसलमान क़ैद करके राजधानी लाए गए । उस वक़्त मैं जेल का दारोग़ा था । क़ैदी मेरे हवाले किए गए । मुझको हुक्म दिया गया कि जिस तरह बने इन मुसलमानों को तातारी क़ौम का ताबेदार बनाया जाए । जब तक ताबेदारी क़ुबूल न करें उस वक़्त तक इन्हें दुख पर दुख दिए जाएं । ख़ूब सताया जाए । इन्हें भूखा रखा जाए । कोड़ों से पीटा जाए । भारी ज़ंजीरों में जकड़ कर अंधेरी कोठरियों में बन्द कर दिया जाए । जब किसी तरह न मानें तो क़त्ल कर दिया जाए । इनकी लाशों को जंगल में फिंकवा दिया जाए । हुज़ूर ! मैं आपसे क्या बताऊं, मैंने उन मुसलमानों को जी भर कर सताया। मैं भी उनसे बहुत जलता था । ये मुसलमान थे तो क़ैदी, मगर हम लोगों को ख़ातिर में न लाते थे । मैंने देखा कि वे रातों को नमाज़ें पढ़ते । अपने ख़ुदा के आगे गिड़गिड़ाते, लेकिन दिन को जब मैं अपने सामने बुलाता कि हमारे बादशाह की ताबेदारी क़ुबूल करो तो वे जवाब देते, 'हम तो बस अल्लाह के ताबेदार हैं । हम तो मुसलमान हैं ।' मुसलमान ख़ुदा के अलावा किसी का ताबेदार नहीं होता, ख़ुदा के सिवा किसी और के आगे सिर नहीं झुकाता ।'

यह सुनकर मैं बहुत नाराज़ होता । सिपाहियों से कहता कि पीटो इनको । मेरे सिपाही उन पर कोड़े बरसाते । कोड़ों की मार से वे लहू-लुहान हो जाते तो मैं उनके ज़ख़्मों पर नमक छिड़कवाता ।

इधर मैं उन पर ये ज़ुल्म करता, उधर एक दिन एक हादसा हुआ । हुआ यह कि एक दिन मेरा छोटा बच्चा खेलते-खेलते कुंए पर पहुंच गया । उसका लड़कपन तो था ही । वह कुंए के अन्दर झांकने लगा और फिर उसी में जा गिरा । उस वक़्त मुसलमान क़ैदी खाना खा रहे थे । उन सबका दाहिना हाथ खाना खाते वक़्त खोल दिया जाता था । उन्होंने बच्चे को गिरते वक़्त देख लिया था । बस उसी तरह पांव में बेड़ियां पहने हुए और बायां हाथ बंधे दौड़ पड़े । मैं दफ़्तर में बैठा था । मैं दफ़्तर से दौड़ा। मेरी बीवी ने महल में ख़बर सुनी । वहां से वह बदहवास होकर भागी । हम सब कुंए पर पहुंचे । क़ैदी कहीं से रस्सी भी उठा लाए थे । लेकिन एक हाथ से वे कर ही क्या सकते थे । बेचारे अपनी जैसी कोशिश कर रहे थे । वे मुसलमान क़ैदी अपने ख़ुदा से दुआ कर रहे थे । 'ऐ अल्लाह ! इस मासूम बच्चे पर रहम फ़रमा ।' उस वक़्त तो हम सब अपने होश में न थे लेकिन जब बच्चा और कुंए में घुसने वाला मुसलमान क़ैदी बाहर आया तो मैंने देखा

कि बच्चा उसकी गोद में था। उसने बच्चे को गोद से उतारा। मेरे नौकरों ने बच्चे को लिया और महल में ले आए। मैं हैरान रह गया 'उफ़ ! ये मुसलमान क़ैदी, जिनको मैं कैसा-कैसा सताता हूं, उन्होंने मुझ पर यह एहसान किया।' यह ख़्याल मेरे दिल में आया। मैं आगे बढ़ा। मैंने उनसे कहा, 'मैं तुम्हारा दुश्मन हूं, फिर तुम पर तरह-तरह के ज़ुल्म करता हूं। तुम को तो ख़ुश होना चाहिए था, जब मेरा बच्चा कुंए में गिरा था।'

'न, न दारोग़ा साहब ! हमारी लड़ाई तो आप से है। यह बच्चा तो मासूम है। हमारे रसूल (सल्ल०) ने बच्चों, बूढ़ों और औरतों को क़त्ल करने से मना फ़रमाया है। बच्चों के बारे में यह फ़रमाया कि वे मासूम होते हैं। इसलिए हम यह कैसे देख सकते थे कि एक बच्चा, चाहे वह दुश्मन का ही सही कुंए में डूब कर मर जाए।'

हुज़ूर ! मेरे दिल पर इस बात का बड़ा असर हुआ। मैंने मुसलमान क़ैदियों से उनके रसूल (सल्ल०) के बारे में दो-चार बातें और पूछीं। उन्होंने जब प्यारे रसूल (सल्ल०) के प्यारे हालात बताए तो मेरे दिल ने कहा कि कितनी अच्छी तालीम है, इनके रसूल (सल्ल०) की।

इसके बाद मैंने मुसलमान क़ैदियों को सताना बन्द कर दिया। मैं कभी-कभी उनके पास भी जाने लगा, उनसे बातें करने लगा। बातों-बातों में उन्होंने इस्लाम की पूरी तालीम मुझे समझा दी, जिस तरह इस नौजवान ने आपको समझाया, बिल्कुल उसी तरह इस्लामी अक़ीदे मेरी समझ में आ गए और मैंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। लेकिन डर के मारे किसी पर ज़ाहिर न किया कि मैं मुसलमान हूं। मैंने बादशाह को झूठ-मूठ लिख भेजा कि इन मुसलमान क़ैदियों ने ताबेदारी क़ुबूल कर ली है। वहां से हुक्म आया, 'तो फिर उन्हें छोड़ दो।' मैंने उन सबको छोड़ दिया। जब वे घर जाने लगे तो मैंने उन्हें बहुत सा सामान दिया। इसके बाद मैं तरक़्क़ी करते-करते हुज़ूर के पिता के ज़माने में वज़ीर हो गया लेकिन किसी को नहीं मालूम कि मैं मुसलमान हूं। आज मुझे बड़ी ख़ुशी है कि हुज़ूर ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है। ख़ुदा आपको लम्बी उम्र दे और आप को इस्लाम फैलाने की तौफ़ीक़ दे।'

यह सुनकर तुग़लक़ तैमूर बहुत ख़ुश हुआ। मैं भी बहुत ख़ुश हुआ। इसके बाद तुग़लक़ तैमूर शाह ने अपने दरबार के एक बड़े अफ़सर को बुलाया। वह आया तो उसे समझाने लगा। इस्लामी अक़ीदे बताने लगा। जैसे-जैसे तुग़लक़ तैमूर शाह इस्लामी बातें बताता जाता, अफ़सर का चेहरा ख़ुशी के मारे चमकता जाता। आख़िर में जब तुग़लक़ तैमूर शाह ने बताया कि वज़ीर मुसलमान हो चुका है और मैं भी मुसलमान हो चुका हूं तो अफ़सर की ज़बान से निकला

'अल्हम्दुलिल्लाह ।'

'अरे भई, यह 'अल्हम्दुलिल्लाह' तुमने क्यों पढ़ी, तुम 'अल्हम्दुलिल्लाह' को क्या जानो ? बादशाह ने हैरान होकर पूछा । उसने बताया हुज़ूर ! मैं तो दस साल पहले से मुसलमान हूं । मैंने भी अपनी क़ौम के डर से अपना मुसलमान होना छिपाए रखा, जिस तरह वज़ीर साहब ने छिपाए रखा ।

और तुम किस तरह मुसलमान हुए ?

'तुम किस तरह मुसलमान हुए ?, अफ़सर से पूछा गया । वह अपने मुसलमान होने का क़िस्सा इस तरह सुनाने लगा—

'हुज़ूर ! दस साल पहले मैं एक इलाक़े का हाकिम था । उसी ज़माने में एक बार कराक़रम के कुछ मुसलमान क़ैदी बनाकर मेरे यहां भेजे गए । उनमें लगभग सब आलिम थे । ये आलिम मुसलमान दिन में वे सारे सख़्त काम करते, जो मैं उनसे लेता था और रातों को वे इबादत करते थे । मैंने उनको उस क़ैदख़ाने में बन्द रखा था, जिसमें कई बदमाश क़ैदी थे । कुछ ही दिनों बाद मैंने देखा कि उन बदमाशों की आदतें बदलने लगी हैं । वे बदमाश बड़े बदज़बान थे । दिन-रात गालियां बकते थे । लेकिन अब उन्होंने गालियां बकनी छोड़ दीं थीं । मैं दिन में जो काम उनसे लेता था, वे पूरा करके नहीं देते थे, लेकिन अब वे सब बड़ी मेहनत से काम करने लगे थे । इसी तरह उनमें अच्छी आदतें पैदा हो रही थीं ।

अब सुनिए ! एक दिन मैं क़ैदख़ाने के मुआयने के लिए गया तो क़राक़रम के ये मुसलमान क़ैदी जो हमारे दुश्मन थे और हम उनके दुश्मन थे । उनमें से एक साहब मुझसे कहने लगे, 'अब इन बेचारों को छोड़ दीजिए ।' यह कहते हुए उन बदमाशों की तरफ़ इशारा किया ।

'वाह वा' आपके कहने से क्यों छोड़ दूं। क्या आप मेरे हाकिम हैं?' मेरे इस तीखे जवाब से वही साहब कहने लगे कि हाकिम तो हमारा तुम्हारा अल्लाह है। मैं तो इसलिए कहता हूं कि अब ये लोग बुरी आदतें छोड़ चुके हैं और अब अच्छी ज़िन्दगी बसर करेंगे।'

'आपको यह कैसे मालूम हुआ ?'

हमें यह इस तरह मालूम हुआ कि अब ये रातों को अल्लाह तआला के आगे तौबा करते हैं ।'

यह सुनकर मैंने एक बदमाश को बुलाया । वह मेरे सामने आया । उसने बड़े

अदब से सलाम किया और बोला 'क्या हुक्म है ।'

'क्या तुम वादा करते हो कि अगर तुमको छोड़ दिया जाए तो तुम अच्छी जिंदगी बसर करोगे ?'

'मैं कोशिश करूंगा, तौफ़ीक़ और ताक़त देने वाला अल्लाह है ।'

मालूम नहीं, क्यों मुझे उस पर तरस आ गया । मैंने उसे छोड़ देने का हुक्म दे दिया । वह क़ैदख़ाने से छोड़ दिया गया, लेकिन मैंने दो–तीन जासूस लगा दिए कि हर महीने उसके बारे में रिपोर्ट दें । जासूसों ने उसके बारे में बड़ी अच्छी रिपोर्ट दी और बताया कि अब उस आदमी ने फलों का कारोबार कर लिया है और बड़ी ईमानदारी के साथ सौदा बेचता है ।

यह रिपोर्ट सुनकर मैंने दूसरे बदमाशों से भी अहद लिया और उन सबको भी छोड़ दिया । वे सब अपने–अपने घर गए । उनके बारे में जासूसों ने रिपोर्ट दी कि उनको छोड़ देने से उनके इलाक़े के बदमाशों पर बड़ा अच्छा असर पड़ा है । अब उस इलाक़े में चोरी, डकैती, जुआ और ऐसे ही दूसरे बुरे काम कम होते जा रहे हैं । यह सुनकर मेरे दिल में खोज पैदा हुई कि आख़िर ये बदमाश नेक और शरीफ़ बन कैसे गए ? मैंने बार–बार सोचा । मेरी समझ में आया कि हो न हो इन मुसलमान मौलवियों ने कोई अच्छी बात उन्हें बता दी है । एक दिन मैंने मुसलमान क़ैदियों में से मौलवी फ़रीद से पूछा कि तुमने उन्हें क्या नसीहत की ? मौलवी फ़रीद ने बताया कि हमने उन्हें समझाया, 'देखो ! तुम सब जवान हो, ताक़तवर हो, अगर चाहो तो जिस ख़ुदा ने तुमको यह ताक़त दी है, उस ख़ुदा की ख़ुशी के काम करके अच्छी कमाई कर सकते हो । फिर जब मरने के बाद उस ख़ुदा के सामने जाओगे तो तुम्हारा मालिक तुम से ख़ुश हो जाएगा और जन्नत में जगह देगा, लेकिन अगर बुरे काम करोगे तो यहां भी क़ैदख़ाने में मरोगे, फिर जब अपने ख़ुदा के सामने जाओगे तो वह तुम से नाराज़ होगा । वह नाराज़ होगा तो फिर तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है । दो दिन की ज़िन्दगी है, अभी मौक़ा है, तौबा कर लो । अल्लाह का शुक्र है । हमारी नसीहत से वे सम्भल गए और उन सबने तौबा कर ली ।'

शेख़ फ़रीद की ये बातें सुनीं । मैं ये बातें भूल न सका, उन पर विचार करता रहा । दिल में कहा कि इंसान के नेक बनने के लिए शेख़ फ़रीद की नसीहत बहुत अच्छी है ।

अब सुनिए कि कुछ ही दिन और गुज़रे थे कि बादशाह ने हुक्म भेजा कि क़राक़रम के क़ैदियों में एक मुसलमान आलिम है उसका नाम शेख़ फ़रीद है । उसे क़त्ल

कर दो और उसकी लाश जंगल में फेंकवा दो। यह हुक्म शेख़ फ़रीद को मैंने सुनाया और कहा कि 'तुम्हारे दिल में आख़िरी जो ख़्वाहिश हो, बताओ ताकि मौत से पहले तुम्हारी ख़्वाहिश पूरी कर दी जाए। मैं परसों तुम्हें क़त्ल कर दूंगा।'

क़त्ल का हुक्म सुनकर शेख़ फ़रीद ने कुछ सोचा 'हां एक ख़्वाहिश, नहीं—नहीं ख़्वाहिश नहीं, एक ज़िम्मेदारी मेरे सिर पर है, अगर आप चौबीस घंटे के लिए मुझे आज़ाद कर दें तो मैं उस ज़िम्मेदारी को पूरा कर लूं।'

'क्या है वह ज़िम्मेदारी ? मैंने शेख़ से पूछा। बताया कि एक बच्चे के बाप ने दो सौ अशरफ़ियां मुझे दी थीं कि जब मेरा बच्चा बड़ा हो जाए तो उसे दे देना। ये अशरफ़ियां मैंने एक पेड़ के नीचे ज़मीन में गाड़ दीं। मैं चाहता हूं कि यह अमानत उसे दे दूं। मैं आपसे वादा करता हूं कि मैं परसों सवेरे ख़ुद हाज़िर हो जाऊंगा।'

शेख़ से यह सुनकर मैं सोचने लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि इसी बहाने शेख़ भागना चाहता हो। फिर मैंने दिल ही दिल में कहा 'देखना चाहिए कि शेख़ कितने पानी में है। आख़िर भागकर जाएगा कहां।' मैंने चौबीस घंटे के लिए उसे छोड़ दिया और एक दर्जन जासूस पीछे लगा दिए।

'हुज़ूर वाला ! मैं सच कहता हूं कि शेख़ अपने वादे के मुताबिक़ सुबह को आ गया। मेरे दिल में इस बात का बड़ा असर हुआ। 'मैंने पूछा, 'शेख़ तुम छूट चुके थे, आज़ाद हो चुके थे, कहीं भाग जाते। शेख़ ने जवाब दिया, 'मैं कैसे भाग जाता, आपसे वादा कर चुका था। हमारे रसूल (सल्ल०) ने वादे को निभाने की बड़ी ताकीद की है।'

यह जवाब सुनकर मैं सोचने लगा कि जिस रसूल (सल्ल०) के मानने वाले रसूल (सल्ल०) की तालीम से इतने अच्छे इंसान हो सकते हैं, उसकी तालीम ज़रूर ही सच्ची है। ऐसे अच्छे इंसानों को मार डालना अच्छा नहीं। यह सोचकर मैंने नबी (सल्ल०) के बारे में बहुत—सी बातें पूछीं। शेख़ फ़रीद ने बड़ी तफ़सील के साथ हुज़ूर (सल्ल०) के हालात बताए। आप (सल्ल०) की तालीम समझाई। इस्लामी अक़ीदे बताए। मेरे दिल में सारी बातें बैठ गईं। मैं उसी वक़्त मुसलमान हो गया। मैंने शेख़ फ़रीद को छोड़ दिया और बादशाह को लिख दिया कि हुक्म को पूरा कर दिया गया। कुछ दिनों बाद दूसरे आलिमों के लिए भी यही हुक्म आया, मैंने उन्हें भी छोड़ दिया और फिर वही लिख भेजा कि सबको जंगल में ले जाकर क़त्ल कर दिया गया और उनकी लाशें चील—कौओं को खिला दी गईं।

हुज़ूर इसके बाद मैं छिपे तौर से मुसलमान बना रहा । मुझे डर था कि अगर मेरा मुसलमान होना लोगों को मालूम हो गया तो ज़रूर क़त्ल कर दिया जाऊंगा । आज मैं अल्लाह तआला का लाख–लाख शुक्र अदा करता हूं कि उसने हमारे बादशाह को मुसलमान कर दिया । अल्लाह आपके ईमान में दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करे ।

उस अफ़सर के मुसलमान होने की बात सुनकर बादशाह और बड़ा वज़ीर बहुत ख़ुश हुआ । मैं भी बहुत ख़ुश हुआ । इसके बाद बादशाह अपने महल में ही अपने एक–एक दरबारी को बुलाता गया, हर एक को समझाता गया, ख़ुदा की क़ुदरत जो दरबारी आया, वह मुसलमान हो गया । अब तो बादशाह की हिम्मत बढ़ गई । दूसरे दिन उसने आम दरबार किया । राजधानी के असरदार लोगों को बुलाया । सब को इज़्ज़त के साथ बैठाया । इस्लामी अक़ीदे सबके सामने रखे । उसी वक़्त दो लाख तातारी मुसलमान हो गए ।

अब बादशाह ने मेरे साथियों को क़ैदख़ाने से बुलाया । उन्हें इज़्ज़त के साथ दरबार में जगह दी । उनको बहुत–सा इनाम दिया । इसके बाद उन्हें विदा कर दिया । मेरे साथी विदा होकर अपने घर को चल दिए । बादशाह ने मुझे रोक लिया और कहा, 'उस वक़्त तक आप यहां ठहरेंगे, जब तक इस्लाम की तालीम पूरी की पूरी हमारी क़ौम को न दे दें ।'

अमीर जिरास

राजधानी के लोग मुसलमान हो गए तो बादशाह ने चाहा कि इस देश के सारे लोग मुसलमान हो जाएं । उसने बड़े वज़ीर से सलाह ली । अपने दरबार के दूसरे लोगों से भी राय ली । अच्छी तरह सोचने के बाद यह बात समझ में आई कि देश में जो छोटे–बड़े हाकिम हैं अगर वे मुसलमान हो जाएं तो सारे लोग मुसलमान हो जाएंगे । होना यह चाहिए कि तमाम छोटे–बड़े हाकिमों को राजधानी में बुलाया जाए । उन्हें समझाया जाए । उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनको भी हिदायत दे ।

यही राय बादशाह की भी थी । उसने अपने देश के सारे हाकिमों, नवाबों और गवर्नरों को बुलाया । उन्हें समझाया । अल्लाह की मेहरबानी से सारे हाकिम, नवाब और गवर्नर मुसलमान हो गए लेकिन अमीर जिरास अकड़ गया । उसने मुसलमान होने के लिए एक शर्त लगाई । उसने कहा कि मेरे इलाक़े में एक पहलवान है 'सा तुग़नी बक़ा' उसका नाम है । (फिर उसने मेरी तरफ़ इशारा करके कहा) अगर

ये साहब उससे कुश्ती लड़ें और जीत जाएं तो मैं मुसलमान हो जाऊंगा ।

यह शर्त सुनकर बादशाह बोला, 'इस्लाम तो इंसान को इंसान बनाने के लिए आया है, पहलवानी के दाव-पेंच सिखाने नहीं आया । मुसलमान होने और न होने से तुम्हारी इस शर्त का क्या जोड़ ? सोचो तो, अगर 'सा तुग़नी बक़ा' ने अपने से कमज़ोर मुसलमान को पछाड़ दिया तो क्या इस्लाम के सच्चे अक़ीदे झूठे समझ लिए जाएंगे । कमज़ोर मुसलमान के हार जाने से क्या तुम एक ख़ुदा का इनकार कर दोगे ? कुश्ती के ज़रिए किसी मज़हब को झूठा या सच्चा समझ लेना ग़लत है ।

बादशाह ने इस तरह अमीर जिरास को बहुत समझाया । दरबारियों ने भी कहा कि यह शर्त ग़लत है, लेकिन अमीर जिरास किसी तरह न माना । वह अपनी शर्त पर अड़ा रहा । उस वक़्त न जाने मुझे क्यों जोश आ गया । मैं खड़ा हो गया और कहा, 'मैं सा तग़ुनी बक़ा से कुश्ती लड़ने के लिए तैयार हूं ।'

सब मेरी तरफ़ देखने लगे । सबको बड़ा ताज्जुब हुआ । सबने मना किया और कहा पहलवान 'सा तुग़नी बक़ा' बड़ा उजड्ड है । वह इतना बड़ा पहलवान है कि आज तक कोई उससे जीत न सका । जो भी उससे कुश्ती लड़ा वह हारा । कई पहलवानों को तो उसने इस बुरी तरह पटख़ा कि वे मर गए । हम हरगिज़ आपको उससे लड़ने न देंगे ।

इस तरह सबने समझाया तो मैंने जवाब दिया, 'हार और जीत सब ख़ुदा के हाथ में है । दुनिया में अक्सर ऐसा हुआ है कि कमज़ोर लोगों को अल्लाह ने ताक़तवर लोगों पर फ़तह दी और कम लोगों ने ज़्यादा लोगों को हरा दिया । हो सकता है कि अल्लाह तआला मेरी मदद के लिए फ़रिश्ते भेज दे और मैं पहलवान को हरा दूं । अगर ऐसा हो तो अमीर जिरास भी मुसलमान हो जाएगा और क़ियामत के दिन ख़ुदा के अज़ाब से बच जाएगा । अमीर जिरास को ख़ुदा के अज़ाब और जहन्नम की आग से बचाने के लिए मैं उस वक़्त तक कोशिश करूंगा जब तक मेरी सांस चल रही है ।'

मेरा अटल फ़ैसला देखकर बादशाह ने कहा कि पहलवान 'सा तुग़नी बक़ा' को बुलाया जाए । अमीर जिरास ने पहलवान को बुला भेजा । पहलवान 'सा तुग़नी बक़ा' जिस वक़्त दरबार में आया तो लोग उसे देख कर दंग रह गए । वह बड़ा तगड़ा और दानव आदमी था, पूरा देव मालूम पड़ता था । मैंने दिल में ख़ुदा को याद किया पहलवान के सामने जाकर खड़ा हो गया ।

कुश्ती और ग़ैबी मदद

पहलवान ने ग़ुस्से में आकर मेरी कमर को पकड़ा और उठा कर चाहा कि पटख़ दे, ठीक उसी वक़्त मैंने नारा-ए-तक्बीर बुलन्द किया 'अल्लाहु अक्बर' और उसके पंजे से आज़ाद होने के लिए तड़पा तो ख़ुदा की क़ुदरत कि अचानक मेरा सिर पहलवान की नाक से टकराया। टकराने के साथ ही ख़ून का फ़व्वारा उसकी नाक से फूट पड़ा। उसने घबरा कर मुझको छोड़ दिया। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। मैंने उसकी यह हालत देखी तो मेरी बन आई। मैंने एक ठोकर मारी। वह बेहोश तो हो ही रहा था। मेरी ठोकर से वह चित्त हो गया। मैं उसके सीने पर चढ़ बैठा। तुग़लक़ तैमूर शाह यह देख कर उठा और उसने मुझे गले से लगा लिया, फिर अमीर जिरास से कहा, 'बोलो अब क्या कहते हो ?'

अमीर जिरास फटी-फटी नज़रों से यह सब देख रहा था। वह हैरान था कि एक कमज़ोर इंसान से यह देव कैसे हार गया। उसने कहा—

'मैं समझता हूं कि यह सब ख़ुदा की तरफ़ से हुआ। ख़ुदा ने ग़ैब से इस कमज़ोर मुसलमान की मदद की। मैं वादे के मुताबिक़ मुसलमान होता हूं।'

उसके मुसलमान होने से सबको बड़ी ख़ुशी हुई, फिर जब अमीर जिरास इलाक़े में गया तो यही वाक़िया सुनाया। उसने अपनी जनता से कहा कि सचमुच 'इस्लाम' सच्चा दीन है। उसकी जनता भी मुसलमान हो गई। इस तरह बादशाह के देश में कुछ दिनों के अन्दर इस्लाम फैल गया।

मैं वादे के मुताबिक़ तीन साल बादशाह के पास रहा। इसके बाद उससे विदा होकर दूसरे देश की तरफ़ रवाना हो गया।

मछली का शिकार

☆ मच्छ मार्क गांव
☆ मछली की तलाश
☆ हमला
☆ हमारे दो आदमी ?
☆ बारगोला मछली के पेट में
☆ घरेलू इलाज
☆ बारगोला की आपबीती

□

हमारे इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामें में ज़्यादातर ऐसी बातें लिखी हैं जिनको पढ़ कर ईमान मज़बूत होता है । एक क़िस्सा तो ऐसा लिखा है जो कि क़ुरआन के एक क़िस्से से मिलता–जुलता है । आप इस क़िस्से को पढ़िए । उम्मीद है कि आप के ईमान में भी मज़बूती आएगी । हमारा इब्ने बतूता लिखता है—

मच्छ मार्क गांव

एक बार घूमता फिरता मैं मच्छ मार्क गांव में पहुंचा । मच्छ मार्क गांव समुद्र के किनारे ही था । गांव के रहने वाले सारे के सारे मछली पकड़ने का पेशा करते थे । वे मछलियां पकड़ कर बेचते और अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते थे । इन मछेरों के पास बड़ी–बड़ी नावें थीं । उन नावों में दस–दस, बारह–बारह मछेरे बैठते । मछलियां पकड़ने के लिए जाल रखते । बड़े–बड़े बल्लम लेते और तीर कमान से लैस होकर नावें समुद्र में उतार देते । एक साथ कई–कई नावें जातीं । कोशिश करते कि पचास आदमी ज़रूर साथ हो जाया करें । मैं उस गांव में पहुंचा तो उन लोगों ने मेरी बड़ी आवभगत की । उन्होंने मुझको अपने यहां ठहरा लिया । वे मछेरे घर बना कर नहीं रहते, ख़ेमों और डेरों में रहते थे । तीन दिन रहने के बाद मैंने उनसे कहा—'हमारे प्यारे रसूल (सल्ल०) ने हमें सिखाया है कि हम सिर्फ़ तीन दिन मेहमान रहें । मुझे आप के यहां तीन दिन हो गए । अब या तो आप मुझे जाने की इजाज़त दें या फिर काम बताएं कि मैं ख़ुद कमाऊं और खाऊं ।'

मेरा ख़्याल था कि वे लोग मुझ से प्यारे नबी (सल्ल०) के बारे में पूछेंगे तो मैं उनको इस्लाम के बारे में पूरी बात बता दूंगा । लेकिन उन लोगों ने आप (सल्ल०) के बारे में कुछ न पूछा । हां मेरे बारे में सवाल करने लगे ।

'तुम बल्लम मारना जानते हो ? तुम तीर चलाना जानते हो ? तुम तैरना जानते हो ? पहले यह बताओ तो फिर हम तुम्हारे लिए काम निकालें ।'

'मैंने जवाब दिया, 'मैं अरबी हूं' अरब के रहने वाले तीर, तलवार और बल्लम चलाना ख़ूब जानते हैं । मैंने अपने बचपन में इन हथियारों को चलाना सीखा था । जब छोटा था तो समुद्र के किनारे मछलियों के शिकार को भी जाया करता था ।

अगर इस तरह का कोई काम हो तो मैं करने को तैयार हूं ।'

मुझ से यह सुनकर मछेरे बहुत ख़ुश हुए । बोले, 'तुम जवान आदमी हो, हमारे बड़े काम के हो, हम परसों मछलियों के शिकार के लिए जाने वाले हैं । तुमको भी ले चलेंगे । मछलियां पकड़ेंगे, तुम्हारा भी बराबर का हिस्सा लगाएंगे । ज़रूरी सामान हम ख़ुद देंगे ।

मछली की तलाश

मैंने उनकी बात मंज़ूर कर ली । तीसरे दिन पांच बड़ी–बड़ी नावें समुद्र में तैरने लगीं । नावों में हमने खाने–पीने का सामान भी रख लिया । मछलियों पर फेंकने के लिए छोटे–छोटे बल्लम भी रख लिए और पकड़ कर मारने वाले बल्लम भी । हमारे पास बड़े–बड़े जाल भी थे । कंधों पर कमान और पीठ पर तरकश भी । कुछ दूर चलने के बाद लोगों ने मुझ से कहा, ज़रा तुम चप्पू लो और दिखाओ कि नाव कैसे खेते हैं ?' मैंने बढ़ कर चप्पू लिया और नाव खेने लगा । हम अरब लोग नाव खेना ख़ूब जानते हैं । मैंने चप्पू लिया तो नाव तेज़ी से चलने लगी । वे सब मुस्कुराए आपस में कहने लगे 'जवान है तो काम का आदमी ।'

हम कई घंटे मछलियों की खोज में नावें इधर से उधर तैराते रहे । कई घन्टों के बाद एक तरफ़ तेज़–तेज़ लहरें उठती दिखाई दीं । हम समझ गए कि ज़रूर कोई बड़ी मछली है । फिर देखा कि मछली का एक हिस्सा पानी के ऊपर उभरा । मछेरे चिल्लाए 'मच्छ लाम्बिया' यानी मछली बहुत बड़ी है । यह कह कर मछली को घेरने की कोशिश करने लगे । चार नावें मछली के आस–पास घेरा डालने के लिए बढ़ीं । एक नाव अलग ठहरी रही । उस नाव के लोग इसलिए अलग रहे कि जिस तरफ़ मदद की ज़रूरत होगी, उधर नाव ले जाएंगे । मैं उन चार नावों में से एक पर था, जो मछली को घेरने चली थीं । हमने घंटा डेढ़ घंटा में मछली को घेर लिया । इत्तिफ़ाक़ से जिस नाव पर मैं था वह मछली के सामने थी, मछली ने भी समझ लिया था कि ख़तरा है । उसने सिर निकाल कर नाव की तरफ़ देखा ।

हमला

मैंने छोटा बल्लम खींच कर मारा । कच की आवाज़ हमने सुनी । समझ गए कि छोटा बल्लम उसके जिस्म में घुस गया । चोट खाकर मछली ने ग़ोता मारा, साथ ही आठ-दस छोटे-छोटे बल्लम और उस पर पड़े। हम यह नहीं कह सकते

कि कितने बल्लम उसके चुभे, लेकिन यह ज़रूर है कि मछली तड़पी । उसके तड़पने से हमने नावें दूर हटा लीं । समुद्र के पानी में हलचल मच गई । ऊंची–ऊंची लहरें उठने लगीं और नावें ज़ोर–ज़ोर से हिलने लगीं । नावें पीछे हटीं तो मछली ने निकल भागना चाहा । यह देखकर हमने नावों का घेरा छोटा करना शुरू कर दिया और फिर उसके पास पहुंच गए । हमको पास देखकर उसने फिर ग़ोता लगाया, लेकिन जल्द ही फिर उभरी । अब की बार चारों तरफ़ से बल्लमों की बौछार हुई । मछली के जिस्म में जगह–जगह बल्लम घुस गए । ज़्यादा ज़ख़्म खाकर मछली तड़पी और उसने अपनी दुम चला दी । एक नाव जो उसके क़रीब थी दुम लगने से उलट गई । उस नाव के सवार तैरते हुए भागे । मछली उन पर झपटी तो अब हमने तीरों से हमला किया और नावें उसके क़रीब लाने लगे । क़रीब पहुंच कर हमने देखा कि मछली सुस्त हो रही है । हम समझ गए कि अब वह बहुत ज़्यादा ज़ख़्मी हो चुकी है। हम उसके इतना क़रीब आ गए कि जाल फेंक सकें । अब पांचवी नाव भी मदद को आ गई थी । हमने चारों तरफ़ से जाल फेंका, मछली जाल में फंसी और फिर तड़पी । हमारी नावें अब बहुत ही डांवा–डोल हो रही थीं । फिर भी किसी ने हिम्मत नहीं हारी । पन्द्रह-बीस आदमी जाल खींचने लगे, बाक़ी ने बड़े बल्लम ताने । मछली तड़पती हुई हमारी तरफ़ ख़िंच रही थी । बल्लमों की दूरी पर आई तो हमने उसे बल्लमों से छेदना शुरू कर दिया । लगभग आधा घन्टा हम इसी तरह हमला करते रहे । आख़िर हमने उसे बेदम कर दिया । जाल नावों से बांधे और वापस चले ।

हमारे दो आदमी

जिन साथियों की नाव डूब गई थी । वे हम से दूर तैर रहे थे । अब वे हमारी तरफ़ और हमारी नावें उनकी तरफ़ तेज़ी से बढ़ीं । हमने देखा कि उस नाव के दस मछेरों में से आठ ही हैं । जब वे हमारी नावों पर आ गए और दम लिया तो हमने पूछा, 'हमारे दो आदमी कहां हैं ?' उन्होंने बताया, 'डगरमू तो मछली की मार न सह सका, वह डूब गया, लेकिन बारगोला के बारे में कुछ पता नहीं कि किधर तैरता चला गया । हमने उसे देखा ही नहीं ।'

यह सुनकर दूर–दूर हमने नज़रें डालीं । बारगोला हमें नज़र नहीं आया । अब सूरज डूब चुका था । हम समुद्र के किनारे की तरफ़ नावें खेने लगे । ज़्यादा अंधेरा नहीं हुआ था कि किनारे पहुंच गए । किनारे पहुंच कर नावों से उतरें मछली को भी खींचा । मछली बहुत बड़ी और भारी थी । उसे पानी से निकालने में भरपूर

ज़ोर लगाना पड़ा । किसी न किसी तरह उसे ज़मीन पर ले आए । हम थक कर चूर हो गए थे । सोचा कि रात भर आराम कर लें, सुबह को इसे साफ़ करेंगे । उसे नापा तो दस गज़ से एक हाथ कम थी ।

बारगोला मछली के पेट में

सुबह को सोकर उठे तो मछली को साफ़ करने के लिए सबसे पहले उसका पेट फाड़ा । पेट फाड़ा तो हम सब एक दूसरे का मुंह तकने लगे । हमने देखा कि मछली के पेट से बारगोला निकला । वह बिल्कुल सफ़ेद हो रहा था । बदन में ख़ून नाम को न था । वह मछली की चिकनाई और तेल में लिथड़ा पड़ा था । हमारा ख़्याल था कि वह मर चुका होगा, लेकिन जब चिकनाई साफ़ की तो उस का बदन ज़रा–ज़रा गर्म था और ज़रा–ज़रा सांस भी चलती मालूम हुई । यह देखकर कुछ उम्मीद बंधी । हम उसे होश में लाने की कोशिश करने लगे । हमने झट मछली की चर्बी गर्म की और उसके बदन पर मलना शुरू कर दी । साथ ही तेल उसके नथनों में टपकाया । हम दो घंटे तक यही करते रहे । जब सूरज कुछ ऊंचा हुआ तो हमारी ख़ुशी और बढ़ी । बारगोला की सांस कुछ तेज़ हुई । हमने मालिश करनी बन्द कर दी । उसे धूप में छोड़ दिया । दो आदमी उसके हाथों को सीने पर लाते और फिर वापस ले जाते । थोड़ी -थोड़ी देर के बाद करवट देते । इस तरह एक घंटा और मेहनत की तो बारगोला ने धीरे से 'ऊंह' की और कराहा । हम समझ गए कि अल्लाह ने मेहरबानी की, वह बच जाएगा ।

हमने उसे धूप में छोड़ दिया । उसके आस–पास और ऊपर कपड़ा तान दिया । यह इन्तिज़ाम करके चार आदमी उसकी देख भाल के लिए छोड़ दिए । बाक़ी मछली को काटने और हिस्सा लगाने में लग गए । पचास आदमियों ने ज़ुहर के वक़्त तक मेहनत की तो मछली के हिस्से हो सके । मेरा हिस्सा भी बराबर लगाया गया । मैंने अपना हिस्सा उस आदमी को दे दिया जिस के घर में मुझे ठहराया गया था । वह बहुत ख़ुश हुआ । हम अपने–अपने हिस्से लेकर गांव की तरफ़ चले । बारगोला को एक तख़्ते पर लिटाया । आठ आदमियों से कहा कि तुम चार–चार आदमी उसे बारी–बारी से उठा कर लाओ । हम सामान गांव में पहुंचा कर तुम्हारी मदद को आते हैं ।

घरेलू इलाज

यह कह कर हम आगे बढ़ गए । इसके बाद कुछ लोग बारगोला को लेने गए । बारगोला गांव में आया तो मैंने देखा कि गांव की सारी औरतों ने उसे घेरे में ले लिया । सारी औरतों के हाथों में चिराग़ थे । चिरागों में मछली का तेल जल रहा था । उन औरतों ने बारगोला के चारों तरफ़ गोलाई से फिरना शुरू कर दिया । जब वे उसके चारों तरफ़ फिर रही थीं तो बिल्कुल ख़ामोश थीं । उनकी नज़रें बारगोला की तरफ़ थीं और वे बार–बार चिराग़ की लौ इस तरह उसकी तरफ़ कर रहीं थीं, जैसे अपने यहां हम किसी को धूनी देते वक़्त करते हैं । औरतों के इस अमल से रात के पिछले पहर बारगोला ने आंखें खोल दीं । उसने आंखें खोली ही थीं कि औरतों ने पुकारा, 'अखूशाल मारता, अखूशाल मारता' । यह सुन कर गांव के लोग दौड़ पड़े । मैंने अपने साथी से पूछा, 'अखूशाल मारता के क्या मायने हैं ?' उस ने बताया, 'हमारा भाई मौत के मुंह से लौट आया ।' सब लोगों के साथ मैंने भी जाकर बारगोला को देखा । अब वह बिल्कुल होश में था । उस के शरीर में ख़ून की लाली भी देखी और वह अब गर्म भी था । हम यह देख ही रहे थे कि बारगोला की बीवी मछली का तेल लाई। यह तेल किसी हद तक गाढ़ा था । मुझे बताया गया कि उस तेल में जंगल की एक बूटी पीस कर मिलाई गई है । यह तेल पत्तों के ज़रिए बारगोला को पिलाया जाने लगा । एक पत्ते को मोड़ कर उसमें ज़रा–सा तेल लेते, तेल बारगोला को पिला देते, पत्ता अलग रख देते । दूसरा पत्ता लेते फिर तीसरा । इसी तरह चालीस पत्ते काम में लाए गए । इसके बाद ये सब पत्ते मछली के तेल में जलाए गए और उन्हें पीस कर मरहम बनाया गया । अब बारगोला को उसके घर पहुंचाया गया । मैं अपने साथी के घर ठहर गया । मैं इस इन्तिज़ार में ठहरा रहा कि बारगोला बातें करने लगे तो उससे उसकी आपबीती सुनूं ।

बारगोला की आपबीती

दो महीने में बारगोला चलने फिरने के लायक़ हो सका । जब वह बात करने लगा तो उससे पूछा गया कि तुम मछली के पेट में किस तरह जा पहुंचे । उसने बताया कि 'नाव के उलट जाने से मैं समुद्र में गिरा तो मुझे एक तेज़ सरसराहट-सी मालूम हुई । फिर मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अंधेरे में हूं और बिल्कुल बेबस, जैसे कोई पकड़े बिना मुझे खींच रहा हो । मैं नरम, मुलायम और गुदगुदे रास्ते से जा रहा था । उस रास्ते में बड़ी फिसलन थी । इस तरह मैं ऐसी जगह पहुंचा, जहां

मेरे चारों तरफ़ गोलाई से चिकनी–चिकनी और मुलायम दीवारें थीं । मैं समझ गया कि मैं मछली के पेट में हूं । मैं अभी होश में था और सांस ले रहा था । लेकिन अब बड़ी घुटन लगी । मैं बेदम होने लगा । मैं वहां कुछ नहीं कर सकता था । इतने में मेरे आस-पास की चिकनी और नरम दीवारों ने धीरे–धीरे मुझे दबाना शुरू कर दिया । मैं बेहोश होने लगा । फिर मुझे कुछ नहीं मालूम कि क्या हुआ । होश आया तो तख़्त पर लेटा था । आगे का हाल तुम सब जानते ही हो ।'

बारगोला ने अपनी यह आपबीती सुनाई तो गांव वालों ने उसे बड़ी दिलचस्पी से सुना और ख़ुश भी हुए । मुझे हज़रत यूनुस (अलै०) का क़िस्सा याद आने लगा, जो क़ुरआन में है । उन्हें भी एक मछली निगल गई थी और वे भी मछली के पेट से ज़िन्दा निकल आए थे । मैं क़ुरआन की वे आयतें पढ़ने लगा । फिर मैंने गांव के लोगों को हज़रत यूनुस (अलै०) का क़िस्सा सुनाया ।

'अच्छा ऐसा वाक़िया एक बार हो चुका है ।' लोगों ने कहा फिर बोले, 'सच है सच है ।'

इसके बाद मैं उस गांव में कुछ दिन और रहा फिर मैं उकता गया । वहां की आबो–हवा मेरे लिए अच्छी नहीं थी । मैं वहां से चल दिया ।

कुत्ते की वफ़ादारी

□

कुत्ते की वफ़ादारी के बहुत-से क़िस्से हमने किताबों में पढ़े हैं, लेकिन कुत्ते की वफ़ादारी का एक क़िस्सा हमारे इब्ने बतूता ने लिख कर हैरतनाक नुक्ता निकाला है। सोचने का यह अन्दाज़ हमें कहीं नज़र नहीं आता। क़िस्सा लिखने के बाद हमारे इब्ने बतूता ने सबके सोचने के लिए जो बात पेश की है, उससे उसके ज़ेहन की पाकीज़गी का पता चलता है। वह लिखता है—

हदीस का असर

'एक बार रास्ते में मुझ को प्यास लगी। मेरे पास पानी ख़त्म हो चुका था। मैंने इधर–उधर देखा। दूर एक कुंआ दिखाई दिया। मैं उस कुंए के पास गया। मेरे पास रस्सी नहीं थी। मैं कुंए में उतर गया। मैंने पानी पिया और अपना मशकेज़ा भी भर लिया। कुंए से बाहर आया तो एक कुत्ते को देखा, वह बहुत प्यासा था। बेचारा अपनी प्यास बुझाने के लिए कीचड़ चाट रहा था। मुझे उस पर बड़ा तरस आया। दिल में सोचा इस कुत्ते को प्यास से इतनी ही तकलीफ़ हो रही होगी, जितनी कुछ देर पहले मुझे थी। बल्कि उससे भी ज़्यादा। मुझे उस वक़्त नबी (सल्ल०) की वह हदीस याद आ गई, जिसमें ऐसे ही एक प्यासे कुत्ते का ज़िक्र है। प्यासे कुत्ते का ज़िक्र करते हुए आप (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि 'जानवरों पर रहम करने से भी सवाब मिलता है।' यह हदीस याद आनी थी कि मैंने अपने मशकेज़े का पानी कुत्ते को पिला दिया। कुत्ता पानी पीकर मेरे आगे इस तरह लोटने लगा, जैसे वह मेरा कोई पालतू कुत्ता हो। वह देर तक मेरे आगे लेटता और पूंछ हिलाता रहा। मुझे देर हो रही थी। मैंने कुंए से अपना मशकेज़ा फिर भर लिया और अपनी राह चल दिया। मैं दिन ही दिन किसी बस्ती में पहुंच जाना चाहता था। मुझे डर था कि रास्ते में शाम हो गई तो कहीं ऐसा न हो कि जंगली जानवरों से सामना हो जाए। मैं बहुत तेज़ चल रहा था। मैं बहुत तेज़ चला फिर भी रास्ते में मग़रिब की नमाज़ का वक़्त हो गया। मैंने एक जगह नमाज़ पढ़ी। सलाम फेर कर देखा तो वही कुत्ता थोड़ी दूर पर बैठा था। मैं दिल ही दिल में मुस्कुराया। समझ गया कि कुत्ता पीछे–पीछे यहां तक आ गया।

कुत्ता और भेड़िया

अभी ज़्यादा अंधेरा नहीं हुआ था । बस्ती अभी दो कोस पर थी । मैंने सोचा कि कोशिश करूं तो इशा के वक़्त तक पहुंच सकता हूं । यह सोच कर उठा और आगे बढ़ा । अभी थोड़ी ही दूर गया था कि अचानक एक तरफ़ से एक भेड़िया आ गया । उसने मुझे देखा और रास्ता रोक कर खड़ा हो गया । उसे देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए । मैं एक दम रुक गया । भेड़िए से बचने का रास्ता सोचने लगा । मैंने अपना सामान ज़मीन पर रख दिया और डंडा तान कर खड़ा हो गया । दिल में तय कर लिया कि अगर भेड़िये ने हमला किया तो मैं भी भरपूर वार करूंगा । मेरी नज़रें भेड़िए की नज़रों से लड़ी हुई थीं । अचानक मेरा साथी कुत्ता भेड़िए के पीछे से आकर उसकी कमर पर कूदा और उसकी दुम चबा डाली । भेड़िया बिलबिला गया । ग़ुर्रा कर मुड़ा और कुत्ते पर झपट पड़ा । मैंने अपने दोस्त को भेड़िए के पंजे में देखा, तो मुझ से न रहा गया । मैं डंडा ताने हुए था ही, भेड़िए के पीछे लपका । पास पहुंच कर पूरी ताक़त से डंडा उसी जगह मारा जिस जगह कुत्ते ने काटा था । भेड़िया चोट पर चोट खा कर लौट पड़ा और चाहा कि मुझे दबोच ले कि कुत्ता फिर बिजली की तरह तड़पा और भेड़िए की कमर पर उसी जगह मुंह मारा, जिस जगह पहले दांत जमा दिए थे । अब भेड़िए का हाल यह था कि जब वह कुत्ते की तरफ़ मुड़ता तो मैं ज़ोर से डंडा दमक देता और जब वह मेरी तरफ़ मुंह करता तो कुत्ता उसकी दुम चबा डालता । इस तरह मार खाकर भेड़िया बौखला गया । वह ज़ख़्मी भी बहुत हो चुका था । उसने हार मान ली और एक तरफ़ भाग गया । मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया । कुत्ता मेरे पास आ खड़ा हुआ । भेड़िएं से मेरी यह लड़ाई आधा घंटा होती रही । अब अंधेरा ज़्यादा हो गया था । अंधेरे की वजह से मैंने आगे बढ़ने का इरादा छोड़ दिया । पास ही एक बड़ा-सा पेड़ था । उसी पर जाकर बसेरा किया । रूखा–सूखा जो खाना मेरे पास था, पेड़ पर बैठे–बैठे खाया । पानी पिया । मेरे पास सूखे गोश्त के टुकड़े थे । मैंने दो-तीन टुकड़े कुत्ते के आगे डाल दिए। वह उन्हें खाने लगा। मैंने रात के वक़्त उसी पेड़ में जगह बना ली और आराम से लेट गया । कुत्ता पेड़ के नीचे अगले पांव फ़ैला कर पड़ा रहा ।

जंगल की अंधेरी रात में

अभी आधी रात गुज़री थी कि मैंने कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनी । मेरी पहली नींद हो चुकी थी । मैं जाग उठा । पेड़ के नीचे देखने लगा । मैंने देखा कुत्ता दौड़ कर एक तरफ़ गया और झट लौट आया । वापस आकर उसने मेरी तरफ़ मुंह उठाया । फिर अपने पंजों से पेड़ के तने को इस तरह पकड़ा जैसे वह चढ़ना चाहता हो । वह न चढ़ सका तो जड़ में मुंह डाल कर इस तरह कूं–कूं करने लगा जैसे वह कह रहा हो कि जल्दी आइए और मेरे साथ चल कर देखिए, क्या है ?

मैं पहले तो कुछ न समझ सका, लेकिन जब बार–बार कुत्ता गया और आया तो मैंने उस तरफ़ देखा, जिस तरफ़ कुत्ता जाता था । कुछ दूर पर रोशनी दिखाई दी । रोशनी ऐसी थी जैसे किसी ने घास–फूस जलाया हो । रोशनी के अलावा मुझे कुछ नज़र न आया । मेरे दिल में धुकड़–पुकड़ होने लगी । मैंने फिर नज़र जमा कर देखा तो जहां तक रोशनी फैली हुई थी, वह जगह मरघट-सी मालूम हुई । जली हुई राख और हड्डियों के ढेर कई जगह देखे । मेरे दिल ने कहा, 'शायद लोग मुर्दा जलाने आए हों ।' मगर मुझे न कहीं मुर्दा नज़र आया न लोग । या अल्लाह ! ऐसी भांय–भांय करती हुई इस अंधेरी और भयानक रात में मरघट में रोशनी क्यों है ? मैं न जाने क्या सोचने लगा । कुत्ता अब भी आ-जा रहा था । अजीब बात यह थी कि अब उसने भौंकना बन्द कर दिया था । मैं फिर मरघट को देखने लगा । अब की बार मैंने देखा कि एक तरफ़ कोई चीज़ हिली । काली–काली एक गठरी सी थी । उसे हिलता देखकर मेरे रोंगटे खड़े होने लगे । मैंने उसके पास ही एक घड़ा रखा देखा । मरघट के वे हिस्से जहां रोशनी नहीं थी, बड़े डरावने लग रहे थे । रात साँय–साँय कर रही थी । मुझे डर भी लग रहा था, ताज्जुब भी था । ज़्यादा वक़्त न हुआ था कि एक तरफ़ से परछाई-सी आती दिखाई दी। कोई सिर पैर तक काली चादर ओढ़े गठरी और घड़े की तरफ़ आ रहा था । मैं सच कहता हूं कि मैं एक से एक भयानक वन में रहा हूं । शेर और चीते से मेरा सामना हुआ है । तरह–तरह के ख़तरों में पड़ा हूं, लेकिन मुझको ऐसा डर कभी नहीं लगा जैसा उस वक़्त लग रहा था । फिर यह कि मैं मरघट से दूर एक पेड़ पर बैठा था ख़तरा किसका। फिर भी मेरी अन्दर की सांस अन्दर रुकती महसूस हुई। मैं फटी-फटी नज़रों से उस चलती हुई काली चादर को देख रहा था । मैंने देखा कि चलने वाला घड़े के पास जाकर रुका । मैंने उसपर नज़रें जमा दीं । दिल में कहने लगा, या अल्लाह ! यह क्या है ? यह ज़रूर कोई बला है । बला का ख़्याल आया तो मैंने पहले क़ुरआन की सूरः फ़लक़ और सूरः नास

पढ़ी । उसके बाद आयतुल कुर्सी और फिर सूरः जिन्न तिलावत करने लगा । मैं क़ुरआन पढ़ रहा था और नज़रें उस पर जमी हुई थीं । मैंने देखा—

ख़ूबसूरत चुड़ैल

उसने चादर उतार कर एक तरफ़ रख दी । जैसे ही उसने चादर उतारी वैसे ही मेरी ज़बान से निकला 'औरत!' और मैंने एक लम्बी सी सांस ली । जी हां ! औरत! वही औरत जिसे लोग कमज़ोर, डरपोक और भोली-भाली, ना-तजुर्बेकार समझते हैं । वह बीस-बाइस साल की बहुत ख़ूबसूरत औरत थी । उसका शरीर छेरा और सुडौल था । उसके हाथ में एक लुटिया थी । लुटिया लिए वह घड़े की तरफ़ बढ़ी । लुटिया घड़े के पास रख दी । गठरी फिर हिली । उसने गठरी पर फिर नज़र डाली। फिर जल्दी-जल्दी अपने सिर के बाल खोल डाले । बाल खोलकर एक झटका दिया, बाल पीछे पीठ पर जा पड़े और वह खड़ी हो गई । खड़े-खड़े उसने अपनी अंगिया और साड़ी खोलकर एक तरफ़ रख दी । वह बिल्कुल नंगी हो गई । मादर ज़ाद नंगी । मैंने उसकी तरफ़ से मुंह फेर लिया । लेकिन मुझे तो एक खोज थी । मैंने फिर उसकी तरफ़ देखा । वह जल्दी-जल्दी नहा रही थी । उसे नंगी देखकर मैं निगाहें फेर लेता था । एक बार जो देखा तो मेरी हैरत का ठिकाना न रहा । वह मादर ज़ाद नंगी खड़ी थी, उसके दाहिने हाथ में एक चमकदार छुरी थी और उसका चेहरा ख़ून की तरह लाल हो रहा था । अब तो मैं समझ गया कि वह ख़ूबसूरत चुड़ैल कुछ कर गुज़रने वाली है । हां मेरे सिवा कोई और होता तो उसे चुड़ैल ही समझता लेकिन मैं तो मुसलमान हूं । मैं भूत-प्रेतों, चुड़ैलों को नहीं मानता । अच्छा तो मैंने उसे उस हालत में देखा तो मुझ से न रहा गया । कुत्ता अभी तक अपनी वही हरकत कर रहा था । वह चुपचाप उधर जाता और आता । वह मुझे इशारे कर रहा था कि जल्दी चलिए । चलकर देखिए तो क्या हो रहा है ? मैं झट पेड़ से उतरा । दबे पांव उसकी तरफ़ बढ़ा । मैंने अपना मज़बूत डंडा मज़बूती से थाम रखा था । कुत्ता मेरे साथ था । मैंने कुत्ते के सिर पर हाथ फेरा । वह चुपचाप मेरे साथ हो लिया । आगे बढ़ कर मैंने एक पेड़ की आड़ ली और यह खोज़ करने लगा कि देखूं अब यह क्या करती है ? नौजवान औरत दाहिने हाथ से छुरी पकड़े रही, बाएं हाथ से उसने गठरी को खोला । गठरी खुली तो उसके अन्दर से एक लड़की निकली । चार-पांच साल की दुबली पतली लड़की । लड़की बेहोश थी । जंगल की हवा लगी तो लड़की होश में आ गई । उसे होश में आते देखकर औरत उसके सीने पर चढ़ बैठी और फिर छुरी मारने के लिए अपना हाथ ऊंचा किया । इसमें शक नहीं कि मैं सहमा हुआ नहीं था, फिर भी

मेरी ज़बान से अपने आप निकल गया—

ख़बरदार !

ख़बरदार

और मैं झपट पड़ा। साथ ही कुत्ता भौंक कर उछला। औरत ने मुझे देखा तो हक्का-बक्का रह गई। फिर उसका चेहरा ग़ुस्से से लाल हो गया। दांत पीसकर बोली—'हरामी ! कलेजा चबा जाऊंगी'। साथ ही मेरे ऊपर छुरी का वार किया था। औरत ने भरपूर वार किया। मेरे ख़्याल में भी न था कि औरत मेरे ऊपर छुरी से हमला कर देगी। मैं तो लड़की को बचाने आगे बढ़ा था। 'अरे !' कहकर मैं एक तरफ़ झुक गया। उसका वार ख़ाली गया तो उसने दूसरा वार करना चाहा, लेकिन इतनी देर में कुत्ते नें उछल कर उसकी कलाई दबोच ली। एक चीख़ उसके मुंह से निकली और छुरी उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गई।

लड़की अब खड़ी हो चुकी थी। वह यह सब तमाशा देख रही थी और हैरान व परेशान थी कि यह क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है। वह यह तो समझ चुकी थी कि मैंने उसे इस ख़ूब सूरत चुड़ैल से बचाया है, इसलिए वह दौड़कर आई और मेरी टांगों से लिपट गई। मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा। इतनी देर में कुत्ते ने औरत को पंजों से ज़ख़्मी कर दिया। औरत हाय राम, हाय राम चीख़ रही थी। मैंने कुत्ते को चुमकारा। वह मेरे पास आ गया। जब कुत्ता मेरे पास आकर खड़ा हो गया तो औरत सिर नीचा कर के बोली, 'हाय राम ! यह कौन इस समय आ गया' फिर उसे अपने नंगे होने का ख़्याल आया तो जल्दी से साड़ी उठाकर लपेट ली। मैंने डांट कर कहा 'साफ़-साफ़ बता, यह क्या मामला है ? नहीं तो इस कुत्ते से नुचवा डालूंगा और लड़की को अपने साथ ले जाऊंगा। तू कौन है ? कहां की रहने वाली है ? यह बच्ची कौन है ? तू इसे क्यों क़त्ल कर रही है ? सारा हाल सच कहना, याद रख तू इस वक़्त मेरे रहम व करम पर है।'

टोटका

वह नज़रें नीची किए-किए बताने लगी, 'मैं एक अच्छे खाते-पीते और मालदार घराने की हूं। छः साल हुए, मेरी शादी एक ऊंचे घराने के नौजवान से हुई थी।

मेरा शौहर मुझ से बड़ी मुहब्बत करता था; लेकिन छः सालों में कोई औलाद न हुई तो उसकी बहनों, फूफियों और दूसरी नातेदार औरतों ने मुझे बांझ कहना शुरू कर दिया और मेरी सास पर दबाव डाला कि बेटे की दूसरी शादी कर दें। यह सुनकर मैं बहुत परेशान हुई। एक बूढ़ी औरत ने टोटका बताया कि 'किसी की पहली औलाद का ख़ून, मरघट में जाकर नहाने के बाद ठीक आधी रात के वक़्त किया जाए तो औलाद होने लगेगी।' यह जो कुछ मैं करने वाली थी यह उस बूढ़ी औरत का बताया हुआ टोटका था।'

यह कहकर नौजवान औरत फूट-फूटकर रोने लगी। मैंने 'ला हौल' पढ़ी। उस से कहा, 'अच्छा अब तू जा सकती है।' वह लुटिया लेकर एक तरफ़ चल दी। लड़की को मैं अपने साथ ले आया। अपने साथ पेड़ के ऊपर ले गया और आराम से लिटा दिया। लड़की लेटते ही सो गई। मैं एक तरफ़ सिकुड़ कर बैठ गया और सोचने लगा कि औरत ने इस लड़की का पता नहीं बताया। अब मैं सुबह कहां ले जाऊं। मैं रात भर यही सोचता रहा। और मुश्रिक लोगों के वहम, अंधविश्वासों और बेवकूफ़ी पर अफ़सोस करता रहा।

तलाश

दूसरे दिन मैं लड़की को लेकर क़रीब के गांव पहुंचा। गांव में लड़की के गुम हो जाने से एक खलबली मची हुई थी। लोग उसकी खोज में इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे थे। मेरे साथ लड़की को देखा तो सवालों की बौछार कर दी। 'तुम कौन हो ?'.......'यह लड़की तुमको कहां से मिली ?'.......'यह जंगल में कैसे पहुंची ?'.......'तुम्हारा नाम क्या है ?'.......'तुम तो किसी दूसरे देश के आदमी मालूम होते हो ?'

इस तरह के सवाल हर मिलने वाला करता। मैं हर एक को एक ही जवाब देता। मैंने एक डायन को देखा। वह इसे जंगल में क़त्ल करने वाली थी। मैंने देख लिया और बचा लिया। वह औरत भाग गई।

'मेरे यह बताने पर तरह-तरह के फिर सवाल होने लगे। वह औरत कौन थी ? उस डायन का नाम बताओ ? नाम नहीं मालूम तो उसकी पहचान बताओ ? हम उसे क़त्ल कर देंगे। तुम हमारे गांव के ठाकुर के पास चलो, तुमको इनाम मिलेगा।'

मैंने कुछ नहीं बताया। यही कहता जा रहा था कि जब लड़की मेरे हाथ आ गई तो फिर मैंने उस डायन का पीछा नहीं किया। लोग मुझे लेकर गांव के ठाकुर के पास पहुंचे। गांव का ठाकुर, ठकुराइन और उसके घर वाले लड़की के लिए

दीवाने हुए जा रहे थे । लड़की को पाकर ख़ुशी के मारे फूले न समाए । ठकुराइन ने दौड़कर लड़की को छाती से लगा लिया । उसके बाद दौड़कर मेरे पांव छू लिए । मैं घबरा कर पीछे हट गया । मैंने कहा, 'ठकुराइन जी आप का रुतबा बहुत बड़ा है । आप मुझे कांटों में क्यों घसीटती हैं । अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए । अल्लाह की ही मेहरबानी से आप की लड़की आपको मिली ।'

गांव का ठाकुर बड़ी मुहब्बत और गर्म जोशी से मुझ से मिला । उसने मुझे अपने घर में ठहरा लिया । वह दिन–रात मेरी ख़ातिरदारी में लगा रहता । उसकी देखा–देखी घर भर मेरा ख़्याल रखने लगा । गांव भर के लोग मेरी इज़्ज़त करने लगे । गांव के सारे लोगों से मेरी जान–पहचान हो गई । दस–ग्यारह दिन गुज़र जाने के बाद एक दिन ठाकुर ने मुझसे कहा, 'मेरे भाई ! हमारे ख़ानदान पर एक बड़ी मुसीबत पड़ी है । हम सब बहुत परेशान हैं । समझ में नहीं आता, क्या करें लेकिन जब से तुम आए हो, मेरा दिल कहता है कि अगर तुम चाहो तो हमारी परेशानी दूर हो जाएगी ।'

ठाकुर यह कहकर चुप हो गया । मैंने देखा कि वह बहुत ही उदास था । मैंने कहा, ठाकुर साहब हर परेशानी और मुसीबत दूर करने वाला तो ख़ुदा है । हमें उसी से दुआ करनी चाहिए । हां ! अगर मुझ से आपका कोई काम बन सके तो मैं दिल व जान से हाज़िर हूं । आपकी बातों से मैं यह तो समझ गया कि आजकल आप बहुत परेशान हैं । आपकी परेशानी में अगर कुछ काम आ सकूं तो मैं यह सवाब का काम समझता हूं । आप फ़रमाएं । मालूम तो हो कि आप पर क्या मुसीबत आ पड़ी है ?'

घर की विपदा

मेरी इस बात से ठाकुर ख़ुश हो गया । उसने कहा, भाई बात यह है कि हम दो भाई हैं । हरिहर सिंह मेरा छोटा भाई है । हमने आपस में अपना–अपना इलाक़ा बांट लिया है और अपनी–अपनी जगह आराम से रहते है । हरिहर मेरा बड़ा अच्छा भाई है । पांच-छः साल हुए मैंने उसकी शादी बड़े गांव के ठाकुर की लड़की से कर दी थी । वह अपनी बीवी के साथ ख़ुश–ख़ुश रहता था । लेकिन इतने दिन हो गए कोई औलाद नहीं हुई । मेरे यहां जो औलादें हुईं वे सब मर गईं । बस कमला बाक़ी है । यही कमला जिसको तुमने डायन से बचाया । अगर हमारे घर कोई लड़का न हुआ तो हमारी इतनी बड़ी जायदाद और दौलत दूसरों के क़ब्ज़े में चली जाएगी और हमारे बाप–दादा का नाम मिट जाएगा । मेरा ख़्याल था कि

हरिहर सिंह के यहां ही लड़का होता तो आगे नाम चलता, पर उसकी पत्नी बांझ निकली । अब हम चाहते हैं कि हरिहर सिंह की दूसरी शादी करा दें, लेकिन हरिहर सिंह के ससुर ठाकुर चंचल सिंह ने यह कहला भेजा है कि अगर घर में दूसरी बीवी आई तो लट्ठ चल जाएंगे । हमारी यह हिम्मत नहीं कि बड़े गांव के ठाकुरों का मुक़ाबला कर सकें । कई दिन हुए ठाकुर चंचल सिंह अपनी लड़की को भी ले गए ।'

'फिर मैं क्या कर सकता हूं ठाकुर साहब ?' मेरे पूछने पर ठाकुर ने कहा कि 'भाई हम सब इस कोशिश में हैं कि हमारे भाई की बीवी का बांझपन दूर हो जाए । हमने इसके लिए बहुत से टोने-टोटके किए । बड़ी झाड़–फूंक कराई । जिसने जैसा कहा, किया । मगर औलाद न हुई ।'

मैंने ठाकुर की बात सुनी । बेबसी और निराशा उसके चेहरे पर छाई हुई थी । मैंने उसे तसल्ली देते हुए समझाया कि ठाकुर साहब औलाद का देना सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में है जो हमारा मालिक, हाकिम और पालनहार है । इसलिए हमें औलाद के लिए उसी से दुआ करनी चाहिए । और इसके लिए ग़लत तरीक़े हरगिज़ न अपनाने चाहिए । हां, अल्लाह ने दवा–इलाज करने से मना नहीं किया है । कुछ जड़ी–बूटियां अल्लाह ने ऐसी पैदा की हैं कि अगर उनका इस्तेमाल किया जाए तो अल्लाह की मेहरबानी से औलाद पैदा हो सकती है । इसलिए आप किसी वैद्य या हकीम से मिलें ।

मेरी बात सुनकर ठाकुर बोला, 'भाई हमारे यहां ऐसे हकीम कहां । हां, अगर आपको कोई दवा याद हो तो ज़रूर बताएं । हम आपके एहसान मंद होंगे ।'

मैंने बताया कि मैं कोई हकीम या वैद्य तो नहीं । हां एक दवा मुझे ज़रूर याद है । आप उसे चाहें तो इस्तेमाल कराकर देख लें । मेरी यह बात सुननी थी कि ठाकुर की आंखें चमक उठीं और मैंने उसे जड़ी–बूटी का नाम बताया । ठाकुर नाम से उस दवा को न समझ सका । मैंने कहा कि यह बूटी जंगल में होती है । अगर आप मेरे साथ चलें तो मैं तलाश करने की कोशिश करता हूं । ठाकुर मेरे मुंह से यह बात सुनकर बड़ा ख़ुश हुआ । यह ख़बर बड़ी तेज़ी से फैल गई कि मैं ठाकुर के भाई की बीवी के लिए जंगल से जड़ी–बूटी लाकर दूंगा ।

यह ख़बर बड़े गांव को पहुंची, तो मैंने देखा, एक दिन ठाकुर चंचल सिंह अपनी बेटी को लेकर आए और मुझको पूछा । मुझे देखते ही वह मेरे क़दमों पर गिर पड़ी, 'मेरे भाई ! तुम्हारा मुझ पर एहसान है और अब तुम दूसरा एहसान करने जा रहे हो ।' मैंने औरत को देखा, मैं हक्का–बक्का रह गया । उफ़ मेरे अल्लाह !

वह डायन ठाकुर के भाई हरिहर सिंह की पत्नी ही थी । मैंने दिल ही दिल में कहा ।

यह बात सबने सुनी । किसी ने पूछा, 'बहू ! इन्होंने तुझ पर आज से पहले क्या एहसान किया ? इस सवाल पर वह औरत भी घबरा गई । मैं भी घबराया कि कहीं यह बात न खुल जाए कि यह औरत ही डायन बनकर कमला को चुरा ले गई थी । वह मेरी इस बात से बहुत ख़ुश थी कि मैंने उसका मामला छुपाया । वह थोड़ी देर हक्का–बक्का सी रही फिर बोली, 'इनका यह एहसान क्या कम है कि इन्होंने मेरी कमला को डायन से बचाया ।'

'अच्छा यह बात है ।' लोगों को यक़ीन हो गया । बड़ी चालाकी से उसने बात टाल दी ।

दूसरे दिन मैंने अपना थैला लिया । मेरा कुत्ता मेरे साथ चला । मैं जंगल की ओर चल पड़ा । बड़ा हरा–भरा जंगल था । सबसे बड़ी बात यह कि जंगल में कोई ख़तरनाक जानवर नहीं मिला । मुझे केलों के कुछ पौधे नज़र आए । मैं उसी तरफ़ गया ।

नेवला

अचानक मेरा कुत्ता एक तरफ़ झपटा और फिर मैंने देखा कि एक बड़ा–सा नेवला उसके पंजों से ज़ख़्मी होकर दूर जा गिरा । कुत्ता फिर झपटा, लेकिन मैंने उसे रोका और लपक कर मैंने नेवले को उठा लिया । अपने थैले से मरहम निकला । नेवले के जख़्मों पर लगाया । रोटी के कुछ टुकड़े निकाले, वे उसे दिए । उसने कुतर–कुतर कर खाया और फिर इस तरह मेरी गोद में आ बैठा जैसे वह बरसों से हिला हुआ हो । मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा । उसका नर्म–नर्म चिकना बदन सहलाया । फिर मुस्कुरा कर कुत्ते से कहा 'चलो अच्छा हुआ, तुम एक हमारे साथी थे, एक दोस्त और मिल गया । अब हम तीन दोस्त हो गए ।' कुत्ता इंसान की बात क्या समझे, मगर जब कुत्ते ने दुम हिलाकर और सिर झुकाकर नेवले को देखा तो मेरे दिल ने कहा कि इसे यह साथी पसन्द है ।

मैंने नेवले को कन्धे पर बिठा लिया । अभी शाम नहीं हुई थी कि हमें एक झाड़ियों का झुन्ड नज़र आया । मैं उधर बढ़ा । उन झाड़ियों में मुझे वह बूटी नज़र आई जिसकी हमें तलाश थी । मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा । मैं बड़ी बेचैनी से झाड़ी में घुसा । मैंने क़दम अन्दर रखा ही था कि—

सतसर्प

मैने एक सरसराहट सुनी और फिर ज़ोरदार एक फुंकार के साथ एक सांप मुझ पर लपका । मैं एकदम झाड़ी से बाहर हो गया । सांप मेरी तरफ़ तेज़ी से बढ़ा । मेरा कुत्ता जो मेरे साथ था ज़ोर से भौंका और तेज़ी से झाड़ी पर उछला । दूसरी तरफ मियां चीकू भी आगे बढ़े और चमक कर झाड़ी में कूदे और मैंने सिर्फ़ 'कच्च' की आवाज़ सुनी और फिर कुत्ते, सांप और नेवले की मिली–जुली आवाज़ें 'शू.....फूं.....गुर्र.....गुर्र.....शुफ़.....शुफ़.....' इस तरह की आवाज़ें झाड़ी में से आने लगीं । ऐसा लग रहा था कि इन तीनों में धर–पटक हो रही है । लड़ते–लड़ते तीनों झाड़ी से बाहर आ चुके थे । उनकी लड़ाई देख कर डर के मारे मैं पसीने–पसीने हो गया । मेरे साथ जो लोग थे, वह भी बहुत घबराए हुए थे । सात हाथ के काले कौड़ियाले एक सांप की गर्दन में चीकू मियां (नेवले) ने दांत जमा दिए थे ।

सत्सर्प से लड़ाई

सांप नेवले को पटख़ रहा था । नेवला बुलाक़ की तरह लटका हुआ था, मगर छोड़ता नहीं था । दूसरी ओर मेरे पुराने साथी कुत्ते ने सांप के रस्सेदार शरीर में ठीक बीचों बीच मुंह भर लिया था । सांप की पूंछ का सिरा कुत्ते के शरीर में बुरी तरह जकड़ा हुआ था और इस तरह उन तीनों में ज़ंग हो रही थी । मैंने देखा कि तीनों ख़तरे में हैं । सांप को दो जगह से मेरे नए–पुराने दोनों साथियों ने जकड़ रखा था और सांप नेवले को ज़मीन पर पटख़ी दे रहा था और कुत्ते के शरीर में बल डाले उसकी पसलियां तोड़े डाल रहा था ।

मुझ से न रहा गया । मैंने अपना डण्डा उठाया । सांप के जिस्म का वह हिस्सा जो कुत्ते और नेवले की पकड़ के बीच में था और उसी के बल–बूते सांप नेवले को धर–पटख़ रहा था, मैंने उसीं जगह पर डण्डे की चोट मारी । एक, दो, तीन, मेरे डण्डे की चोट से सांप के जिस्म की गिरहें टूटीं । वह लहराने लगा । अब वह नेवले को पटख़ नहीं सकता था । उधर कुत्ते के जिस्म में उसने जो बल डाल रखे थे वे भी ढीले हुए । अब तो उन दोनों ने सांप को चबा–चबा डाला । मैंने सांप का फन भी कुचल दिया । सांप बेदम और कटा-फटा पड़ा था । अफ़सोस की थोड़ी ही देर के बाद मेरा कुत्ता भी ऐंठने लगा । वह एक तरफ़ भागा, लेकिन रास्ते में ही गिर गया और उसका सिर फट गया । शायद सांप ने उसे काट लिया था । उधर नेवला पटख़ियों की चोट से ज़ख़्मी हो गया था । वह भी ज़मीन पर

गिर कर फिर न उठ सका। कुत्ते और नेवले के मरने का मुझे बड़ा दुख हुआ। मेरी मौत उन दोनों साथियों ने अपने सिर ले ली और इतने से एहसान पर कि एक को मैंने ज़रा-सा पानी पिला दिया था और दूसरे के ज़ख़्मों में मरहम लगा दिया था।

सांप के मरने के बाद मैंने बूटी तोड़ी और हम सब गांव वापिस आ गए।'

नुक्ता

हमारे इब्ने बतूता ने यह क़िस्सा लिखने के बाद बड़ी अच्छी बात लिखी है। वह लिखता है कि मेरे ज़रा से एहसान पर दो जानवरों ने तो मेरी जान की ख़ातिर अपनी जानें दे दीं। इतना एहसान माना दोनों ने, लेकिन अफ़सोस कि एक इंसान है—अल्लाह ने कितनी मेहरबानियां उस पर की हैं, सारी दुनिया में उस को सबसे ऊंचा बनाया। तरह–तरह की नेमतें दीं और वही इंसान है कि उस भलाई करने वाले को पहचानता भी नहीं। उसके एहसानों को याद भी नहीं करता। दूसरों को उसका साझी ठहराता है ।

हमारा इब्ने बतूता उस गांव में अधिक दिनों नहीं रहा। हमें हैरत है कि उस गांव में उसने इस्लाम के बारे में कोई उपदेश किसी को नहीं दिया। यह बात हम इसलिए कहते हैं कि उसने इस बारे में इस तरह की कोई बात नहीं लिखी। आख़िर में उसने यह लिखा है कि वह वहां ज़्यादातर बीमार रहा। शायद वहां की आबो हवा उसके लिए अच्छी नहीं रही। इसलिए जल्द ही वहां से चल दिया। आख़िर में उसने क़ुरआन की एक सूरः आदियात की ये आयतें लिखी हैं—

'मालिक के इशारे पर हांपते हुए (निडर होकर) दौड़ने वाले, टाप मार कर चिंगारियां उड़ाने वाले, सुबह में हमला करने वाले, धूल उड़ाने वाले (दुश्मन की) सेना में घुस जाने वाले घोड़े गवाह हैं, बेशक इंसान बड़ा नाशुक्रा है और वह ख़ुद इस हक़ीक़त पर गवाह है।'

अंग्रेज़ मुसाफ़िर के साथ

☆ तर्जुमान की ज़रूरत
☆ प्यास
☆ छूत–छात
☆ इस्लाम और बराबरी
☆ शूद्रों की बारात
☆ नमाज़ का मंज़र
☆ ईदी भाई के घर मेहमानी
☆ अंग्रेज़ मुसाफ़िर की इस्लाम से दिलचस्पी

□

हमारा इब्ने बतूता अपने सफ़रनामें में लिखता है कि हिन्दुस्तान बहुत बड़ा देश है। यहां बहुत ज़बाने और भाषाएं बोली जाती हैं। लेकिन अगर कोई बाहर का आदमी यहां की एक ज़बान सीख ले तो उसे दूसरी ज़बानो के समझने में ज़्यादा दिन नहीं लगते। मैंने एक साल के अन्दर ही कई ज़बाने सीख लीं और बोलने भी लगा। इसके बाद जब मैं हिन्दुस्तान के किसी इलाक़े में गया तो फिर वहां के लोगों से बातचीत करने में मुझ को बड़ी आसानी हो गई।

यह लिखने के बाद हमारे इब्ने बतूता ने बड़ा ही दिलचस्प और ईमान मज़बूत करने वाला एक क़िस्सा लिखा है। वह लिखता है—

तर्जुमान की ज़रूरत

जब मैं आगरे का ताजमहल देखने गया तो वहां मेरी मुलाक़ात एक नए आए हुए अंग्रेज़ आलिम से हुई। उस अंग्रेज़ को आए हुए दो–तीन हफ़्ते ही हुए थे। वह एक ऐसे आदमी की खोज में था जो कुछ–कुछ अंग्रेज़ी भी जानता हो और यहां की बोलियां भी समझता हो।

हक़ीक़त में बात यह थी कि वह अंग्रेज़ आलिम इस देश की देहाती ज़िन्दगी पर एक किताब लिखना चाहता था। वह घूम फिर कर इस देश के गांव वालों का रहन–सहन देखना चाहता था। उनसे मिलकर यह जानना चाहता था कि उनका दीन–धर्म क्या है ? उनके दीन–धर्म का असर उन पर क्या पड़ा है ? वे किस तरह सोचते हैं ? उनका अख़्लाक़ कैसा है ? और वे एक-दूसरे इंसान से कितना मेल–जोल रखते हैं ?

ये और ऐसी ही बातों को समझने के लिए ज़रूरी था कि गांव वालों के साथ रहा जाए। उनसे खुलकर बातें की जाएं। इन्हीं सब बातों के लिए उस अंग्रेज़ को एक ऐसे तर्जुमान की ज़रूरत थी जो गांव वालों की बात उसे समझा सके और उसकी बात गांव वालों तक पहुंचा सके।

हमारा इब्ने बतूता कहता है कि जब उस अंग्रेज़ ने मुझसे बातें कीं तो मुझसे कहने लगा, 'आप भी मुसाफ़िर हैं, मैं भी मुसाफ़िर। आइए हम एक साथ घूमें, एक साथ यहां सब कुछ देखें-भालें। आप से मुझे बहुत मदद मिलेगी। अगर

आप मेरे साथ रहें तो मैं आपका पूरा ख़र्च अपने ज़िम्मे लेता हूं ।'

वह अंग्रेज़ मुझे भला आदमी मालूम हुआ । मैंने उससे वादा कर लिया कि आप के साथ रहूंगा । आप की हर तरह से मदद करूंगा । लेकिन इसका कोई बदला आप से नहीं लूंगा । यह सुन कर उसने कुछ सोचा । इसके बाद कहने लगा, 'अच्छा आप मेरे साथ चलिए, हम दोनों मिल कर ख़र्च करेंगे, बिल्कुल इस तरह जैसे दो दोस्त हों और एक साथ सफ़र कर रहे हों ।'

मैं मुस्कुरा दिया और उसके साथ हो लिया । इस देश के गांव–गांव का रहन–सहन देखने हम दोनों निकल खड़े हुए । आपस में सलाह करके हमने तय किया कि जिस इलाक़े में घूमें, उस में कोई ऐसा गांव ध्यान में रखें, जहां दिन भर घूम फिर कर रात बसर कर सकें और वे सारी चीज़ें मिल सकें जिनकी हमें ज़रूरत हो ।

गर्मी का मौसम था । इसलिए हम चार घंटे दोपहर से पहले देहात की आबादियों और खेतों में घूमते और दो घंटे अस्र के बाद । इसके बाद गांव में ठहर जाते और वहां जिस जगह कुछ लोगों को बैठे देखते, पहुंच जाते । उनसे मिलते, बातें करते । जो नई बातें मालूम होतीं, अंग्रेज़ साथी अपनी डायरी में लिख लेता ।

एक दिन की बात है । हम घूमते हुए दूर तक निकल गए । यह वह वक़्त था कि गांव वाले रबी की फ़सल से अनाज निकाल रहे थे । जगह–जगह खलिहानों में अनाज के ढेर लगे थे । किसान बोरियां भर–भर कर अपने घरों को भेज रहे थे । खलिहानों में गेहूं के पौधों से अनाज निकालने का तरीक़ा अंग्रेज़ के लिए ऐसा हैरत–नाक और दिलचस्प था कि आज उसे इसकी भी ख़बर न हुई कि हमें कितनी देर हो गई है और हम कितनी दूर निकल आए हैं । वह तो कहिए हमारे पास पीने का पानी ख़त्म हो गया था, तो हम वापिस हुए, नहीं तो और न जाने कितनी दूर निकल जाते । पानी ख़त्म होने की वजह से हम अपने ठिकाने की तरफ़ लौट पड़े ।

प्यास

वापसी में हवा का रुख़ ठीक हमारे सामने था । लू चल रही थी । धूप भी तेज़ थी । हमने अपने–अपने सिर पर कपड़ा लपेट रखा था । इस तरह हम धूल और लू से तो कुछ न कुछ बचे रहे, लेकिन हमें प्यास बड़ी ज़ोर से लग रही थी । मैं तो ख़ैर प्यास झेल जाता । मैंने इस मौसम में भी कभी रोज़े नहीं छोड़े थे । मुझे ज़्यादा बेचैनी नहीं थी । लेकिन अंग्रेज़ आलिम रास्ते में ही बोल गया । मुझ से कहने लगा, 'कहीं पानी तलाश करना चाहिए ।' मैंने चारों तरफ़ देखा ।

क़रीब में कोई कुंआ नज़र नहीं आया । कुछ सोच कर एक छोटे से ख़लिहान की तरफ़ मुड़ गया । उस खलिहान में मर्द—औरतें, लड़के—लड़कियां, कुल मिलाकर आठ आदमी काम कर रहे थे । एक तरफ़ एक बूढ़ा चिलम पी रहा था । हम दोनों उसके पास गए । मैंने उस बूढ़े से कहा, 'यहां पानी मिल सकता है ?' उसने हमारी तरफ़ देखा । अंग्रेज़ पर उसकी नज़र जम गई । वह कहने लगा, 'इस जगह तो कोई कुंआ भी नहीं है ।'

'फिर हमें पानी कैसे मिलेगा ? मैंने बूढ़े से कहा । कुछ सोचकर उसने हमसे पूछा—

'आप दोनों किस जाति के लोग हैं ?' मैंने बताया कि मैं मुसलमान हूं और ये साहब ईसाई हैं ।'

'हां ! पानी तो मेरे पास है, मगर आप दोनों कैसे पिएंगे ?' बूढ़े किसान ने हम से पूछा ।

ये बातें हो ही रही थीं कि खलिहान के दूसरे लोग अपना काम छोड़कर हमारे पास आ खड़े हुए । मर्द भी, औरतें भी और लड़के—लड़कियां भी । मैंने बूढ़े से कहा, 'हमारे पास चमड़े की छागलें हैं, हमें इनमें पानी दे दो, हम पी लेंगे ।'

'चमड़े की छागलें ?' बूढ़ा किसान अचानक चौंका । 'दिखाइए कैसी होती हैं छागलें ?' मैंने अपनी छागल उसके सामने रख दी । उसने कहा, 'यह छागल तो आप अलग रखिए । हां, अगर चुल्लू से पानी पीना हो तो पी लीजिए ।'

मैंने अंग्रेज़ साथी को ये बातें अंग्रेज़ी में बताईं । उस बेचारे को प्यास ज़ोर की लगी हुई थी । वह चुल्लू ही से पानी पीने के लिए तैयार हो गया । हम दोनों पेड़ की एक जड़ पर बैठ गए । बूढ़े किसान ने एक लड़के से कहा कि पानी ले आए । लड़का पानी ले आया । एक कोरी गगरी में पानी देखकर जी ख़ुश हो गया । पहले अंग्रेज ने, फिर मैंने चुल्लू से पानी पिया । जब मैं पानी पी रहा था, उस वक़्त अंग्रेज़ बूढ़े किसान के पीछे जा खड़ा हुआ और रूमाल से मुंह पोंछने लगा । मुझे पानी पिला कर किसान उठा तो अचानक अंग्रेज़ से टकरा गया ।

'अरे !' किसान के मुंह से भी निकला और औरतों, बच्चों और मर्दों के मुंह से भी । अंग्रेज़ी के मुंह से अंग्रेज़ी में निकला, 'माफ़ कीजिए ।' देहाती किसान उस बोली को क्या समझते । मैंने बूढ़े किसान से यही बात कही तो उसने जवाब दिया, 'साहब ! माफ़ी की कोई बात नहीं, मगर हमारी गगरी 'छूत' हो गई ।' और यह कह कर उसने गगरी ज़मीन पर दे पटख़ी । अंग्रेज़ ने मुझसे पूछा, यह क्या हुआ ? मैंने उससे सारी बात कही । अंग्रेज़ को बहुत बुरा लगा । उसने अजीब-सा

मुंह बनाया । फिर शुक्रिया कहे बिना ही वहां से चल दिया । रास्ते में मुझ से कहने लगा, 'ये कैसे लोग हैं जो अपने जैसे इंसान को नापाक और अछूत समझते हैं । अगर इनके विचार ऐसे ही हैं, तो ये दूसरे इंसानों से मिलकर कैसे रहते होंगे । इनके अन्दर एक-दूसरे से नफ़रत होगी, फूट होगी । ये बहुत से उन कामों से दूर ही रहते होंगे, जो इंसानी हमदर्दी के काम हैं ।'

छूत–छात

अंग्रेज़ आलिम गुस्से में ऐसी बातें कर रहा था । मैंने उसे यहां के लोगों की जात–पात के बारे में पूरी बात बताई । 'यहां चार जातियां हैं ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र । ब्राह्मण सबसे ऊंची जाति का माना जाता है । इसके बाद क्षत्रीय हैं, फिर वैश्य हैं और शूद्र को नापाक समझते हैं । और जो लोग दूसरे धर्मों के मानने वाले होते हैं, उन्हें ये मलेक्ष कहते हैं । उनकी छुई हुई चीज़ें ये नहीं खाते और अगर बर्तन उनसे छू जाए तो ये समझते हैं कि बर्तन नापाक हो गया ।'

मैं इस तरह उस अंग्रेज़ को समझा रहा था । वह हर बात पर बुरा सा मुंह बनाता जा रहा था । इस तरह बातें करते–करते हम मील दो मील निकल गए थे कि फिर प्यास लगी । लेकिन अंग्रेज़ ने मुझ से कहा नहीं । वह प्यास को सहन किए हुए था । उसका चेहरा झुलसा जा रहा था । पसीने से हम दोनों शराबोर थे । जब मेरा हलक़ बिल्कुल सूख गया तो मैंने समझ लिया कि अंग्रेज़ साथी का मुझसे भी बुरा हाल होगा । मैंने उससे कहा—

'क्या आप पानी पिएंगे ?'

'हां ! मगर.......नहीं, मैं पानी नहीं पिऊंगा ।'

'क्यों ?'

'पानी हमारे पास तो है नहीं । हमें किसी यहीं के आदमी से पानी लेना होगा और फिर वही...... !'

'आप घबराइए नहीं, इस बार ऐसा नहीं होगा ।'

'ऐसा !' अंग्रेज़ को ताज्जुब हुआ । उसने कहा—

'अच्छा ! तो जल्दी पिलाइए पानी ।'

मैंने सामने एक खलिहान देख लिया था और खलिहान वालों के बारे में भांप लिया था कि वे कौन लोग हैं । मैं अंग्रेज़ को लिए हुए उसी खलिहान में गया ।

मैंने खलिहान वालों को सलाम किया । सलाम का जवाब देने के साथ उन सबने काम छोड़ दिया और हमारे पास आ खड़े हुए । एक बूढ़े ने एक जवान को कुछ इशारा किया । उसने एक जगह पर भूसा फैला कर उस पर टाट डाल दिया । फिर हमसे कहा, 'साहब ! बैठिए, यहां यही है ।' मैं अंग्रेज़ को लिए हुए टाट पर जा बैठा । अब उस किसान ने फिर कुछ इशारा किया, तो खलिहान वालों ने एक रूमाल में बंधी हुई रोटियां लाकर हमारे सामने रख दीं । रूमाल खोला, उसे बिछा कर रोटियां अलग-अलग कर दीं । दूसरे लोग इतनी देर में ठण्डा पानी ले आए । फिर हमसे कहा गया, 'साहब ! हाथ धो लीजिए और खाना खा लीजिए ।' हमने और खलिहान के मर्दों ने एक साथ खाना खाया । औरतें और लड़कियां एक तरफ़ बैठीं हमें देखती रहीं । अंग्रेज़ यह सब बड़ी हैरत से देख रहा था । उससे ये जौ की रोटियां ज़्यादा नहीं खाई गईं । हां पानी उसने ख़ूब जी भर कर पिया । उसने देखा कि उसके सामनें जो रोटी का टुकड़ा बच गया था, उसे एक नौजवान ने उठा कर खा लिया । अंग्रेज़ के लिए इन किसानों की एक-एक बात हैरानी और ताज्जुब में डालने वाली थी । इसके बाद एक ऐसी बात हुई कि अंग्रेज़ हक्का-बक्का रह गया । उस बूढ़े किसान ने हमसे कहा, 'साहब ! यहां हम आपकी कुछ ख़ातिर न कर सके, सामने हमारा गांव है, आप हमारे गांव चलिए । आज हमारे मेहमान हैं, आप दोनों । आप मुझे मुसाफ़िर मालूम होते हैं और किसी दूसरे देश के । आपकी मेहरबानी होगी अगर हमारे घर ठहरें ।'

इस्लाम और बराबरी

मैंने यही बात अंग्रेज़ से कही । वह सुन कर हक्का-बक्का रह गया । उसने मुझसे कहा, 'यह कैसा किसान है । शक़्ल और सूरत में उस पिछले किसान से मिलता-जुलता है । कपड़े भी क़रीब-क़रीब वैसे ही पहने हुए हैं । खेती यह भी करता है, वह भी । गांव में यह भी रहता है और वह भी । इंसान यह भी है, वह भी । फिर इसने अपने बर्तन क्यों नहीं तोड़े ? इसने तो साथ बैठ कर खाना खाया । फिर हमें घर चलने की दावत दे रहा है । बताओ मेरे भाई इस किसान और उस किसान में क्या बात है, जो नज़र नहीं आती, लेकिन फ़र्क़ बहुत बड़ा है ?'

अंग्रेज़ उस समय पूरे जोश में था । मैंने उससे कहा, 'इस किसान का धर्म इस्लाम है और इस्लाम दो और दो से ज़्यादा इंसानों को जोड़ने की तरफ़ बुलाता है । इस्लाम अल्लाह के सारे बन्दों को इंसान होने के नाते बराबर का हक़ देता

है। इस्लाम बराबरी और भाईचारा सिखाता है। हां वह सबसे बड़ा बुज़ुर्ग और भला उसे कहता है, जो सबसे ज़्यादा अल्लाह की नाफ़रमानी से बचने वाला हो। चाहे वह किसान हो या लुहार किसी पेशे का करने वाला हो, किसी देश का रहने वाला हो, किसी क़ौम का हो, वह कोई भी ज़बान और भाषा बोलने वाला हो। काला हो या गोरा, मालदार हो या ग़रीब, इस्लाम सबको बराबर का दर्जा देता है।'

अंग्रेज़ आलिम ग़ौर से मेरी बातें सुनता रहा। फिर उसने मुझसे कहा, 'जो लोग इस्लाम को मानते हैं, उनके बुनियादी अक़ीदे क्या हैं ?' मैंने बताया कि वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का आख़िरी रसूल मानते हैं। वे ख़ुदा को एक मानते और जानते हैं। और यह मानते हैं कि हम जो कुछ दुनिया में अच्छा या बुरा करते हैं एक दिन उसका हिसाब अल्लाह के आगे देना होगा। आख़िरत के दिन हर छोटे–बड़े से उसके कामों के बारे में पूछ–ताछ होगी। इसके बाद अच्छे जन्नत में और बुरे जहन्नम में जाएंगे।

'हूं !' अंग्रेज़ ने लम्बी सांस के साथ कहा, 'हमें इस किसान की बात मान लेनी चाहिए।

यह कह कर अंग्रेज़ प्यार भरी नज़रों से खलिहान वालों को देखने लगा। मैंने उस बूढ़े किसान से कहा, 'हम सैर को निकले हैं। चाहते हैं कि शाम तक दो चार गांवों में घूम फिर लें। मग़रिब तक इन्शाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा तो) आपके गांव आ जाएंगे। आपका नाम क्या है ?'

'ईदी !' किसान ने बताया। हम थोड़ी देर वहीं ठहरे रहे। खलिहान वाले अपने काम में फिर लग गए। एक लड़के ने ईदी के इशारे पर हमारी तरफ़ कपड़ा तान दिया ताकि हमें लू के झोंके कम लगें। मैं तो भूसे पर लेट गया। अंग्रेज़ बैठा रहा और ईदी के घराने वालों को देखता रहा।

शूद्रों की बारात

जब लू कुछ कम हो गई, धूप की तेज़ी में भी कमी आ गई तो हम दोनों एक तरफ़ चल दिये। कुछ दूर चलकर शोर सुनाई दिया। हम उसी तरफ़ चल दिए, जिधर से शोर आ रहा था। सामने एक गांव था। गांव के पास जाकर देखा कि गांव वालों ने एक बारात रोक रखी थी। वे बारातियों से कह रहे थे कि हम तुमको गांव के बीच से नहीं निकलने देंगे। बेचारे बारात वाले ख़ुशामद कर रहे थे कि 'रास्ता गांव में होकर ही है। दो तरफ़ तालाब और एक तरफ़

खेत हैं, हम किधर से जाएं ?'

मैंने यह बात अंग्रेज़ को बताई । फिर सबब पूछा तो मालूम हुआ कि बारात शूद्रों की है और इस गांव में ब्राह्मण और ठाकुर रहते हैं । वे नीची जाति वालों को गांव में से नहीं निकलने देंगे ।

यह सब मैंने अंग्रेज़ को बताया तो उसने मुझ से कहा, 'देखिए वही बात हुई जो मैंने आपसे कही थी कि इन लोगों के ये ऊंच–नीच वाले विचार इंसानों–इंसानों में फूट डालने वाले हैं । यह इसकी कैसी बुरी मिसाल है कि बारात वाले इस गांव से होकर नहीं निकल सकते, क्योंकि इस गांव में ऊंची जाति के लोग रहते हैं ।'

आख़िरकार हमने देखा कि बारात वाले बेचारे खेतों की मेढों पर चल कर गांव के दूसरी ओर रास्ते पर हो लिए । बीं, बीं, बीं, बीं डमरू बजा । नटावा दौड़–दौड़ कर नाचने लगा । गाने की आवाज़ आई तो अंग्रेज़ उधर देखने लगा । मुझ से बोला, 'ज़रा चल कर यह तमाशा देखें । हम दोनों उस ओर बढ़े, लेकिन उन लोगों का नाच दूसरे नाचों से अनोखा था । उनका नाचने वाला नटावा ठहर–ठहर कर किसी जगह नहीं नाच रहा था ।

इतना लिखने के बाद हमारे इब्ने बतूता ने लिखा है कि नटावे के नाच को हम एक वरज़िश कह सकते हैं । नाच उसे इसलिए कहा जाता है कि नटावा रूप भरे हुए होता है । नटावा चमड़े का जूता भी पहनता है । उस जूते में सरसों का तेल लगा होता है । नटावा एक नौजवान लड़का होता है, लेकिन वह लड़कियों की तरह घाघरा पहने होता है । उसके चेहरे पर सफ़ेद पाऊडर पुता होता है । पसीना निकलने से चेहरा बेहद भद्दा हो जाता है । उसके साथ डमरू बजाने वाले और गाने वाले बड़ी मेहनत और पूरे जोश के साथ गाते हैं । बारात में जो दूल्हा होता है, उस की उम्र बहुत कम होती है । दुल्हे के सिर पर बांस की तिल्लियों का सेहरा होता है । यह सेहरा काग़ज़ से मंढ़ा होता है ।

अंग्रेज़ आलिम के लिए इस बारात में बड़ी दिलचस्पी का सामान था । वह डायरी निकाले जल्दी–जल्दी कुछ नोट करता जा रहा था । उसने अपनी डायरी में डमरू और मंजीरों की तस्वीरें भी बनाईं । नटावे का भी नक़्शा खींचा । इसके बाद हम दोनों लौट पड़े । अब सूरज ज़्यादा नीचे आ गया था । हमें मग़रिब के वक़्त ईदी के गांव पहुंचना था । हम उस तरफ़ चल दिए । जिस वक़्त हमने गांव में क़दम रखा, मग़रिब की अज़ान की आवाज़ कानों में आई ।

नमाज़ का मंज़र

'अच्छा यहां मस्जिद भी है।' मेरी ज़बान से निकला और मैं उसी तरफ़ मुड़ गया। मैं मस्जिद में जाकर वुज़ू करने लगा। अंग्रेज़ साथी चौखट पर बैठ गया। नमाज़ के लिए जमाअत खड़ी हो चुकी थी। अगली सफ़ (लाइन) भर चुकी थी। दूसरी सफ़ में दो-चार आदमी थे। मैं वुज़ू करके दूसरी सफ़ में खड़ा हो गया। नमाज़ पढ़ कर मैं अंग्रेज़ के पास आ गया। उसने एक ऐसी बात कही, जिससे मालूम होता है कि उसने हमारी नमाज़ को बड़े ध्यान से देखा। उसने मुझ से पूछा, 'भाई! तुम एक ऐसे आदमी के पीछे थे जिसके पैर काले–काले और बुरे थे। जब तुमने माथा ज़मीन पर रखा तो मैंने देखा कि जिस जगह पर उसके काले–काले पैर थे, उसी जगह पर तुम्हारा सिर था। क्या तुम को बुरा नहीं लगा ?'

'बुरा लगना तो दूर की बात है।' मैं अंग्रेज़ से कहने लगा, 'मुझे तो यह ख़्याल भी नहीं आया कि एक काला गांव वाला मेरे आगे खड़ा है। यहां बड़े से बड़ा आदमी आकर किसी ग़रीब मुसलमान को उस की जगह से हटा नहीं सकता। मैंने आप से कहा था कि 'इस्लाम भाईचारे की तालीम देता है। इस्लाम की नज़र में सभी इंसान बराबर हैं। बड़ा वही है, जो अल्लाह के हुक्मों को माने और उनका पालन करने में सबसे आगे हो।'

ईदी भाई के घर मेहमानी

'हूँ.....' अंग्रेज़ ने लम्बी सांस ली। इतने में किसी ने सलाम किया। देखा तो वे ईदी भाई थे। वे ख़ुश–ख़ुश हमें अपने घर ले गए। हम दोनों उनके घर गए। उनका घर छप्पर का था। एक तरफ़ खंडहर में उनके बैल बंधे थे। उन्होंने घर के आगे चबूतरे पर चारपाइयां बिछा दी थीं। उन पर चादरें बिछी थीं। हम जाकर चारपाइयों पर बैठ गए। हमें फ़ौरन दूध मिला हुआ शर्बत पिलाया गया। धीरे–धीरे वहां बहुत से लोग जमा हो गए। उनमें मुसलमान भी थे और ग़ैर–मुस्लिम भी। सब चारपाइयों पर बैठ गए। अंग्रेज़ यह सब देखता रहा। दो घंटे रात गए। हम ने ईदी भाई के घर के आंगन में खाना खाया। खाने में ईदी भाई ने बड़ा इन्तिज़ाम किया था। बकरी का गोश्त था, उसमें आलू पड़े थे। पुलाव था, सिवाइयां थीं, चपातियां थीं। बस, हमने मज़ा ले लेकर खाना खाया। अंग्रेज़ यह खाना खाता जाता और तारीफ़ करता जाता। सुना था कि अंग्रेज़ कांटे–छुरी से खाना खाते हैं, लेकिन यह अंग्रेज़ साथी हमारी ही तरह खाना खा रहा था। उसने इस

सफ़र में कहीं भी छुरी–कांटे से काम नहीं लिया ।

रात को हम आराम के साथ चबूतरे पर पड़ी चारपाइयों पर सोए । सुबह को जब चलने लगे तो ईदी भाई ने तले हुए अण्डे और कुछ रोटियां हमारे साथ कर दीं। चलते वक़्त अंग्रेज़ ने पच्चीस रुपए अपने थैले से निकाले । ईदी भाई की दस साल की बच्ची सामने खड़ी थी । उसे वह रुपए देने लगा । बच्ची ईदी भाई का मुंह तकने लगी । ईदी भाई ने एक उंगली उठाई । इस इशारे को समझ कर बच्ची ने एक रुपया ले लिया और साहब को सलाम किया ।

अंग्रेज़ आलिम मुझे देखने लगा । ईदी भाई ने बढ़ कर कहा, 'बच्ची को जो लेना था, ले लिया । इतने सारे रुपयों से हमारे बच्चों में लालच पैदा होगा । आप इससे हमें माफ़ करें ।' अंग्रेज़ के कहने से मैंने ईदी भाई से बहुत कहा, लेकिन वह न माने, बल्कि ज़रा तीखे होकर बोले, 'मैंने इन रुपयों के लालच में आप को मेहमान नहीं बनाया, बल्कि अल्लाह की ख़ुशी के लिए यह सब किया ।'

यही बात मैंने अंग्रेज़ से कही, तो उसने रुपए जेब में रख लिए और वहां से चल दिया । रास्ते में मुझ से कहने लगा, 'मेरा ख़्याल है कि इस गांव वाले में यह भाईचारे वाली बात इस्लाम ने पैदा की । तुम मुझे इस्लाम के बारे में खुल कर सारी बातें बताओ । मैं चाहता हूं कि इस्लाम को भी समझ लूं । मैं जानना चाहता हूं कि इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा क्या है ? ख़ुदा के बारे में इस्लाम क्या सिखाता है ? रसूलों के बारे में इस्लाम क्या मानने को कहता है ? और यह कि इस्लाम के हुक्मों का ज़िन्दगी से क्या ताल्लुक़ है ?'

अंग्रेज़ मुसाफ़िर की इस्लाम से दिलचस्पी

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि 'इसके बाद मैं कई महीने तक उसके साथ रहा । इस बीच में मैंने पूरा इस्लाम उसे समझा दिया । इस्लामी अक़ीदे उसे समझाए । उसने कुरेद–कुरेद कर ख़ुद भी पूछा । फिर कहने लगा, 'अगर कहीं से इस्लाम के बारे में अंग्रेज़ी में किताबें मिलें तो उन्हें पढ़ूं । अगर यहां न मिलें तो मेरा इरादा मिस्र जाने का है । वहां ज़रूर मिल जाएंगी ।'

उस अंग्रेज़ आलिम का हाल लिखने के बाद हमारे इब्ने बतूता ने इस दुआ पर क़लम रोका कि—

'ऐ ख़ुदा ! मुझ में जितनी ताक़त थी, मैंने उस अंग्रेज़ आलिम को इस्लाम समझाने में लगा दी । अब उसके दिल को पलटना और इस्लाम की तौफ़ीक़ देना तेरा काम है । पालनहार ! अपने इस बन्दे को दोज़ख़ की आग से बचा ले और आख़िरत के दिन मेरी ग़लतियों को ढांप ले ।'

कुछ दिन शूद्रों में

- ☆ लुटेरा गांव
- ☆ सलाम की बरकत
- ☆ इस्लाम की तालीम
- ☆ इस्लामी तालीम का असर
- ☆ ऊंची ज़ात वाले
- ☆ राजा को दरख़्वास्त दी
- ☆ बब्बू बाबा का बयान
- ☆ राजा का इंसाफ़

□

हमारे इब्ने बतूता के सफ़रनामें को पढ़ने से मालूम होता है कि वह नबी करीम (सल्ल०) के बेहतरीन किरदार को हमेशा अपने सामने रखता था । मौक़ा पाने पर वह उस नमूने की पैरवी भी करता था । उसने अपना सफ़रनामा लिखते वक़्त इस्लामी इतिहास की बहुत-सी बेहरतीन तक़रीरें लिखी हैं । इससे उसकी बेहतरीन याद्दाश्त का सबूत मिलता है । आगे आने वाले पन्नों में उसके सफ़रनामे का जो क़िस्सा आ रहा है, उसमें जगह–जगह उसने अपनी याद्दाश्त का अच्छा सबूत दिया है । पढ़िए और सबक़ हासिल कीजिए । हमारा इब्ने बतूता लिखता है—

लुटेरा गांव

मैं घूमता–फिरता एक गांव में पहुंचा । उस गांव में तीस घर थे । घर छप्परों से ढके हुए थे । उन छप्परों में रहने वाले लोग दो सौ से ज़्यादा न थे । ये सब के सब बिल्कुल जाहिल और गंवार थे । गांव में एक भी पढ़ा लिखा आदमी न था । क्या सही है, क्या ग़लत ? क्या हराम है, क्या हलाल ? यह बात जानने वाला कोई न था । सब बड़े वहमी थे । भूत–प्रेतों और चुड़ैलों के नाम से डरते, टोने–टोटके और झाड़–फूंक किया करते थे । तरह–तरह के रस्म–रिवाजों में फंसे रहते । ये शूद्र ज़ात के लोग थे । उनके पेशे अलग–अलग थे । कुछ लोग तो मरे हुए जानवर उठा लाते, उनकी खाल निकाल लेते, उनकी हड्डियां जमा करते और उनका गोश्त खा लेते । कुछ लोग गोहों और ऐसी ही दूसरे जानवरों का शिकार किया करते । कुछ लोग सूप और पाल बनाते । कुछ लोग ऐसे भी थे, जिनके पास बकरियों और भेड़ों के रेवड़ थे। कुछ लोग सूअर भी पालते थे । गांव भर में सिर्फ़ एक आदमी ऐसा था जो तरकारियां बोया करता था ।

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि उन सबकी आदतें बड़ी ख़राब थीं । वे सब जुआ खेलते, शराब पीते, आपस में लड़ते–झगड़ते रहते । मुसाफ़िरों को देखते तो उनको लूट लिया करते थे । मैं गांव में पहुंचा तो उन लोगों ने मुझे भी लूट लिया। मैं बहुत परेशान हुआ । मैं सोचने लगा, 'अब क्या करूं, कहां जाऊं ? मैं दिल ही दिल में यही सोच रहा था । अचानक मुझे प्यारे रसूल (सल्ल०) का वह क़िस्सा याद आ गया, जब आप (सल्ल०) ताइफ़ वालों को अल्लाह का दीन समझाने गए थे और उन लोगों ने आप को लहू–लुहान कर दिया था । यह

बात याद आई तो जिस तरह प्यारे नबी (सल्ल०) ने ताइफ़ वालों के लिए दुआ की थी । उसी तरह मैंने भी गांव वालों के लिए दुआ की–

'ऐ अल्लाह ! गांव वालों को सीधा रास्ता दिखा दे, उनकी बुराइयों को दूर कर दे और उन्हें नेक बना दे ।' दुआ के बाद मैं सोचने लगा कि अगर ये लोग अल्लाह से डरने लगें और उनको यह मालूम हो जाए कि एक दिन सबको मरना है । मरने के बाद अल्लाह के सामने हाज़िर होना है । अपने अच्छे और बुरे सभी कामों का हिसाब देना है और फिर करनी के मुताबिक़ अच्छा या बुरा बदला पाना है, तो ये लोग ज़रूर बुरे कामों से बचने लगेंगे और अच्छे इंसान बन जाएंगे ।

मैं यह सोच ही रहा था कि अचानक कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी । उधर देखा तो कई कुत्ते एक लड़के का पीछा कर रहे थे । लड़का भागता हुआ उसी तरफ़ आ रहा था और मदद के लिए चिल्ला रहा था । यह देख कर मैं उठा । मैंने कुत्तों को डांटा, ढेले भी मारे । कुत्ते भाग गए । लड़का मेरे पास आकर खड़ा हो गया और भागते हुए कुत्तों की तरफ़ देखने लगा ।

सलाम की बरकत

वह लड़का बहुत ही गंदा था । मैंने उससे कहा, 'जाओ नहा कर आओ तो एक मज़ेदार बात बताऊं ।' पास ही एक तालाब था, लड़का गया, तालाब में नहाने लगा । नहा कर मेरे पास आया । मैंने उससे नाम पूछा, फिर उससे कहा, 'आज जब तुम घर जाना, तो अपने मां–बाप को सलाम करना ।' यह सुनकर लड़का मुस्कुराया और चला गया । अस्र के वक़्त तक कई लड़के तालाब तक आए, मैंने सबको यही नसीहत की । अस्र का वक़्त होने पर मैंने तालाब के पानी से वुज़ू किया । एक साफ़ जगह नमाज़ पढ़ी । मैं नमाज़ पढ़ कर उठा ही था कि गांव की ओर से कुछ लोग आते हुए दिखाई दिए । वे सब मेरी ही तरफ़ आ रहे थे । उनके साथ वे लड़के भी थे, जिनसे मैंने कहा था कि आज अपने मां–बाप को सलाम करना । वे सब मेरे पास आए । लड़कों ने मेरी ओर इशारा करके उन लोगों को बताया कि उन्होंने सलाम करने को कहा था । यह सुनते ही वे लोग मुझ से बड़ी मुहब्बत से मिले । बोले, 'हमने आप को लूट लिया, इस बात का हमें बड़ा दु:ख है । अब आप हमारे साथ गांव चलें । हम आप का सामान आप को वापिस कर देंगे । अगर आप ठहरना चाहें तो उसका भी इन्तिज़ाम कर देंगे । लेकिन आप यह समझ लें कि हम सब शूद्र ज़ात के लोग हैं और आप हमें ऊंची ज़ात के मालूम होते हैं । आपने इस लड़के को कुत्तों से बचाया, यह

आप का एहसान है । फिर यह कि आपने हमारे बच्चों को जो बात बताई वह हमें बहुत पसन्द आई । बच्चों ने हमें सलाम किया तो हमें बड़ी ख़ुशी हुई । हमने सोचा कि आप को सताना अच्छी बात नहीं, हमें आप से माफ़ी मांगनी चाहिए । हम सब इसीलिए आप के पास आए हैं ।

यह सुना तो मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया । मुझे पूरा यक़ीन हो गया कि अल्लाह ने मेरी दुआ सुन ली । मैंने उन लोगों से कहा, 'देखो भाइयो ! इंसान–इंसान सब बराबर हैं । सारे इंसान एक ही मां–बाप (आदम और हव्वा) की औलाद हैं, तो फिर किसी को नीचा और किसी को ऊंचा जानना बुरी बात है । अल्लाह के नज़दीक तो ऊंचा वह है, जो सब से ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हो । अच्छे काम करता हो और बुरी बातों से बचता हो ।'

मेरी यह बात सुन कर उनमें से एक बूढ़े आदमी ने मुझसे पूछा, 'क्या आप इस देश के वासी नहीं हैं ?' इस देश के लोग तो यह मानते हैं कि इंसानों में कुछ नापाक हैं । उनकों न छूना चाहिए और न उनका छुआ खाना–पीना चाहिए ।'

यह कह कर वह बूढ़ा आदमी ध्यान से मुझे देखने लगा । मैंने कहा, 'हां भाई ! मैं इस देश का रहने वाला नहीं हूं, मैं परदेसी हूं । घूमने–फिरने के लिए इस देश में आ गया हूं ।'

'तो क्या सचमुच आप छूत–छात नहीं मानते ?'

'नहीं भाई ! मैं ऐसी बातों को नहीं मानता । हमारा मज़हब ऐसी बात को ग़लत बताता है ।'

'आप का मज़हब क्या है ?'

''मेरा मज़हब इस्लाम है ।'

'क्या आप यह कर सकते हैं कि कुछ दिन हमारे गांव में रहें । हम सब आप के खाने–पीने और दूसरी चीज़ों का इन्तिज़ाम कर देंगे । आप को कोई परेशानी नहीं होगी । आप हमें और हमारे बच्चों को अपने मज़हब की बातें सिखा दें ।

इस्लाम की तालीम

मैं तो यह चाहता ही था । मैंने ख़ुदा से यही दुआ की थी । उन लोगों ने यह कहा तो मैं ख़ुश हो गया । मैंने उनके साथ रहना मन्ज़ूर कर लिया । उनके साथ गांव गया । उन लोगों ने मुझे उस आदमी के घर के पास ठहरा दिया, जो

तरकारियां बोया करता था । मुझ को मेरा सामान दे दिया गया और फिर सबने मिलकर देखते ही देखते वहां एक कुटी सी बना दी । मैं उस कुटी में रहने लगा ।

रहने लगा तो बड़ी मेहनत के साथ उन सबको दीन की बातें सिखाने लगा । दिन में लोग अपने–अपने कामों पर चले जाते । कुछ बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें और छोटे–छोटे लड़के गांव में रह जाते । मैं उनके पास जा बैठता, उनसे बातें करता । रात को लोग अपने–अपने कामों से फ़ारिग़ होकर मेरे पास जमा हो जाते और मैं उनसे खुल कर बातें करता । वे लोग बीच–बीच में जो सवाल करते, मैं आसान तरीक़े से जवाब देता । वे बहुत ख़ुश होते । जब वे सब मुझ से हिल–मिल गए तो मैंने सबसे पहले उन्हें अल्लाह के बारे में समझाया कि देखो दुनिया में जो कुछ है वह सब अल्लाह का पैदा किया हुआ है । वही अल्लाह सबका मालिक है । उसी अल्लाह ने हमारे आराम के लिए सब कुछ पैदा किया है । उसने हमारे लिए हवा बनाई । पानी बरसाया । तरह–तरह के फल–फूल, पेड़–पौधे पैदा किए और न जाने क्या–क्या बना दिया । उसके अलावा किसी में यह ताक़त नहीं कि ये चीज़ें बना सके। देखो कितना बड़ा एहसान किया है अल्लाह ने ! हमें उसका एहसान मानना चाहिए । उसी को अपना मालिक जानना चाहिए । उसी के हुक्मों पर चलना चाहिए । है न यह बात ?

'सच है, सच है । बड़ा एहसान है अल्लाह का । बड़ी अच्छी हैं ये बातें जो आप बता रहे हैं ।'

लोग मेरी बातें सुन कर बहुत ख़ुश होते। सिर हिला-हिला कर तारीफ़ करते। फिर जब मैंने यह बताया कि अल्लाह ने सारे इंसानों को एक आदम (अलैहि०) और एक हव्वा (अलैहि०) से पैदा किया है और सारे इंसान, इंसान होने के नाते बराबर हैं, तो इस बात से सब ऐसे ख़ुश हुए, जैसे उन्हें कोई बड़ी दौलत मिल गई हो। वे मुझ से आदम (अलैहि०) और हव्वा (अलैहि०) के बारे में पूछने लगे। मैंने उन्हें हज़रत आदम और हव्वा की कहानी सुनाई। यह कहानी उन्हें बहुत पसन्द आई। उन्होंने कई बार यह कहानी मुझसे सुनी। फिर मैंने अल्लाह के और नबियों के क़िस्से सुनाने शुरू कर दिए। ये क़िस्से सुनाते वक़्त मैं इस्लामी अक़ीदे बार-बार दोहराता और बार-बार बताता कि अल्लाह ने नबियों को दुनिया में इसलिए भेजा कि वे अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की मर्ज़ी बताएं और अल्लाह की मर्ज़ी पर चल कर दिखाएं। आख़िर में अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पैग़म्बर बना कर भेजा और आप ने भी अल्लाह के हुक्मों को उसके बन्दों तक पहुंचाया।

इस्लामी तालीम का असर

मुझे उस गांव में रहते हुए कई साल हो गए। मैंने इतनी मुद्दत में पाकी-नापाकी, हराम-हलाल के बारे में बहुत-सी बातें बताईं। ये बातें भी गांव वालों ने बहुत पसन्द कीं। वे साफ़-सुथरे रहने लगे। हराम चीजों से बचने लगे। एक दिन एक नौजवान ने मुझसे पूछा—

'परदेसी भाई ! ये बातें आपको कैसे मालूम हुईं ?' इस सवाल के जवाब में मैंने अल्लाह के आख़िरी रसूल (सल्ल०) के बारे में बताना शुरू कर दिया। आप (सल्ल०) का हाल सबने बड़े ध्यान से सुना। हुज़ूर (सल्ल०) का हाल बयान करते-करते जब मैंने ज़ैद बिन हारिस (रज़ि०) का क़िस्सा बयान किया कि वे ग़ुलाम थे। नबी (सल्ल०) ने उन्हें अपना बेटा बना लिया। फिर जब ज़ैद बड़े हुए तो अपने ही ख़ानदान में उनकी शादी करा दी, तो यह सुनकर गांव वालों को नबी (सल्ल०) से बड़ी मुहब्बत हो गई। इसके बाद जब मैंने बताया कि प्यारे नबी (सल्ल०) की पैरवी ही का नाम इस्लाम है, तो गांव के सारे लोग मुसलमान हो गए।

उनके मुसलमान होने के बाद मैंने वहां एक छोटी-सी मस्जिद बनवाई और उसी मस्जिद में सबको नमाज़ पढ़ाने और सिखाने लगा।

ऊंची ज़ात वाले

गांव का यह हाल बयान करने के साथ-साथ हमारा इब्ने बतूता एक और क़िस्सा लिखता है। इसके बाद यहां के राजाओं के बारे में बड़ी अच्छी राय ज़ाहिर करता है। वह लिखता है कि—

'जब हमने गांव में मस्जिद बना ली, तो उसकी ख़बर आस-पास के गांव में हुई। आस-पास के गांवों में ऊंची ज़ात के लोग रहते थे। उन्हें यह सुनकर बड़ा बुरा लगा कि उस गांव के सारे शूद्र मुसलमान हो गए और अब वे साफ़-सुथरे रहते हैं और आपस में बराबरी का बर्ताव करते हैं। ऊंची ज़ात के लोगों ने आपस में सलाह की और एक दिन हज़ारों की तादाद में उन्होंने उस गांव पर धावा बोल दिया। लूट-खसोट मचाने लगे। झोपड़ों में आग लगाने लगे। मुसलमान होने वालों को क़त्ल करने लगे। बेचारे निहत्थे मुसलमान गांव से भागने लगे। सबने जंगल में जाकर पनाह ली। मैं भी मुसलमानों के साथ था। जंगल में पहुंच कर मैंने सारे मुसलमानों को ढाढ़स बंधायी, 'घबराओ नहीं, अल्लाह पर भरोसा करो और यह बताओ, यहां का राजा कहां रहता है ? मुझे बताया गया कि यहां का राजा बारह

कोस के फ़ासले पर रहता है। मैंने अता-पता पूछा और कहा, 'अच्छा, मैं राजा के पास जाता हूं। मुझे उम्मीद है कि वह इंसाफ़ करेगा। जब तक मैं वापस न आऊं तुम लोग जंगल में ही रहना। किसी न किसी तरह अपनी जान बचाना और अल्लाह से दुआ करते रहना।'

यह कह कर मैं राजा से मिलने चल खड़ा हुआ। मैं अपनी धुन में चलता ही रहा। चलते-चलते राजधानी पहुंच गया। लोगों ने मुझे देखा तो पूछने लगे, 'कौन हो ? कहां से आए हो ? क्यों आए हो ?' मैंने लोगों को सारा हाल बताया, लेकिन किसी ने मेरे साथ हमदर्दी नहीं की।

राजा को दरख़्वास्त दी

मैंने राजा तक पहुंचने की बहुत कोशिश की, लेकिन मुझे राजा तक नहीं जाने दिया गया। एक दिन मैंने सुना कि राजा कल शिकार को जाने वाला है। यह सुनते ही एक तरकीब समझ में आ गई। मैंने एक दरख़्वास्त लिखी। दरख़्वास्त में गांव की बर्बादी का हाल लिखा और उस रास्ते पर छिप कर बैठ गया, जिस रास्ते से राजा शिकार को जाने वाला था। जब राजा वहां पर पहुंचा तो मैं झट निकल कर राजा के हाथी के सामने खड़ा हो गया और दोनों हाथ ऊंचे कर दिए। राजा ने हाथी को रुकवा दिया। मैंने राजा को दरख़्वास्त दी। राजा ने दरख़्वास्त पढ़ी। फिर कुछ देर मुझे देखता रहा। इसके बाद मुझे हाथी पर बिठा लिया और हाथी को मेरे गांव की तरफ़ मोड़ देने का हुक्म दिया। अब आगे-आगे राजा था, पीछे-पीछे उसकी सेना। तीन ही घण्टे के अन्दर हम सब गांव के पास पहुंच गए। मैं हाथी से उतरा और जंगल से गांव वालों को बुला लाया। राजा ने उनसे हाल पूछा। गांव वालों की तरफ़ से बब्बू बाबा ने इस तरह कहना शुरू किया—

बब्बू बाबा का बयान

'सरकार ! हम निरे जाहिल और उजड्ड थे। हम गन्दे रहते, मुरदार खाते, बुरी बातें करते, जुआ खेलते, शराबें पीते और आपस में लड़ते-झगड़ते। राहगीरों को लूट लिया करते। सरकार ! हम ऐसे ख़तरनाक डाकू थे कि आप के सिपाही हम से डरते। आप उन्हें हमारी गिरफ़्तारी के लिए भेजते, तो हम उन्हें मार भगाते। वे ज़्यादा होते तो हम जंगल में भाग जाते। आज तक कोई हमें पकड़ न सका। सरकार कैसे बुरे थे हम !

हम इसी हालत में थे कि ख़ुदा ने हम पर रहम फ़रमाया। यह परदेसी भाई यहां आया। हमने इसे भी लूट लिया, लेकिन उसने हम पर कुछ ऐसे एहसान किए कि हमारा दिल पसीजा। हम परदेसी भाई को अपने गांव में ले आए। परदेसी भाई ने हमें बताया कि हम सच बोलें, लड़ाई-झगड़े से दूर रहें और उस ख़ुदा को मानें जिसने सबको पैदा किया। भूत-प्रेत से डरना और टोने-टोटके करना छोड़ दें। परदेसी भाई ने हमें ख़ुदा को मानने का तरीक़ा बताया। उसने हमें नमाज़ें सिखाईं। हमने बुरी बातें छोड़ दीं। हम नमाज़ पढ़ने लगे। एक-दूसरे से मुहब्बत करने लगे। फिर जब हमने गांव में मस्जिद बनाई तो यह बात दूसरे गांव के ऊंची ज़ात के लोगों को अच्छी न लगी। उन्होंने हज़ारों की तायदाद में धावा बोल दिया। हम उनका मुक़ाबला न कर सके। भागकर जंगल में जा छिपे। ऊंची ज़ात वालों ने हमारे घरों को जला दिया। हमारा सामान लूट लिया। हमारी मस्जिद ढा दी। सरकार ! हम आपकी जनता हैं और आप हमारे माई-बाप हैं ! हम आप से इंसाफ़ चाहते हैं। हम यह भी जानते हैं कि यहां के राजा आप हैं न कि ऊंची ज़ात वाले।'

राजा का इंसाफ़

यह कह कर बब्बू बाबा चुप हो गए। राजा पर उनकी बात का बड़ा असर हुआ। सामने गांव था ही, वह सब तबाह व बर्बाद पड़ा था। राजा ने देखा, उसी जगह हुक्म लिखवाया कि सरकारी ख़जाने से गांव को दोबारा आबाद किया जाए। मस्जिद के लिए राजा ने पचास हज़ार रुपए अलग से मन्ज़ूर किए। इसके बाद दूसरा हुक्म यह लिखा कि सताने वालों को पकड़ कर जल्द से जल्द दरबार में हाज़िर किया जाए।

इसके बाद गांव वालों को राजा ने इस तरह ढाढ़स बंधाई, 'मैं अपनी प्रजा को अपनी औलाद के बराबर समझता हूं। मेरी औलाद मेरी नज़र में सब बराबर हैं। अब तुम लोग आराम से रहो। तुम्हारे साथ इंसाफ़ होगा। जिन लोगों ने तुम को सताया है, उन्हें सज़ा दी जाएगी।'

राजा से यह सुनकर सब उसे दुआएं देने लगे। राजा अपने लश्कर के साथ राजधानी लौट गया। इसके बाद जब फिर मस्जिद बन गई तो मैंने गांव वालों से कहा, 'अच्छा ख़ुदा हाफ़िज़ अब मैं चला।' गांव वालों ने बहुत रोका, लेकिन अब मेरा दिल उचाट हो चुका था। मैं दुनिया की सैर करने रवाना हो गया।

यह क़िस्सा लिखने के बाद हमारे इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामे में लिखा है कि इस देश के राजा बड़े इंसाफ़ पसन्द होते हैं। उनके दिल में रहम है। वे अपने

को जनता का बाप समझते हैं, लेकिन उनके इन्तिज़ाम में एक ख़राबी है। छोटे आदमी का राजा तक पहुंचना बड़ा मुश्किल होता है । राजा के दरबारी राजा तक बड़ी मुश्किल से पहुंचने देते हैं। इसीलिए राजा को जनता का हाल कम ही मालूम हो पाता है।

नौलखा हार

☆ चमड़े की थैली
☆ पहुंचना एक टापू में
☆ कुरआन की बरकत
☆ ऐं ! यह हार ! !

□

हमारे इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामे में अपनी ईमानदारी का एक ऐसा क़िस्सा लिखा है, जिससे साबित होता है कि अल्लाह तआला कभी-कभी इस दुनिया में भी भलाई का बदला देता है, वैसे बदले का दिन तो आख़िरत का दिन है। हमने अपने इब्ने बतूता का यह क़िस्सा पढ़ा तो हम बहुत ख़ुश हुए। उम्मीद है कि जो भी पढ़ेगा ख़ुश होगा और उसके ईमान में मज़बूती आएगी, लीजिए पढ़िए। हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि—

चमड़े की थैली

'एक बार मैं एक क़ाफ़िले के साथ सफ़र कर रहा था। क़ाफ़िला एक शहर में पहुंचा और उसमें जो लोग सौदागर थे, वे अपना-अपना माल लेकर बाज़ार की तरफ़ गए। मुझे तो सैर करने और नए-नए मुक़ाम देखने का शौक़ था। मैं शहर घूमने चला। मैं एक चौड़ी गली में जा रहा था कि एक किनारे चमड़े की एक थैली पड़ी दिखाई दी। मैंने जाकर उसे उठा लिया। खोल कर देखा तो उसमें नौलखा हार था। मैं समझ गया कि किसी सौदागर की थैली यहां गिर गई है। वह ज़रूर इसकी खोज में इस तरफ़ आएगा। यह सोच कर मैं उसी जगह छाया में बैठ गया। थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि एक बूढ़ा सौदागर बौखलाया हुआ आ रहा है और इधर-उधर नज़र डाल रहा है। मैं समझ गया कि थैली उसी की है। मैंने उससे पूछा—

'बड़े मियां आप क्यों परेशान हैं और क्या ढूंढ रहे हैं ? बड़े मियां यह सुन कर खड़े हो गए। उन्होंने मुझे देखा फिर बोले, 'मेरी एक थैली कहीं गिर गई है, उसी को तलाश कर रहा हूं।'

'थैली किस चीज़ की है ?' मैंने पूछा। बताया कि चमड़े की।

'और उसमें क्या है ?'

'बेटा उसमें एक नौलखा हार है।'

मैंने यह सुना तो थैला दिखाते हुए कहा, 'देखिए, यह तो नहीं है ?'

'यही है, यही है, ऐ शरीफ़ नौजवान !' बूढ़ा सौदागर ख़ुशी से फूला न समाया।

मैंने थैली उसे दे दी और उठकर जाने लगा । बूढ़े सौदागर ने मुझे रोका और पांच सौ दिनार (सोने के सिक्के) इनाम के तौर पर मुझे देने लगा । मैंने कहा कि अगर मुझे रुपयों का लालच होता तो थैली ही आपको क्यों देता, मैंने तो प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की इस हदीस पर अमल किया है कि अगर कोई कहीं गिरी पड़ी चीज़ पाए तो उसके मालिक तक पहुंचा दे । मैं अल्लाह का शुक्र अदा करता हूं कि उसने इस नेकी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और इतनी बड़ी रक़म पाकर भी मेरे दिल में बेईमानी नहीं आई । मैं इस नेकी का फल अपने अल्लाह ही से लूंगा ।'

सौदागर ने यह सुना तो बहुत ख़ुश हुआ । ख़ुश होकर फिर कहने लगा कि 'नीयत का सवाब तो तुमको मिलेगा ही । अब तुम ये पांच सौ दिनार भी रखो, सफ़र में काम आएंगे ।' लेकिन मैंने फिर इनकार कर दिया । अब वह कहने लगा, 'अच्छा तो ऐ नौजवान ! तुम मेरे साथ मेरे वतन चलो, मेरे वतन चल कर तुम ख़ुश हो जाओगे । रास्ते में जो ख़र्च होगा, वह सब मेरे ज़िम्मे रहा ।'

मैंने सौदागर का शुक्रिया अदा किया । फिर कहा कि इस वक़्त तो मैं हिन्दुस्तान की सैर को जा रहा हूं । अल्लाह ने चाहा तो वहां से आपके यहां आऊंगा । मैं आप जैसे बुज़ुर्ग से ज़रूर मिलूंगा ।

'इन्शा-अल्लाह !' बूढ़े की ज़बान से निकला । उसने मुझ से फिर वायदा लिया । इसके बाद दस दिन मैं उस शहर में रहा । दसवें दिन एक क़ाफ़िले के साथ हिन्दुस्तान की तरफ़ चल दिया । हिन्दुस्तान में कई साल रहा । वह देश इतना अच्छा लगा कि मेरा यहां से जाने को दिल नहीं चाहता था, लेकिन वह जो शौक़ था न ! कि—

सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल ज़िन्दगानी फिर कहां,
ज़िन्दगानी भी रही तो नौजवानी फिर कहां ।

मैं जल्द से जल्द दुनिया का ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा देखना चाहता था । जो मज़ा मुझे सफ़र में आता वह मुझे कहीं न मिलता था ।

पहुंचना एक टापू में

तो भाई मैं एक दिन हिन्दुस्तान से रवाना हो ही गया । हिन्दुस्तान से नावों का एक बेड़ा टापू की तरफ़ जा रहा था । मैं उसी के साथ हो लिया । हमारा जहाज़ी बेड़ा कई दिन तक तो आराम से समुद्र में चलता रहा, फिर हवा कुछ तेज़ हो गई और फिर और तेज़ हुई और फिर तो ऐसी तेज़ हुई कि तूफ़ान आ

गया । इस तूफ़ान में पूरा बेड़ा तबाह व बर्बाद हो गया । जिस नाव पर मैं था वह उलट गई । लोग डूब गए । मैं एक तख़्ते का सहारा लेकर एक तरफ़ बहने लगा । दूसरे दिन तख़्ता सूखे में लगा । मैं तख़्ते से उतरा । सोचने लगा कहां जाऊं । फिर मैंने एक तरफ़ कौवे और चीलें उड़ती देखीं । मैं समझ गया, हो न हो नज़दीक ही कोई बस्ती है । मैं उसी तरफ़ चल दिया । थोड़ी दूर पर सचमुच बस्ती नज़र आई । बस्ती में एक मस्जिद के मीनार देखे । मुझे यक़ीन हो गया कि यह मुसलमानों की बस्ती है । मैं ख़ुशी-ख़ुशी मस्जिद की तरफ़ चला । ज़ुहर का वक़्त था । मैं मस्जिद पहुंचा । मैंने ग़ुस्ल किया । कपड़े धोए, सुखाए और पहन लिए । फिर दो रकअत की नीयत बांध कर खड़ा हो गया । नफ़्ल नमाज़ें पढ़ कर अल्लाह का शुक्र अदा किया कि उसने तूफ़ान से जान बचा ली । फिर मैं सोचने लगा, देखिए इस बस्ती में कैसी गुज़रती है । मैं यह सोच ही रहा था कि नमाज़ी आने लगे । मैंने सबके साथ नमाज़ पढ़ी । नमाज़ पढ़ कर एक तरफ़ बैठ गया और क़ुरआन मजीद की तिलावत करने लगा । लोगों ने क़ुरआन सुना तो मेरे पास आए, बोले, 'क्या आप को क़ुरआन याद है ?'

'जी हां ! मुझ को पूरा क़ुरआन याद है ।'

क़ुरआन की बरकत

मुझ से यह सुना तो बस्ती के लोग बोले, 'अच्छा तो आप इसी मस्जिद में ठहरें । हम आप के रहने का इन्तिज़ाम किए देते हैं । जब तक आप यहां रहें हमारे बच्चों को क़ुरआन पढ़ना सिखाएं ।' मैंने मन्ज़ूर कर लिया । दूसरे ही दिन से बच्चों को पढ़ाने लगा । मैंने पढ़ाने के साथ-साथ बच्चों को लिखना भी सिखाया । यह देखकर वहां के लोग मेरी बड़ी इज़्ज़त करने लगे ।

एक दिन की बात है । बस्ती के कई बुज़ुर्ग लोग मेरे पास आए और कहने लगे, 'तुम बड़े शरीफ़ नौजवान हो । तुम इस्लामी तालीम पाए हो । हमारी बस्ती में एक यतीम लड़की है । उसका बाप मर चुका है । वह अल्लाह से दुआ किया करता था कि ऐ ख़ुदा ! मेरी लड़की की शादी पढ़े-लिखे किसी दीनदार नौजवान से कर दे । वह बेचारा इसी तमन्ना को लिए उस दुनिया को सिधारा, जहां से कोई नहीं लौटा । हम सबने आप को देखा तो बूढ़े की बात याद आ गई । अगर आप पसन्द करें तो आप की शादी उस लड़की से करा दें । हम आप को यक़ीन दिलाते हैं कि लड़की बहुत नेक और ख़ूबसूरत है ।'

ऐं ! यह हार ?

मैंने सबका शुक्रिया अदा किया । मैंने उनकी बात मान ली और उसी दिन मेरी शादी उस यतीम लड़की से हो गई । फिर जब मेरी बीवी मेरे सामने आई, तो मैंने उसके गले में वही नौलखा हार देखा जो अब से कई साल पहले मैंने ज़मीन पर पड़ा पाया था । मैं बहुत हैरान हुआ । मेरी बीवी ने मेरी हैरानी देखी तो हाल पूछा । मैंने बस्ती वालों को बुलाया और सारा हाल कहा । लोगों ने मुझे बताया कि यह लड़की उसी सौदागर की है । वह सौदागर रात-दिन आप को याद किया करता था और कहा करता था कि अगर वह ईमानदार नौजवान यहां आ गया तो मैं अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दूंगा । वह तो अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उसकी दुआ कुबूल हो गई । अब तुम दोनों यहां आराम से रहो । तुमको यह शादी मुबारक हो ! लोग दुआएं देकर चले गए । मैं अपनी बीवी के साथ तीन साल तक वहां रहा । तीन साल के बाद मेरी बीवी बीमार पड़ी । बहुत दवा इलाज किया, लेकिन वह ठीक न हो सकी । आख़िर मुझ को अकेला छोड़कर चल बसी । उसके मरने के बाद उसकी सारी जायदाद का मालिक मैं हुआ । नौलखा हार भी मेरे क़ब्जे में आया । बीवी के मरने के बाद मेरा दिल उचाट हो गया । मैंने सारा सामान बेच डाला । नौलखा हार कई लाख में बिका । मैंने सारी रक़म बस्ती वालों में बांट दी और थोड़ी-सी अपने पास रख ली । इसके बाद जब उस बस्ती के सौदागर कारोबार के लिए चले तो मैं भी उनके साथ हो लिया ।

यह क़िस्सा लिख कर हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि इंसान को हर वक़्त और हर जगह ईमानदारी से काम लेना चाहिए । ईमानदारी से अल्लाह ख़ुश रहता है । आख़िरत में अल्लाह ईमानदार आदमी को बहुत बड़ी इज़्ज़त देगा । कभी-कभी तो ऐसा होता है कि भलाइयों का कुछ बदला अल्लाह तआला इस दुनिया में भी दे देता है, ताकि लोग नेकियों की तरफ़ बढ़ें और ख़ुदा को याद रखें । ख़ुदा को याद रखने ही में इंसानों की भलाई है । अल्लाह तआला सबको नेकी की तौफ़ीक़ दे और सबका ईमान सलामत रखे ।

वज़ीर बनना

अ. तीन पुतले

☆ ख़ूबसूरत शहर और पार्क

☆ पुतलों का भेद

☆ समझे कैसे ?

ब. वज़ीर की तलाश

☆ बैल गाड़ी वाला

☆ वज़ीर चुन लिया

□

(अ) तीन पुतले

हमारे इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामे में अपने दो क़िस्से ऐसे लिखे हैं जो हमने कहानियों में भी सुने हैं और किताबों में भी पढ़े हैं। मालूम ऐसा होता है कि कहानी बनाने वालों ने हमारे इब्ने बतूता के सफ़रनामे से दोनों बातें ली हैं और उन्हें कहानी की तरह लिख डाला है। इन दोनों बातों से पता चलता है कि हमारे इब्ने बतूता को दो बार वज़ीर बनने का मौक़ा मिला। लेकिन भाई ! वह तो घूमने फिरने का रसिया था। एक जगह उससे बैठा ही न जाता था। वज़ीर होकर भी सैर व सफ़र की मज़ेदारियां न भूला और कुछ ही दिन वज़ीर रहकर चल दिया। वह दो बार किस तरह वज़ीर बना ? सुनिए, हमारा इब्ने बतूता अपने सफ़रनामे में लिखता है कि—

ख़ूबसूरत शहर और पार्क

एक बार मैं सैर करता और घूमता हुआ एक शहर में पहुंचा। वह बहुत बड़ा शहर था। शहर को इस तरह बसाया गया था कि पहले तो बीचों-बीच एक चौराहा बनाया गया। इसके बाद चौराहों से जो रास्ता जिधर गया, उसके आस-पास लोगों को बसाया। इस तरह शहर की ख़ूबसूरती तो बढ़ी ही, फ़ायदा यह हुआ कि चौराहे पर जो जगह निकली वहां पर एक गोल पार्क बना दिया गया। यह पार्क इतना ख़ूबसूरत था कि ऐसा पार्क कहीं देखने में नहीं आया। शहर वालों के लिए इस पार्क तक पहुंचना भी बहुत आसान था। चौराहों के किसी भी रास्ते पर चल कर पार्क मिल जाता और एक बच्चा भी आसानी से पहुंच जाता।

जब मैं उस शहर में घुसा तो सीधी सड़क पर आगे बढ़ते-बढ़ते पार्क में पहुंच गया। ख़ूबसूरत पार्क देखकर मेरा दिल ख़ुश हो गया। वहीं एक जगह छाया में बैठ कर सुस्ताने लगा। अपने थैले से सूखे मेवे निकाले, खाकर पानी पीने फ़ुव्वारे पर गया तो देखा दूसरी तरफ़ चबूतरा बना है और उस पर तीन पुतले रखे हैं। पानी पीकर मैं पुतलों को देखने लगा। कुछ और लोग भी पुतलों को देख रहे

थे । मैंने देखा कि तीनों पुतले एक-दूसरे से बिल्कुल मिलते-जुलते थे। उनके पास चबूतरे की दीवार पर एक तख़्ती लगी थी । तख़्ती पर लिखा था । 'जो यह बता दे कि इन पुतलों में सबसे अच्छा कौन-सा है । दूसरे नम्बर का कौन-सा है और घटिया कौन-सा है तो बादशाह उसे अपना वज़ीर बना लेगा ।'

चबूतरे के पास चार सन्तरी खड़े थे । मैंने उनसे बातचीत की । मालूम हुआ कि इस शहर के बादशाह के वज़ीर की मौत हो चुकी है । वह वज़ीर बहुत समझदार और नेक था । जब वह मरने लगा तो बादशाह ने उससे पूछा कि आपके बाद किसको वज़ीर बनाएं ? तो उस वज़ीर ने बादशाह को ये पुतले दिए । इनमें जो सबसे अच्छा है और जो घटिया है यह भी बादशाह को बता दिया । फिर कहा कि मेरे बाद जो इन पुतलों का भेद बता दे उसी को वज़ीर बनाया जाए ।

संतरियों ने यह भी बताया कि इन पुतलों को परखने और इनका भेद मालूम करने दूर-दूर से लोग आए, लेकिन अब तक कोई पुतलों का भेद न पा सका ।

पुतलों का भेद

यह सुना तो मैंने कहा, 'इज़्ज़त देना और किसी का दर्जा बढ़ाना तो ख़ुदा के हाथ में है । अल्लाह जिसको सूझ-बूझ दे देता है वह बड़ी आसानी से मुश्किल-से-मुश्किल बात समझ लेता है ।' यह कह कर मैं भी पुतलों को देखने लगा । तीनों पुतले हर बात में बिल्कुल एक से थे । मैंने पुतलों को तौला । वज़न में तीनों पुतले बराबर निकले । मैंने पुतलों के हाथ-पैर वग़ैरह नापे । नाप में कुछ भी फ़र्क़ न था । रंग-रूप देखा भाला । रंग रूप में भी हवा बराबर कमी या ज़्यादती न थी । मुझे बड़ी हैरत हुई । दिल में कहा, 'हर बात में तो पुतले मिलते-जुलते हैं । फ़र्क़ क्या है ?' यह कह कर मैंने पुतलों को उन की जगह रख दिया और सोचने लगा कि क्या फ़र्क़ हो सकता है ? मैं टकटकी लगाए पुतलों को देख रहा था कि अचानक मेरी नज़र एक पुतले के कान पर पड़ी । पुतले के कान में एक सूराख़ था । मैंने दूसरे पुतलों के कान देखे । दूसरे पुतलों के कानों में भी सूराख थे । ये छेद भी बराबर थे । अब तो मैं परेशान हो गया । पुतलों को छोड़कर उठने ही वाला था कि अल्लाह ने अचानक मेरे दिल में एक बात डाल दी । मैंने एक पुतले के कान में फूंक मारी । दूसरे पुतले के कान में भी फूंका और तीसरे पुतले के कान में भी और फिर मैं ख़ुशी के मारे उछल पड़ा । मैंने पुकारा—'मैंने भेद पा लिया, मैंने भेद पा लिया ।'

जो लोग वहां खड़े थे, सब मेरी ओर देखने लगे । चारों सन्तरी भी मेरी ओर

मुड़े । मैंने उनसे कहा, 'जाओ अपने बादशाह से कहो कि एक आदमी आया है, वह पुतलों का भेद समझ गया है । वह आपको बताएगा कि कौन सबसे अव्वल दर्जे का है और कौन दूसरे दर्जे का और कौन सबसे घटिया है ।'

एक सन्तरी बादशाह के पास दौड़ा हुआ गया । बाक़ी सन्तरियों ने ख़ातिरदारी शुरू कर दी । बादशाह ने यह सुनते ही मुझे बुलवा लिया । उसी वक़्त दरबार का हुक्म दिया गया । दरबार लगा । सरकारी लोग अपनी-अपनी जगह आकर बैठे । शहर के और बहुत से लोगों ने सुना कि एक आदमी पुतलों का भेद बतायेगा तो वे भी आकर जमा हो गए । बादशाह ने मुझसे कहा, 'पुतलों का भेद बताइए और वज़ीर का दर्जा पाइए ।'

बादशाह का हुक्म पाकर मैंने एक पुतला उठाया । उसके कान में फूंका । बादशाह को बताया, 'हुज़ूर ! यह पुतला बड़ा क़ीमती है । अगर इसे हीरों से तौला जाए तो भी इसकी क़ीमत कम होगी ।'

'इस पुतले में क्या ख़ूबी है ?' बादशाह ने मुझसे पूछा । मैंने बताया, 'देखिए, मैंने इस पुतले के कान में फूंक मारी । मेरी फूंक इसके पेट में चली गई । इससे मैंने समझा कि यह पुतला उस आदमी की मिसाल है, जिससे कोई भेद की बात कही जाए तो वह छुपाए रखे और किसी से न कहे । हुज़ूर ऐसा आदमी बड़ा बल्कि बहुत बड़ा होता है । ऐसा आदमी किसी का भेद किसी से नहीं कहता है । ऐसे आदमी की सभी इज़्ज़त करते हैं । उससे अपनी बातों में सलाह लेते हैं । बादशाह ऐसे आदमी को अपना वज़ीर बनाते हैं और ज़्यादा से ज़्यादा तनख़्वाह देते हैं । इसीलिए मैं कहता हूं, यह पुतला अव्वल नम्बर का है ।'

मेरा यह जवाब सुन कर बादशाह मुस्कुराया । बोला, 'अच्छा दूसरे नम्बर का पुतला कौन-सा है ?' मैंने दूसरा पुतला उठाया । उसके कान में फूंका । मेरी फूंक इस पुतले के कान में होकर दूसरे कान से निकल गई । मैंने कहा, 'यह देखिए हुज़ूर ! यह पुतला दूसरे नम्बर का है । यह पुतला उस आदमी की मिसाल है, जो बात को इस कान से सुनता है और उस कान से उड़ा देता है । ऐसे आदमी से न नुक़्सान का डर होता है और न ही उससे कोई फ़ायदा ही होता है । उसकी क़ीमत क्या बताई जाए, जो चाहे दे दीजिए, वही उसके लिए बहुत है ।'

बादशाह मेरे इस जवाब पर भी मुस्कुराया । इसके बाद मैंने तीसरा पुतला उठाया । उसके कान में फूंका तो मेरी फूंक उसके कान में होती हुई उसके मुंह से निकल गई । मैंने बादशाह से कहा, 'यह पुतला उस आदमी की मिसाल है, जिससे कोई भेद की बात कहिए तो वह भेद को छुपा ही नहीं पाता, झट दूसरों से कहने लगता

है । ऐसे आदमी को लोग कहते हैं कि यह पेट का हल्का है । ऐसा आदमी बहुत गिरा हुआ होता है । जहां जो बात सुनता है, बिना जांचे-परखे हर एक से कहता फिरता है । ऐसा आदमी झगड़ालू भी होता है, बल्कि उसे झगड़े की जड़ कहना चाहिए । किसी की इज़्ज़त व आबरू का उसे कुछ भी ख़्याल नहीं होता । ऐसे आदमी को सारे लोग बुरा समझते हैं । कोई उसे मुंह नहीं लगाता । ऐसा आदमी दो कौड़ी का भी नहीं । इसीलिए मैं समझता हूं कि यह तीसरा पुतला सबसे घटिया है ।'

समझे कैसे ?

बादशाह मेरे जवाब सुनकर बहुत ख़ुश हुआ । उसने मुझ से कहा कि बड़े-बड़े समझदार लोगों ने इन पुतलों को जांचा-परखा, लेकिन वे भेद न पा सके । तुम तो ज़्यादा उम्र के भी नहीं, तुम्हारी समझ में भेद कैसे आ गया । मैंने जवाब दिया, 'हुज़ूर ! यह अल्लाह की मेहरबानी है । जब वह किसी के दिल में बात डाल देता है तो वह आदमी समझदार कहा जाने लगता है । तो मैं इसे अल्लाह की मेहरबानी ही समझता हूं । मगर आप पूछते हैं तो मैं बताता हूं । सच पूछिए तो मैं उनके परखने में हिम्मत हार चुका था । अचानक मुझे प्यारे नबी (सल्ल०) के एक छोटी उम्र के साथी हज़रत अनस (रज़ि०) की एक बात याद आ गई और फिर पुतलों का भेद समझना मेरे लिए आसान हो गया ।

हुज़ूर ! एक बार प्यारे नबी (सल्ल०) ने हज़रत अनस (रज़ि०) को अपने पास बुलाया । वे बच्चों के साथ खेल रहे थे । प्यारे नबी (सल्ल०) ने बुलाया तो खेल छोड़ कर आप के पास आ गए । प्यारे नबी (सल्ल०) ने उनसे कुछ कहा और एक आदमी के पास भेज दिया । हज़रत अनस (रज़ि०) उस आदमी के पास गए और प्यारे नबी (सल्ल०) का काम करके चले आए । फिर अपने घर गए तो मां ने कहा, इतनी देर कहां रहे ? जवाब दिया कि प्यारे नबी (सल्ल०) के एक काम से गया था । मां ने पूछा, 'क्या काम था ?' हज़रत अनस (रज़ि०) ने कहा, 'प्यारी अम्मी ! वह एक भेद है । मैं हुज़ूर (सल्ल०) का भेद आप से भी न कहूंगा ।'

यह सुन कर मां ने बेटे को बहुत शाबाशी दी और कहा, 'हरगिज़ न कहना, हरगिज़ न कहना । यह प्यारे नबी (सल्ल०) का भेद है ।' हुज़ूर जब से मैंने यह बात पढ़ी है, तब से मैं समझता हूं कि भेद का छुपाना बहुत अच्छी बात है और भेद खोल देना बड़ी बुरी बात है । मुझे यही बात याद आ गई और अल्लाह ने

मेरे लिए इन पुतलों का भेद समझना आसान कर दिया ।'

बादशाह ने कहा, 'सचमुच इन पुतलों में यही फ़र्क़ है ।' यह कह कर बादशाह ने मुझ को अपना वज़ीर बना लिया । बादशाह के पास मैं तीन साल रहा । फिर मेरा दिल उचाट हो गया । उचाट यूं हो गया कि मैं ठहरा सफ़र का शौक़ीन और वहां दिन-रात काम में जुटा रहना पड़ता था । मैंने बादशाह से कहा कि मैं घर जाना चाहता हूं और छुट्टी लेकर वहां से चल दिया । जब बादशाह की सल्तनत से बाहर निकल गया तो एक ख़त लिख कर बादशाह की ख़िदमत में भेज दिया कि अब मैं हाज़िर न हो सकूंगा ।

यह है हमारे इब्ने बतूता के वज़ीर बनने का पहला क़िस्सा दूसरा क़िस्सा वह इस प्रकार लिखता है—

(ब) वज़ीर की तलाश

'मैंने बादशाह ख़ुश इक़बाल के बारे में सौदागरों से सुना था । सौदागरों ने बताया था कि बादशाह ख़ुश इक़बाल बड़ा ही अच्छा बादशाह है । उसके राज्य में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं । उसके राज्य में चोरी, डाका और बुरी बातों का दूर—दूर तक पता नहीं । जगह-जगह मुसाफ़िर ख़ाने और सराएं हैं । देश भर में सड़कों का जाल बिछा है । बादशाह ख़ुश इक़बाल का यह हाल सुना तो शौक़ पैदा हुआ कि चल कर उस राज्य की भी सैर करनी चाहिएं । मैं एक क़ाफ़िले के साथ उस देश में पहुंचा । एक सराय में अपना सामान रखा, फिर शहर देखने निकल खड़ा हुआ । मैंने उस दिन शहर में बड़ी चहल-पहल देखी । लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहने एक ओर को जा रहे थे । मैंने पूछा, 'क्या बात है ?' लोगों ने बताया कि आठ-दस दिन हुए बादशाह के वज़ीर की मौत हो गई । वज़ीर बड़ा नेक और समझदार था । उसने देश का बड़ा अच्छा इन्तिज़ाम किया था । वह बादशाह को बड़ी अच्छी सलाह दिया करता था । बादशाह को उसी तरह के वज़ीर की तलाश है । आज बादशाह अपने लिए एक वज़ीर चुनेगा । उसनें ऐलान करा दिया है कि जो लोग वज़ीर बनना चाहते हैं, वे बादशाह के बाग़ में जमा हो जाएं । लोग इसीलिए बादशाह के बाग़ जा रहे हैं । वे लोग भी जा रहे हैं जो वज़ीर बनना चाहते हैं और बहुत से ऐसे भी हैं जो सिर्फ़ तमाशा देखने जा रहे हैं ।

बैलगाड़ी वाला

यह सुना तो मेरा जी चाहा कि चल कर देखूं, क्या होता है ? बादशाह वज़ीर को किस प्रकार चुनेगा ? मैंने बादशाह के बाग़ का पता पूछा, मालूम हुआ कि बादशाह का बाग़ शहर से तीन कोस उत्तर की ओर है । मैं उसी ओर चल दिया । पैदल और सवारियों पर लोग उसी ओर भागे चले जा रहे थे । मैं अभी थोड़ी दूर चला था, बस यही कोस डेढ़ कोस, क्या देखता हूं कि सड़क के एक तरफ़ एक गड्ढे में एक किसान की बैलगाड़ी फंसी पड़ी है । किसान बेचारा खड्ड से गाड़ी निकालने की भरपूर कोशिश कर रहा है, मगर अकेले उससे कुछ बनाए नहीं बनता । वह मदद के लिए लोगों को पुकार रहा है, मगर लोगों को आज फ़ुरसत कहां, वे वज़ीर बनने या तमाशा देखने बग-टुट चले जा रहे थे ।

किसान बार-बार ज़ोर लगाता, बैलों को भी डांटता मगर कुछ फ़ायदा न होता । वह थक कर गाड़ी के इधर-उधर देखने लगता । मुझे किसान पर बड़ा तरस आया । मैं उसके पास गया । मैंने उससे कहा, 'अल्लाह के बन्दे ! जाकर गाड़ी पर बैठ, बैलों को संभाल, मैं पहिए को पकड़ कर ज़ोर लगाता हूं, ख़ुदा ने चाहा तो गाड़ी निकल जाएगी ।' किसान ने मेरी तरफ़ देखा, जाकर ग़ाड़ी पर बैठा । नीचे से मैंने पहिया पकड़ कर भरपूर ज़ोर लगाया, उधर उसने बैलों की दुम पकड़ कर 'तिग तिग' की आवाज़ लगाई तो पहली ही बार में गाड़ी खड्ड से बाहर निकल गई और सड़क पर आ गई । इस कोशिश में मेरे कपड़े ख़राब हो गए । खड्ड में कीचड़ थी । उस कीचड़ में उतरने और पहिया पकड़ कर खींचने में मेरे कपड़े लतपत हो गए । अब मैं सोचने लगा कि शहर वापिस जाऊं और कपड़े बदलूं । मैं वापिस होने लगा तो किसान ने कहा, 'भाई ! कहां जा रहे थे और अब कहां वापिस हो रहो हो ?' मैंने बताया कि 'मैं बादशाह के बाग़ जा रहा था, अब कपड़े ख़राब हो गए हैं, इसीलिए वापिस जा रहा हूं ।' किसान ने कहा, 'मैं भी उसी ओर जा रहा हूं, मेरे पास दूसरे कपड़े हैं । आप वे कपड़े पहन लें, गाड़ी पर बैठ जाएं, चल कर तमाशा देखें ।'

किसान की बातें सुनीं तो मैं उसका मुंह तकने लगा । वह ऐसी अच्छी बातें कर रहा था, जैसे कोई बड़ा आदमी हो और बाद में ग़रीब हो गया हो, लेकिन मिज़ाज वही रहा हो । मैंने उसकी बात मान ली । कपड़े बदले । गाड़ी पर बैठा और गाड़ी सड़क पर चल दी । थोड़ी ही देर में गाड़ी बादशाह के बाग़ के पास पहुंची । किसान ने एक जगह गाड़ी रोकी, उतरा । उसके साथ मैं भी उतर पड़ा । उसने बैलों को एक पेड़ की जड़ से बांध दिया । फिर मुझसे बोला, 'आइए बाग़

के अन्दर चलें ।' अन्दर जाकर देखा तो सारा बाग़ लोगों से भरा पड़ा था । बहुत से लोग आगे पड़ी हुई कुर्सियों और बेंचों पर बैठे हुए थे । बहुत से लोग खड़े थे । बादशाह अभी आया नहीं था । सामने ऊंचाई पर बादशाह का तख़्त था । उस तख़्त के आप-पास बड़े-बड़े लोग बैठे थे । लोग बादशाह के आने का रास्ता देख रहे थे । किसान मुझे एक ऐसी ओर ले चला कि उधर से तख़्ते शाही तक जाना आसान था । वह मुझे तख़्त के पास ले गया । मुझे एक ख़ाली कुर्सी पर बैठा दिया और ख़ुद तख़्त की तरफ़ बढ़ा । किसान को तख़्त की ओर बढ़ते देख कर सिपाही दौड़ पड़े और उन्होंने उधर जाने से किसान को रोका । किसान यह देख कर मुस्कुराया । उसने सिर की पगड़ी खोली तो लोगों ने देखा कि पगड़ी के अन्दर शाही ताज है । फिर उसने जेब में हाथ डाला । जेब से एक अंगूठी निकाली । उस अंगूठी के नग पर बादशाह ख़ुश इक़बाल का नाम लिखा हुआ था । वह अंगूठी उसने उंगली में पहन ली । ताज और अंगूठी को देख कर सब लोगों ने पहचान लिया कि यही बादशाह है । अब कोई न बोला । किसान जाकर तख़्त पर बैठ गया और मैं हक्का-बक्का होकर बादशाह को देखने लगा ।

वज़ीर चुन लिया

तख़्त पर बैठ कर बादशाह ने कहा, 'मैंने अपना वज़ीर चुन लिया । मैं ऐसे आदमी को अपना वज़ीर बनाना चाहता था, जो दूसरों की ख़िदमत करने में अपने नुक़सान की परवाह न करे । ऐसा आदमी मुझे मिल गया ।' यह कह कर बादशाह ने मुझे इशारा किया कि तख़्त के पास आऊं । मैं तख़्त के सामने जा खड़ा हुआ । बादशाह बोला, 'यह देखो, यह है मेरा वज़ीर, जिसे मैंने किसान बन कर चुना । मैंने तुम सबसे मदद चाही कि आकर गाड़ी को खड्ड से निकलवा दो । तुम में से किसी से न हो सका कि थोड़ी देर के लिए मेरे पास आ जाता । हां, इसने आकर मेरा हाथ बटाया । इसको कुछ भी लालच न था । मैं समझता हूं कि यह वज़ीर होगा तो मेरी जनता के सुख और आराम का ख़्याल रखेगा ।'

यह कह कर बादशाह ने तख़्त के दाहिनी ओर पड़ी हुई कुर्सी पर मुझे बैठा दिया । सारे लोगों ने ख़ुश होकर नारा लगाया, 'नेक वज़ीर ज़िन्दाबाद ! हुकूमत पाइन्दाबाद !'

लीजिए, मैं वज़ीर हो गया । मैं चार साल और सात महीने वज़ीर रहा । इसके बाद मेरी पसली फड़की । मैं सैर व सफ़र के लिए बेचैन होने लगा । बादशाह से छः माह की छुट्टी ली कि वतन हो आऊं । बादशाह ने छुट्टी दे दी । जब

मैं वहां से चला तो बादशाह ने बहुत से ग़ुलाम साथ कर दिए और बहुत-सा सामान मेरे लिए लदवा दिया। जब मैं उस सामान के साथ बादशाह के राज्य से बाहर निकल गया तो सारा सामान गुलामों में बांट दिया और उनसे कहा, 'जाओ, अब तुम सब लौट जाओ।'

गुलामों ने मुझे सलाम किया और चले गए। फिर मैं उस देश की ओर नहीं गया। एक बार एक क़ाफ़िला उधर जा रहा था। क़ाफ़िले के सरदार के ज़रिए एक ख़त बादशाह की ख़िदमत में भेज दिया कि अब मैं न आ सकूंगा।

वज़ीर बनने के दोनों क़िस्से लिख कर हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि अगर अल्लाह की मदद किसी के साथ हो तो अचानक वह कुछ पा जाता है, जो वह सोच भी नहीं सकता। हमें चाहिए कि हम हर समय अल्लाह से उसकी मदद चाहते रहें। सब कुछ उसी के पास है। इसके बाद इब्ने बतूता ने क़ुरआन की यह बात लिखी है—

'हे अल्लाह, बादशाहत के मालिक! तू जिसे चाहता है बादशाहत देता और जिससे चाहता है बादशाहत छीन लेता है। तू जिसे चाहता है इज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है ज़िल्लत देता है। तेरे ही हाथ में भलाई है। बेशक तू हर चीज़ की क़ुदरत रखता है।'

□

एक आयत का करिश्मा

☆ डाक्टर लुक़्मान

☆ मुलाक़ात का शौक़

☆ डाक्टर का मकान

☆ मुलाक़ात

☆ आप किस तरह मुसलमान हुए ?

☆ मुहम्मद (सल्ल०) के पैग़म्बर होने का सुबूत

□

हमारा इब्ने बतूता लिखता है—

'मैंने सोचा तो यह था कि जितने दिनों जहाज़ किनारे पर ठहरा रहेगा, बस उतने ही दिनों मैं टापू के किनारे वाले इलाक़ों की सैर कर लूंगा । जहाज़ में कुछ ख़राबी आ जाने की वजह से वह टापू के किनारे पर रुक जाने पर मजबूर हो गया था । जब मैं जहाज़ से किनारे पर उतरा तो टापू के एक डाक्टर लुक़मान का नाम सुनने में आया । हर एक को उसकी तारीफ़ करते पाया । डाक्टर लुक़मान को कोई कहता, 'वह फ़रिश्ता है ।' कोई कहता, 'डाक्टर सच्चाई का पुतला है ।' किसी से सुना कि डाक्टर से बढ़ कर किसी को भला मानुस नहीं देखा ।' किसी का कहना था कि डाक्टर सच कहने में किसी से नहीं डरता। किसी की ज़बान पर था कि अल्लाह के बन्दों की ख़िदमत जैसी डाक्टर लुक़मान करता है, दूसरा कर ही नहीं सकता । मेहमानों की ख़ातिरदारी तो ऐसी करता है कि जवाब नहीं ।' कोई यूं तारीफ़ करता कि 'बीमारों से वह इलाज और दवाओं की क़ीमत नहीं मांगता । जिसका जी चाहता है दवा की क़ीमत दे देता है । कैसा ही बीमार हो, कितनी ही दूर का हो, डाक्टर को पता चल जाए, वह उसे देखने ज़रूर जाएगा । उसे न तो फ़ीस की परवाह और न दवा, इलाज की क़ीमत की ख़्वाहिश । उल्टे ग़रीबों पर अपनी रक़म ख़र्च कर देता है ।'

डाक्टर लुक़मान

डाक्टर के बारे में यह और इस तरह की बातें सुनते-सुनते मैं उकता गया । एक जगह मैंने सुना कि टापू के बादशाह ने जब डाक्टर की यह तारीफ़ सुनी तो उसे बुलवाया और अपना दरबारी बना लिया । दरबारी बनाने का उसका मक़्सद यह था कि डाक्टर के ज़रिए से बादशाह जनता को क़ाबू में रख सकेगा और किसी के बाग़ी होने का ख़तरा होगा तो डाक्टर से दबाव डलवा कर बग़ावत को नाकाम करा देगा । डाक्टर ने यह सोचा था कि इस तरह शायद वह टापू की जनता की भलाई का कोई ऐसा काम कर सकेगा जिससे ज़्यादा से ज़्यादा ग़रीबों को फ़ायदा पहुंचे । उसने इसीलिए दरबारी बनना कुबूल कर लिया था । लेकिन जब उसने दरबार में पहुंच कर देखा कि ख़ुशामदी लोग बादशाह को घेरे हुए हैं । वे ठीक-न-ठीक और मौक़े-बे-मौक़े चापलूसी की बातें करके अपना उल्लू सीधा करते हैं और बादशाह

सबसे ज़्यादा उसी से ख़ुश रहता है जो सबसे ज़्यादा ख़ुशामदी व चापलूस हो, तो डाक्टर का दिल खट्टा हो गया । उसने देखा यहां इंसाफ़ का नाम नहीं । सच्चाई का काम नहीं । चालाक लोग अपने फ़ायदे के लिए लोगों के हक़ मार बैठते हैं । ग़रीबों की कोई नहीं सुनता । डाक्टर ने जनता की भलाई के लिए कई बार कोशिश की, लेकिन उसकी एक न चली । बात यह थी कि न तो वह ख़ुशामदी था न चापलूस । ख़ुशामदी बातें उसे आती ही न थीं और बादशाह ठहरा ख़ुशामद पसन्द । तो फिर हुआ यह कि डाक्टर दरबार से अलग हो गया । उसके अलग हो जाने से बादशाह बहुत नाराज़ हुआ । लेकिन उसकी यह हिम्मत न पड़ी कि डाक्टर को कुछ सज़ा दे । उसे डर था कि अगर डाक्टर से कोई बुरा बर्ताव करेगा तो जनता भड़क उठेगी । फिर भी उसने अपने गुर्गे डाक्टर के पीछे लगा दिए ताकि वे छिपे तौर से ऐसी चालें चलें कि डाक्टर परेशान होकर राजधानी से कहीं दूर चला जाए ।

लोगों ने बताया कि डाक्टर लुक़मान जिस दिन दरबार से निकला था, उसे ख़ुद इस बात का खटका था । वह एक ही हफ़्ते राजधानी में रहा, इसके बाद वह राजधानी से चालीस मील दूर एक गांव में चला गया । और अब वहां ख़ुदा के बन्दों की ख़िदमत बड़ी लगन से कर रहा है ।

मुलाक़ात का शौक़

डाक्टर की इतनी तारीफ़ सुनी तो मैंने अपने दिल में सोचा कि डाक्टर के बारे में लाख बढ़ा-चढ़ा कर लोगों ने बयान किया हो, लेकिन इन बातों में सच्चाई ज़रूर है । फिर जब मैंने सुना कि डाक्टर पहले ईसाई था और अब मुसलमान है, तो मेरा जी चाहने लगा कि उससे मिलूं ।

जज़ीरे के किनारे मेरा जहाज़ पांच दिन ठहरा रहा । जहाज़ में कुछ ख़राबी आ गई थी । इसीलिए उसे यहां रोका गया था । जहाज़ वालों ने कोशिश करके जहाज़ को ठीक-ठाक कर लिया, छठे दिन जहाज़ फ़िर रवाना हो गया । जहाज़ वालों ने मुझे ढूंढा, लेकिन वे मुझे न पा सके । जब मैं हाज़िर न हुआ तो वे क्या करते । उन्होंने मुझे वहीं छोड़ दिया । मैं डाक्टर से मिलने उसके गांव की ओर रवाना हो चुका था ।

मुझे डाक्टर के गांव पहुंचने में पांच दिन लग गए । रास्ते में मैंने बहुत-सी ऐसी बातें देखीं-सुनीं जो नोट कर लेने लाएक़ थीं, वे सब मैं अपनी डायरी में लिखता गया । डाक्टर के बारे में मैंने जो कुछ राजधानी में सुना था, उसकी सच्चाई रास्ते

ही में मुझ पर ज़ाहिर हो गई । डाक्टर लुक़मान इलाक़े में इतना मशहूर हो चुका था कि मुझे किसी से पूछने की ज़रूरत ही न पड़ी । रास्ते में मुझे बहुत से ऐसे आदमी मिले, जो दवा इलाज के लिए डाक्टर के पास जा रहे थे । मैं भी उन्हीं के साथ हो लिया । उन सब ने भी डाक्टर के बारे में वही सब कुछ कहा, जो मैं सुन चुका था । रास्ते के इन गवाहों ने मुझे यक़ीन दिला दिया कि सचमुच डाक्टर ऐसा ही है, जैसा मैंने सुना था । मैंने डाक्टर से बातें करने के लिए दिल ही दिल में बहुत-सी बातें सोच लीं । मैंने सोचा कि ख़ास तौर से उससे यह ज़रूर पूछूंगा कि आप ने इस्लाम की किस बात से ज़्यादा असर लिया ?

डाक्टर का मकान

जब मैं गांव में पहुंचा तो सचमुच मैंने देखा कि गांव की सारी जनता डाक्टर का ही गुन गा रही थी । सब बड़ी इज़्ज़त से उसका नाम ले रहे थे । मर्द और औरत सभी उसके अच्छे बर्ताव से ऐसे दबे हुए थे, जैसे सब उसके ग़ुलाम हों ।

मैं मरीज़ों और बीमारों के साथ डाक्टर के यहां पहुंचा । मैंने देखा कि डाक्टर का मकान कोई महल नहीं था । न उसका दवाख़ाना कोई बड़ा अस्पताल था । उसके रहने के लिए एक मामूली-सा मकान था, बिल्कुल ऐसा जैसे दूसरे मकान । फ़र्क़ सिर्फ़ यह था कि डाक्टर के मकान में हवा और धूप के लिए खिड़कियां ज़्यादा थीं और उसके मकान के आस-पास फूलों के कुछ पौधे गमलों में नहीं ज़मीन में लाइन से लगे हुए थे । ये पौधे इस तरह लगाए गए थे कि उनके बीच एक तरफ़ बड़ा-सा मैदान था । उसी मैदान में बेंचें पड़ी हुई थीं । एक ओर सामने चौकी बिछी हुई थी । उस चौकी के पास एक छोटा-सा स्टूल रखा था । लोगों ने बताया, डाक्टर इसी चौकी पर बैठता है और इस स्टूल पर बीमारों को बिठा कर नब्ज़ देखता है । जिन लोगों के साथ मैं था, वे सब सुबह-सुबह गांव पहुंचे, सीधे उसी ओर गए और बेंचों पर बैठ गए । मैं भी उन्हीं के साथ जाकर एक तरफ़ बैठ गया ।

डाक्टर सूरज निकलने के पौन घण्टे बाद अपने घर से निकला । जैसे ही चेहरे पर मेरी नज़र पड़ी 'सुब्हानल्लाह' मेरी ज़बान से निकला । डाक्टर लुक़मान चालीस-पचास के बीच यानी अधेड़ उम्र का आदमी था । उसकी सेहत बहुत अच्छी थी । डाक्टर का रंगरूप गोरा चिट्टा था और चेहरे पर काली और घनी दाढ़ी थी । दाढ़ी के गिनती के कुछ बाल सफ़ेद थे । उसका चेहरा-मोहरा देख कर अगर मैं यूं कहूं तो ग़लत न होगा कि उसके चेहरे पर नूर बरस रहा था । डाक्टर ने

आकर ख़ुद ही सब को सलाम किया । 'अस्सलामु अला मनित्तब अल हुदा' (यानी उस पर सलाम हो जो अल्लाह की हिदायत पर चलता है) । उसका सलाम सुन कर सारे लोग खड़े हो गए । मैंने जवाब दिया, 'व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू ।' इतने लोगों के बीच एक मैंने उसके सलाम का जवाब दिया तो डाक्टर चौंक-सा गया । उसने मुझे देखा । फिर वह अपनी चौकी पर बैठ गया और मरीज़ों को देखने लगा । वह मरीज़ों को देखता जाता और थोड़ी-थोड़ी देर बाद मुझ पर एक उचटती नज़र डालता जाता । डाक्टर जिस मरीज़ को देखता, उससे कहता, भाई! डाक्टर का काम कोशिश करना है । अल्लाह ने मुझे जो इल्म दिया है, मैं उसी इल्म के मुताबिक़ तुम्हारा इलाज करूंगा, लेकिन अच्छा करना उस ख़ुदा के हाथ में है जिसने हमको-तुमको और सारे संसार को पैदा किया है । उसी ख़ुदा ने ये जड़ी-बूटियां पैदा कीं जो हम दवाओं के काम में लाते हैं ।

मेरे पास के कुछ लोग नुस्ख़े लिखवा कर लाए मैंने देखा, नुस्खे पर सबसे ऊपर लिखा हुआ था, 'अल्लाह शाफ़ी अल्लाह काफ़ी ।'

आप तशरीफ़ लाइए ! ठीक उस वक़्त डाक्टर ने मुझे इशारा किया जब मेरे दाहिनी तरफ़ बैठा हुआ मरीज़ अपना नुस्ख़ा लिखा चुका था । मैं इशारा पाते ही स्टूल पर जा बैठा और हाथ डाक्टर की ओर बढ़ा दिया । उस वक़्त मेरे दिल में दरअसल यह बात आई कि मैं आया तो मिलने हूं, क्यों न हाथ दिखा दूं, शायद डाक्टर मेरे लिए कोई ऐसा नुस्खा लिख दे जो मेरे जैसे घुमक्कड़ के लिए सफ़र में काम दे । डाक्टर ने मेरी नब्ज़ पर उंगलियां रखीं । डाक्टर की उंगलियां मेरी नब्ज़ पर थीं और उसकी नज़र मेरे चेहरे पर । मैंने अपनी नज़रें नीची कर ली थीं । उस वक़्त मेरा दिल धक-धक कर रहा था । सच यह था कि मैं बीमार न था । मैं तो उससे मिलने गया था । डाक्टर ने कई मिनट पूरे ध्यान से नब्ज़ देखी । फिर 'अलहम्दुलिल्लाह' उसकी ज़बान से निकला । कहने लगा—

'भाई ! तुम्हें कोई बीमारी तो मालूम नहीं होती । तुम जानो हम डाक्टर लोग अंधेरी कोठरी में टटोलने वाले हैं, जो कुछ हमारे हाथ लग जाता है, उसी के मुताबिक़ सलाह दे देते हैं । अगर अल्लाह का हुक्म होता है तो हमारी दवा काम करती है वरना नहीं । ग़ैब का इल्म तो अल्लाह ही को है । मैं समझ न सका कि आपके अन्दर क्या बीमारी है । आप ख़ुद बताइए, आपको क्या शिकायत है ?'

डाक्टर के यह पूछने पर मैं खिसया गया । अब मैंने साफ़-साफ़ बात बताई कि हक़ीक़त में मैं आप से मिलने आया हूं ।

मुलाक़ात

'आप मुझसे मिलने आए हैं ?' डाक्टर उठ खड़ा हुआ, 'तो फिर आप को मेरे घर आना चाहिए था । आप तो मेरे मेहमान हैं, आप यहां क्यों बैठे रहे ? मुझे आप से शिकायत है, आप मुझे इसका जवाब दें ।' डाक्टर के खड़े होने से मैं भी खड़ा हो गया । डाक्टर ने मुझे गले लगा लिया, उसने मेरी गर्दन चूमी, मेरी पीठ थपथपाता रहा और कहता रहा, 'मेरे प्यारे मेहमान ! तुम्हारा आना मुबारक, तुम्हारा आना सिर आंखों पर ।'

डाक्टर के इस बर्ताव को देख कर मैं बहुत शर्मिन्दा हुआ । मैंने डाक्टर से माफ़ी मांगी । माफ़ी मांगने पर डाक्टर ने फिर मुझे गले लगा लिया । फिर उसने जल्दी-जल्दी मरीज़ों को देखा जो बाक़ी रह गए थे । इसके बाद मेरे हाथ में हाथ डाल कर उठा और अपने घर ले गया । घर में उसकी बीवी और बच्चे थे । उसने अपने बच्चों से मिलाया । सब बड़ी ख़ुशी से मिले । डाक्टर ने मुझे अपने कमरे में ठहराया, मेरा हाल पूछा । जब उसे यह मालूम हुआ कि मैं दुनिया की सैर को निकला हूं तो वह बहुत ही ख़ुश हुआ । कहने लगा, 'अल्लाह का शुक्र है कि आप यहां आए । मैं आपसे मिल कर बहुत ख़ुश हुआ ।'

खाना तैयार हो चुका था । मेरे पहुंचने पर झट दस्तरख़्वान बिछाया गया । उसके घर वालों के साथ मैंने खाना खाया । मैंने उसकी बीवी को देखा । उसके कपड़ों को देखा । वह ढीले-ढाले कपड़े पहने हुए थी और उसका सिर्फ़ चेहरा दिखाई दे रहा था । वह खाने में हमारे साथ शामिल नहीं हुई । बाक़ी सारे ही बच्चे हमारे साथ खा रहे थे ।

खाने के बाद डाक्टर मुझे अपने कमरे में ले गया । मेरा हाल पूछने लगा । मैंने अब तक जो दुनिया में देखा था और जो कुछ मुझे याद रह गया था, वह सब उसे बताया । डाक्टर बार-बार 'मरहबा' 'जज़ाकल्लाह' कहता । वह मेरे सफ़र का हाल सुनकर बहुत ख़ुश हो रहा था । मेरे सफ़र में बड़ी हैरतनाक बातें सामने आईं तो डाक्टर ने अपने घर वालों को (बीवी-बच्चों समेत) उसी कमरे में बुला लिया । बच्चों को आस-पास देख कर मैंने जंगलों, पहाड़ों, नदियों, रेगिस्तानों, जानवरों, परिन्दों और लोगों के हालात ख़ूब खोल-खोल कर बयान किए । मुझे भी मज़ा आया और सुनने वालों को भी । उस दिन डाक्टर दोपहर को सो भी न सका । ज़ुहर तक मैं अपनी कहता रहा । फिर हम सबने नमाज़ पढ़ी । नमाज़ में डाक्टर ने मुझे इमाम बनाया । मेरे पीछे उसने और उसके बच्चों ने जमाअत से नमाज़ पढ़ी । नमाज़ पढ़ कर कहने लगा, 'ख़ुदा का शुक्र है कि सालों बाद

हमें एक मुसलमान मेहमान नसीब हुआ । वरना यहां बस हम ही मुसलमान हैं ।'

'अच्छा यह बात है, मगर मैंने सुना है कि आप पहले ईसाई थे, बाद में मुसलमान हुए ।'

आप किस तरह मुसलमान हुए ?

'क्या आप बता सकते हैं कि इस्लाम की किस बात से आप मुसलमान हुए ?' मैंने डाक्टर से पूछा । डाक्टर ने जवाब दिया, 'ज़रूर, ज़रूर ! मैं यह बात ज़रूर बताऊंगा । मेरे भाई ! क़ुरआन पाक की सिर्फ़ एक आयत ने मुझे मुसलमान किया ।'

'तो क्या आप ने किसी मुसलमान से क़ुरआन मजीद पढ़ा ?' मैंने बात काट कर डाक्टर से पूछा । उसने कहा, 'नहीं, मैंने आज तक आप के अलावा किसी मुसलमान से मुलाक़ात नहीं की ।'

'तो आपने वह आयत कहां सुनी, जिसे सुनकर आप मुसलमान हुए ?'

'हां, बताता हूं । हक़ीक़त में मेरी जवानी समुद्र के सफ़र में बीती है । मुझे समुद्रों को देखने और समुद्रों की सैर का इतना शौक़ था कि मैं अपने दिन-रात पानी और आसमान के बीच जहाज़ पर ही बसर करता था । अपनी इस ज़िन्दगी पर इतना ख़ुश था जैसे कहना चाहिए कि मैं यही सब कुछ देखने के लिए पैदा हुआ था । इसी ज़माने में मैं एक जहाज़ पर सफ़र कर रह था । जहाज़ पर मुझे क़ुरआन पाक के अंग्रेज़ी तर्जुमे की एक कापी मिल गई । मैं आपको बता दूं कि जहाज़ पर वक़्त गुज़ारने के लिए मुझे जो किताब मिलती, मैं उसे पढ़ा करता था । मैंने कलाम पाक खोला तो सूरःनूर की एक आयत मेरे सामने थी । मैंने तर्जुमा पढ़ा । तर्जुमा यह था—

'उनकी मिसाल बड़े गहरे समुद्रों के अन्दर के अंधेरों की सी है, इस तरह कि समुद्रों को लहरों ने ढांक रखा है । लहर के ऊपर लहर है, उसके ऊपर बादल है, यानी अंधेरे पर अंधेरा । इस हाल में एक इंसान समुद्र के अन्दर अपना हाथ निकाले तो उम्मीद नहीं कि वह कुछ देख सके । जिसको ख़ुदा रोशनी न दे उसके लिए कोई रोशनी नहीं ।'

मैंने यह तर्जुमा बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा । इस आयत में एक भटके हुए इंसान के बारे में कहा गया है और उसके बारे में समझाने के लिए यह बहुत अच्छी मिसाल दी है । क्या ख़ूब फ़रमाया है, एक भटका हुआ इंसान जिसे रास्ता नहीं मिल रहा है । ग़लत रास्तों पर जाता है । हाथ-पैर मारता है, लेकिन उसे सीधा

रास्ता दिखाई नहीं देता । ख़ूब है यह मिसाल ! अंधेरी रात, बादल छाए हुए और फिर वह इंसान समुद्र की गहराई में । भटके हुए इंसान की इससे अच्छी मिसाल नहीं दी जा सकती । जब मैंने आयत का यह तर्जुमा पढ़ा तो मैं झूम उठा । मेरे दिल ने कहा कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ज़रूर समुद्रों के सफ़र किए होंगे और फिर वह बहुत बड़े अदीब भी रहे होंगे । इतने बड़े अदीब कि हर चीज़ का नक़्शा लफ़्ज़ों के ज़रिए खींचने में कामयाब होंगे ।

मुहम्मद (सल्ल०) के पैग़म्बर होने का सुबूत

मेरे मेहमान भाई ! आप मुस्कुरा रहे हैं । मैं समझ गया, आप क्यों मुस्कुरा रहे हैं । आप इसी बात पर तो मुस्कुराए कि नबी (सल्ल०) न तो अदीब थे, न शायर थे, न पढ़े-लिखे ही थे । हां ! यह बात मैंने बाद में जानी । सच यह है कि अगर मैं यह न जानता कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अनपढ़ थे तो मैं हरगिज़ मुसलमान न होता । थोड़े दिनों के बाद जब मुझे यह मालूम हुआ कि मुहम्मद (सल्ल०) अपढ़ थे तो मैं दंग रह गया । फिर यह मालूम हुआ कि क़ुरआन पर कभी नज़रसानी तक नहीं हुई । फिर जाना कि अरबों ने बहुत कोशिश की कि इस जैसी सिर्फ़ एक सूरत ही बना लें, लेकिन वे नाकाम रहे, तो मेरी हालत ऐसी हो गई, जैसे मेरे सिर में दिमाग़ ही न रह गया हो । फिर जब ज़रा मेरा दिल ठहरा तो अचानक मेरे अन्दर एक रोशनी पैदा हुई । मुझे यक़ीन हो गया कि यह मुहम्मद (सल्ल०) का कलाम नहीं है, बल्कि यह अल्लाह का कलाम है । मैंने क़ुरआन पाक को दोनों हाथों से पकड़ा, सीने से लगाया और मैं उसकी तालीम पर ईमान ले आया ।'

डाक्टर लुक़मान के मुसलमान होने की कहानी सुन कर मेरे ईमान में बड़ी मज़बूती आई । साथ ही मुझे डाक्टर साहब की अक़्लमंदी पर बड़ा ताज्जुब हुआ कि उन्होंने किताबें पढ़-पढ़ कर इस्लाम की पूरी जानकारी हासिल कर ली और मैंने डेढ़ महीने उनके साथ रह कर देखा कि उनका इस्लामी अक़ीदा भी सही था और उनके काम भी इस्लामी तालीम के मुताबिक़ थे ।

डेढ़ माह बाद जब मैं वहां से चला तो मैंने डाक्टर साहब से कहा, 'द्वीप वाले आप को इतना मानते हैं कि अगर आप उनसे उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई बात कहें तो वे मान लेंगे । वे दिल व जान से आप का साथ देंगे । ऐसी हालत में आप को यह ज़रूर करना चाहिए कि जिस रास्ते को आपने अपने लिए कामयाबी का ज़रिया समझा है और आप समझते हैं कि जिस दीन पर चल कर एक इंसान

अच्छा इंसान बन सकता है, उस दीन को अपनाने के लिए आप दूसरों को भी उभारें, वरना आप क़ियामत के दिन अल्लाह को क्या जवाब देंगे, जब आप से पूछा जाएगा कि ख़ुद तो इस्लाम की दौलत हासिल कर ली और दूसरों को महरूम रखा ।

मेरी इस बात के जवाब में डाक्टर ने दुआ के लिए हाथ उठा दिए । मैंने भी दुआ की । फिर मैं अपने दिल में उस नेक और शरीफ़ डाक्टर की याद लिए हुए वहां से रवाना हो गया । राजधानी में आया, फिर जो जहाज़ किसी ओर भी जाने के लिए मिला उसी पर सवार होकर चल दिया ।

माल द्वीप की सैर

हमारे इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामे में माल द्वीप का तफ़्सीली बयान इस ख़ुशी के साथ लिखा है कि उसकी हर लाइन से उसकी ख़ुशी का पता चलता है । शायद यह उसकी ख़ुशी ही थी जिसकी वजह से उसने इन द्वीपों का हाल ख़ूब फैला कर लिखा है ।

हमारा इब्ने बतूता मालद्वीप की तफ़्सील में यहां तक कह गया कि उसने इस द्वीप समूह की लम्बाई, चौड़ाई, आबादी, पेशा, कारोबार, कल-कारख़ाने और आर्ट, इबादत के तरीक़े और हुकूमत चलाने का ढंग, ग़रज़ यह कि हर उस बात को उसने बयान करने की कोशिश की है, जो उस देश के बारे में हो सकती है । माल द्वीप से अपने लगाव और ख़ुशी की वजह वह इस तरह बयान करता है—

'अल्लाह की बनाई हुई इस लम्बी-चौड़ी ज़मीन में इन छोटे-छोटे द्वीपों की अहमियत मेरी नज़र में इस वजह से बयान करने के लायक़ है कि अरब के अलावा यही एक ऐसा देश है जहां इस्लामी निज़ामे हुकूमत क़ायम है । यह एक ऐसी ख़ूबी है, जिसकी वजह से दुनिया के तमाम मुस्लिम राज्यों में इस देश को इज़्ज़त और सम्मान हासिल है । जहां पूरी की पूरी आबादी मुसलमानों की है ।'

हमने इस सफ़रनामे से मालद्वीप समूह के बारे में जानकारी लिखते वक़्त तफ़्सील के बजाए इख़्तिसार से काम लिया है । उम्मीद है कि जो भी इन बातों को पढ़ेगा सबक़ और नसीहत उसे मिलेगी । हमारा इब्ने बतूता लिखता है—

'भूमध्य रेखा (ख़ते इस्तिवा) पर लंका से 67 किलो मीटर दूर हिन्द महासागर के दक्षिणी-पश्चिमी हिस्से में दो हज़ार छोटे-बड़े द्वीप (जज़ीरे) सात सौ पचास किलोमीटर की लम्बाई और एक सौ बारह किलो मीटर की चौड़ाई में फैले चले

गए हैं । यह दो हज़ार टापू अठारह भागों में बांट दिए गए हैं । जिनमें से दो सौ टापू सरकारी दफ़्तरों के लिए ख़ास हैं और बाक़ी टापुओं में खेती होती है । कुल आबादी एक लाख है । मज़े की बात यह है कि इस लम्बे-चौड़े द्वीप समूह में केवल एक ही बन्दरगाह है । इस बन्दरगाह का नाम 'माली' है । माली बड़ी पुरबहार और ख़ूबसूरत जगह है । यहां आने वाले लोगों को ऐसा महसूस होता है, जैसे वह एक ख़ूबसूरत चमन में टहल रहे हों । लगभग हर घर के आंगन में आम, नारियल और केले के पेड़ हैं और सारी आबादी एक हरा-भरा बाग़ नज़र आती है । जिन लोगों ने माल द्वीप की सैर की है, उनका कहना है कि शायद कश्मीर के मनाज़िर भी ऐसे ख़ुशनुमा नहीं हैं, जैसे यहां के हैं ।'

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि इन जज़ीरों में इस्लाम आने से पहले बुद्ध धर्म राइज था । फिर जब अल्लाह की मेहरबानी यहां के निवासियों पर हुई तो अरब व्यापारियों की एक जमाअत के ज़रिए यहां इस्लाम की रोशनी पहुंची और अब यहां का हाल यह है कि इन द्वीपों में सारे के सारे मुसलमान आबाद हैं । जिस जमाअत के ज़रिए इन जज़ीरों में इस्लाम पहुंचा उसके अमीर का नाम शेख़ हाफ़िज अबुल बरकात यूसुफ़ बरबरी मुफ़रजी (रह०) था । वे एक बहुत बड़े आलिम थे, जो केवल इस्लाम की तब्लीग़ के लिए यहां आए थे । शेख़ साहब ने अपनी पूरी ज़िन्दगी को इस्लाम के लिए वक़्फ़ कर दिया था । वे दिन-रात इसी काम में लगे रहते थे । इन द्वीपों के लोगों तक इस्लाम छठी सदी हिजरी (बारहवीं सदी ईसवी) में पहुंचा और कुछ इस तरह पहुंचा कि इस्लाम के साथ उनका दिली लगाव बाक़ी है । इस्लाम अपनाने की वजह से माल द्वीपी मुसलमानों पर तरह-तरह की परेशानियां आईं, लेकिन वे हर मोड़ पर इस्लाम के मुहाफ़िज़ बने रहे और फिर कभी किसी दूसरे के ग़लत असर को क़ुबूल नहीं किया ।[1]

यहां की इमारतों के बारे में हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि—यहां इमारतें

---

1. आज भी अल्लाह की मेहरबानी से मालद्वीपी मुसलमान इस एतबार से बहुत आगे हैं । अभी कल की बात है कि यूरोपीय देशों ने इन पर बड़े-बड़े दबाव डाले । अंग्रेज़ों ने इन द्वीपों पर क़ब्ज़ा भी कर लिया था और उन्होंने अपने असर को फैलाना भी शुरू कर दिया था, लेकिन यहां के मुसलमान उनके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए और 1953 ई० में उनको निकालने में कामयाब हो गए । जिस ज़माने में पुर्तगालियों का दौर दौरा था और वे पूरे हिन्द महासागर पर अपनी नौकाएं और जहाज़ लिए दनदनाते फिर रहे थे, उस वक़्त में भी दस साल से ज़्यादा मालद्वीपी मुसलमानों ने उन्हें नहीं टिकने दिया । जोशीले नौजवानों ने पुर्तगाली सेना पर हमला कर दिया और उन्हें अपने इलाक़े से निकाल कर ही दम लिया । कैसे ख़ुश क़िस्मत हैं मालद्वीपी मुसलमान कि आज उनके यहां न कोई अंग्रेज़ पाया जाता है न पुर्तगाली ।

बड़ी ख़ूबसूरत बनी हैं, जो आमतौर से एक मंज़िला हैं । सरकारी दफ़्तरों में से केवल एक दफ़्तर की इमारत दो मंज़िला है । या फिर यहां के सुल्तान के ख़ास महल जो बहुत ही सादा और साफ़-सुथरे बने हैं, ख़ास ज़रूरतों के तहत दो मंज़िले हैं । यहां के मुसलमान अपने यहा बादशाह को सुल्तान कहते हैं और उससे बड़ा प्रेम रखते हैं । इसी प्रेम की वजह से वे किसी क़ानूनी रुकावट के बग़ैर ख़ास महल के मुक़ाबले में दो मंज़िला इमारत बनाना पसन्द नहीं करते ।

माल द्वीपी मुसलमान अपने सुल्तान को रायों की बुनियाद पर चुनते हैं । सुल्तान की मदद के लिए एक मशविरा कमेटी होती है, जिसके मेम्बरों का इन्तिख़ाब भी रायों से होता है । सुल्तान मश्विरा कमेटी के सामने जवाबदेह होता है। हुकूमत का इन्तिज़ाम और दूसरी तमाम ज़िम्मेदारियां कमेटी के हाथ में हैं । अदालत एक अलग बा-इख़्तियार इदारा है, जो इस्लामी क़ानून के तहत फ़ैसले करता है और उसके फ़ैसले भी इसी इदारे के ज़रिए लागू होते हैं ।'

हमारा इब्ने बतूता मालद्वीप का हाल लिखते वक़्त बार-बार अपने देश का नाम भी लेता है । वह लिखता है कि पूरी दुनिया में अरब के अलावा शायद यही एक इस्लामी देश ऐसा है, जहां शराब और दूसरी हराम चीज़ों पर पाबन्दी होने के साथ-साथ ये हराम चीज़ें अप्राप्त भी हैं । क़ानून की नज़र में ऐसी तमाम चीज़ें हराम और नाजाइज़ हैं । उनका पास रखना भी जुर्म है । दूसरी बतलाने के लायक़ बात यह है कि इन द्वीपों में कहीं कोई कुत्ता नहीं पाया जाता और यह केवल इसलिए है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि घर में कुत्ता और जानदार की तस्वीर रखने से बरकत के फ़रिश्ते नहीं आते । यहां के मुसलमानों को नबी (सल्ल०) से कितनी मुहब्बत है, इसका अन्दाज़ा वहां कुत्ता न होने की वजह से लगाया जा सकता है । नबी (सल्ल०) ने सफ़ाई-सुथराई और शर्म को ईमान में शामिल किया है । इसीलिए मालद्वीप के मुसलमानों की ख़ुसूसियत सफ़ाई और शर्म है । वे बड़े शर्मीले, लेकिन ग़ैरतमन्द और साफ़-सुथरे होते हैं । उनके यहां हर घर के बाहर एक छोटा-सा हौज़ बना होता है । घर में दाख़िल होने वाला हर आदमी पहले जूता उतार कर इस हौज़ से वुज़ू करता है । इस तरह पाक साफ़ होकर घर में दाख़िल होता है । जूता घर के क़ोने में अलग रख दिया जाता है । घर के अन्दर और बाहर सफ़ाई की ज़िम्मेदारी हर एक की होती है । यही वजह है कि इन द्वीपों में गन्दगी नाम को भी नहीं है । नबी (सल्ल०) की सफ़ाई के बारे में जो हदीस आती है उसकी ज़िन्दा तस्वीर मालद्वीप में देखी जा सकती है ।

इबादत के बारे में हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि यहां इस्लामी समाज में नमाज़ को बड़ी अहमियत हासिल है । यहां नमाज़ के बग़ैर इस्लामी ज़िन्दगी का

तसव्वुर नामुमकिन है । यहां नमाज़ छोड़ देना और उससे ग़फ़लत और सुस्ती बरतना इतना ही बड़ा जुर्म है, जैसे नबी (सल्ल०) के ज़माने में था । हुज़ूर (सल्ल०) के ज़माने में लोग उसे मुसलमान मानते ही न थे, जो कलिमा पढ़ने के बाद नमाज़ न पढ़ता हो । इसलिए मुनाफ़िक़ को भी नमाज़ पढ़नी पड़ती थी ।

मालद्वीप में हर मुसलमान पर यह ज़िम्मेदारी डाली गई है कि वह नमाज़ को क़ायम करे और यहां की इस्लामी सरकार पर भी यही ज़िम्मेदारी है कि वह इस्लाम के इस अहम सुतून की हिफ़ाज़त करे । हर इंसान को नमाज़ का पाबन्द बनाए । इस पाबन्दी का नतीजा यह है कि मालद्वीप के हर गली-कूचे में हर घर के लोगों की तादाद उस इलाक़े की मस्जिद के इमाम के पास रहती है । बड़े ही ढंग से हर नमाज़ के वक़्त मुहल्ले वालों की हाज़िरी ली जाती है । अगर कोई आदमी बिला वजह ही मस्जिद में नमाज़ पढ़ने नही आता तो उसे इस्लामी क़ानून के तहत सज़ा दी जाती है और अगर ग़ैर-हाज़िरी की वजह कोई बीमारी है तो फ़ौरन उसकी मदद की जाती है । इस तरह जब तक बीमार मस्जिद में आने लायक़ नहीं हो जाता, उस वक़्त तक उस पर पूरा ध्यान रखा जाता है ।

नमाज़ की तरह रमज़ान के रोज़ों की भी इस्लामी समाज में एक अहम ख़ुसूसियत है । रोज़ा हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है । मालद्वीप में कोई इंसान किसी मजबूरी के बग़ैर रोज़ा नहीं छोड़ सकता। अगर कोई इंसान अपनी सुस्ती से रोज़ा छोड़ दे तो उसे सज़ा दी जाती । हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि मैंने अपने सामने किसी को नमाज़ और रोज़े के बारे में सज़ा पाते नहीं देखा । जबकि मैं वहां तीन साल रहा । इसका मतलब यह है कि लोग दिल से वहां नमाज़ बा-जमाअत की पाबन्दी करते और रोज़े रखते हैं ।

इन द्वीपों में आलिमों की बड़ी क़द्र और इज़्ज़त की जाती है । सरकारी इदारों में आलिम ऊंचे-ऊंचे ओहदों पर हैं । उनके लिबास ख़ास तरह के हैं । सरकार का सारा काम-काज पूरे तौर पर इस्लामी क़ानून के तहत होता है । यहां कहीं आपस के लड़ाई-झगड़े सुनने में नहीं आते । मालद्वीप की सफ़ाई, वहां के मन्ज़र और इबादतों आदि का ज़िक्र करने के बाद हमारे इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामे में वहां के हर इदारे से मुताल्लिक़ ख़ुद देखे हुए और सुने हुए हालात लिखे हैं । तफ़्सील के डर से हम उन्हें छोड़ कर सिर्फ़ वहां की अदालत के बारे में कुछ बातें लिखे देते हैं, जो दिलचस्प होने के साथ-साथ बड़ी सबक़ आमोज़ हैं ।

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि जब मैं 'माली' बन्दरगाह पर उतरा तो एक आदमी ने आगे बढ़कर पूछा, 'या अख़ी अन्ता मिनतुज्जार ?' (ऐ मेरे भाई क्या आप ताजिर हैं) । मैंने कहा, 'नहीं ।' मेरे इनकार पर उसने दूसरा सवाल यह किया

कि 'क्या सरकारी मेहमान हैं ?' मैंने फिर इनकारी जवाब दिया तो मुझसे पूछने लगा कि 'फिर तुमको हम क्या समझें और किस हैसियत से तुम्हारी ख़ातिरदारी करें ?' मैंने बताया कि 'मैं एक मुसाफ़िर हूं और सफ़र करता हुआ तुम्हारे देश आया हूं ।'

'मरहबा अहलन व सहलन' उसकी ज़बान से निकला और उसने कहा, 'तुम हमारे मेहमान ही हो । अब यह बताओ कि तुम सरकारी मेहमान बनना पसन्द करोगे या किसी शख़्स के मेहमान बनोगे ?' इस सवाल पर मैंने कुछ सेकन्ड सोचा और फिर उससे कहा, 'मैं मस्जिद में ठहरना पसन्द करता हूं ।'

'अन्ता बतल !' उस आदमी ने मुस्कुरा कर कहा । उसने अपनी जेब से एक नोट बुक निकाली । उसमें मेरा नाम, पता और हुलिया लिखा और फिर मुझे साथ लेकर चला । सामने एक बड़े ही शरीफ़ बुज़ुर्ग खड़े थे । उनसे मेरे बारे में सिफ़ारिशी बात-चीत की और मुझे उनके साथ कर दिया । उन बुज़ुर्ग ने मुझे एक मस्जिद में ले जाकर इमाम साहब के हवाले कर दिया । इमाम साहब ने इस्लामी तरीक़े से मेरी ख़ातिर की । इशा की नमाज़ के बाद मैं नफ़्ल पढ़ रहा था कि अचानक कुछ सिपाही जो सादा लिबास में थे, मस्जिद में दाख़िल हुए । उनमें से एक ने पुकार कर कहा, 'कोई ख़तरा नहीं है' और फिर वे एक-एक नमाज़ी का चेहरा देखने लगे । एक सिपाही मेरे पास आया, उसने मुझे देखा, पुकारा, 'क़ाज़ी का बताया हुआ मेहमान मिल गया ।'

यह सुनकर सिपाही मेरे आस-पास जमा हो गए । एक ने बड़े अदब से कहा, 'क़ाज़ी साहब ने आप को सलाम कहा है और फ़रमाया है कि कल, परसों दो दिन आप हमारे साथ गुज़ारें तो आपका एहसान होगा ।' मैंने यह दावत मन्ज़ूर कर ली और इमाम साहब के सामने सिपाहियों को ले जाकर कहलवा दिया । दूसरे दिन जब मैं क़ाज़ी के साथ नाश्ता कर रहा था तो मैंने उससे कहा कि आप की दावत इसलिए और भी मैंने मंज़ूर कर ली कि मुझे यह देखने में आसानी होगी कि यहां के फ़ैसले कैसे और किस तरह किए जाते हैं । क्या मैं उम्मीद करूं कि मुझे अदालत में साथ ले चलेंगे ?'

'ज़रूर ! ज़रूर !' क़ाज़ी ने कहा और फिर जब वह कचहरी रवाना हुआ तो मैं भी उसके साथ था । जिस वक़्त मैं अदालत में पहुंचा तो वहां बहुत भीड़ देखी । क़ाज़ी तो अपनी कुर्सी पर जा बैठा और मैं पेशकार के पास वाली कुर्सी पर । उसने मेहमान के नाते मेरा इस्तिक़बाल किया । मैंने उससे पूछा, 'आज इतनी भीड़ क्यों है ? या ऐसी ही भीड़ हर रोज़ होती है ?' पेशकार ने बताया कि आज हमारे सुल्तान के ख़िलाफ़ अब्दुल्लाह बिन जाबिर नामक आदमी ने दावा किया

है । शायद जनता में इसी वजह से दिलचस्पी है । वे देखना चाहते हैं कि बेलाग फ़ैसला किस तरह होगा ?

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि यह सुन कर मुझे भी दिलचस्पी पैदा हो गई । जिस वक़्त मुद्दई और मुद्दाअलैह की पुकार हुई तो मैंने देखा कि एक आदमी एक बुर्क़ा पोश औरत के साथ आया और अदालत के सामने खड़ा हो गया और उसने कहा 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू ।' इसके बाद एक और आदमी आया । यह आने वाला बड़ा पुरजलाल और रोबदार आदमी था । पेशकार ने मेरे कोहनी मारी । उसका मतलब यह था कि यही हमारा सुल्तान है । सुल्तान भी उस मर्द और औरत के पास आकर खड़ा हो गया और उसने भी कहा, 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू ।' मुद्दई और मुद्दाअलैह के सलाम करने पर हल्की-सी 'व अलैकुमस्सलाम' की आवाज़ गूंजी और फिर मुक़दमा शुरू हो गया । क़ाज़ी ने अब्दुल्लाह बिन जाबिर की तरफ़ देखा और उसने इस तरह बयान किया—

'सुल्तान ने अपने महल में जो बढ़ोतरी की है, उसमें मुद्दई की निजी ज़मीन को शामिल कर लिया गया है और यह ज़मीन मेरी बीवी की है । यह मेरी बीवी से मेरी ग़ैर-मौजूदगी में यह बताए बिना ख़रीदी गई कि ज़मीन का ख़रीददार कौन है ? उसकी हैसियत क्या है और उस ज़मीन को किस काम के लिए ख़रीदा जा रहा है ? इसलिए मेरी बीवी की लाइल्मी से फ़ायदा उठाते हुए बहुत कम क़ीमत दी गई है, जो बिल्कुल नामुनासिब है । अगर मेरी बीवी को इस बात का इल्म होता कि ख़रीदार कौन है, उसकी हैसियत क्या है और किस लिए ज़मीन ख़रीदी जा रही है, तो यक़ीनी तौर से क़ीमत बढ़ सकती थी । मेरी बीवी जो कि ज़मीन की मालिक है मेरे बराबर खड़ी है ।'

अब्दुल्लाह बिन जाबिर का बयान ख़त्म हुआ तो क़ाज़ी ने बुर्क़ा पोश औरत से पूछा, 'ख़ातून ! क्या आप क़सम खाकर कह सकती हैं कि जिस समय यह ज़मीन बेची या ख़रीदी जा रही थी तो आप ख़रीदार की हैसियत और ख़रीद करने के मक़सद से बेख़बर थीं ?'

'मैं ख़ुदा को हाज़िर व नाज़िर जानकर कहती हूं कि मुझे इस बात का बिल्कुल इल्म नहीं था कि यह ज़मीन सुल्तान के लिए ख़रीदी जा रही है ।'

यह जवाब सुन कर क़ाज़ी ने सुल्तान की तरफ़ देखा । फिर उसने एक नज़र काग़ज़ों पर डाली, फिर बोला—

'क्या मुल्ज़िम क़सम के साथ बयान दे सकता है कि जिस वक़्त यह ज़मीन ख़रीदी गई थी तो मुल्ज़िम ने ज़मीन के मालिक को ख़रीदार की हैसियत बता दी

थी ?'

अब जवाब देने की बारी सुल्तान की थी। सुल्तान ने कहा, 'मैं बा-इज़्ज़त अदालत के नोटिस में यह बात लाना चाहता हूं और लिख कर भी दे चुका हूं कि मैंने यह ज़मीन अपने मुख़्तार के ज़रिए ख़रीदी। मुख़्तार की मौत हो चुकी है। मकान बन चुका है। अब मुझ पर यह ज़िम्मेदारी कैसे आ सकती है ?'

'मुल्ज़िम को मालूम होना चाहिए कि अगर ग़लत तरीक़े से क़ब्ज़ा हुआ है तो मकान खुदवाकर गिराया भी जा सकता है। अदालत तो यह जानना चाहती है कि मुद्दई को ख़रीदार की हैसियत और ख़रीदारी का मक़सद बताया गया था या नहीं ?'

'मुझे मालूम नहीं।' सुल्तान ने जवाब दिया।

'तो अदालत यह फ़ैसला करती है कि या तो आप ज़मीन के मालिक को ज़मीन वापिस कर दें या फिर दोबारा उसे ख़रीदें।'

यह फ़ैसला करके क़ाज़ी ने उसकी सनद इस तरह पढ़ना शुरू की–

'रसूलुल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब कोई तिजारती कारवां बाहर से आए तो तुम में से कोई भी आगे बढ़ कर सौदा न करे, जब तक कि वह माल मण्डी में न पहुंच जाए और सौदागर को मण्डी के भाव और ख़रीदारों की हैसियत का पता न चल जाए और अगर तुम में से कोई ऐसा सौदा करे तो वह सौदा ग़लत होगा।'

सुल्तान ने फ़ैसले के आगे सिर झुका दिया। फ़ैसला सुनाने के बाद क़ाज़ी ने उठ कर सुल्तान को सलामी दी और अर्ज़ किया कि 'अगर सरकार और मुक़दमों की कार्यवाही सुनना चाहें तो अपने पास कुर्सी लगवा दूं आप तशरीफ़ रखें, लेकिन मुक़दमे के बीच कार्यवाही में दख़ल देने का कोई इख़्तियार न होगा।'

सुल्तान ने जाने की इजाज़त चाही और चला गया। क़ाज़ी बैठा मुक़दमें सुनता रहा और मैं देखता रहा। मैं आख़िर वक़्त तक चुप रहा। इससे क़ाज़ी बहुत ख़ुश हुआ। फिर जब ज़ुहर के वक़्त उठा तो पेशकार ने एक पर्चा उसे दिया। पर्चा पढ़ कर क़ाज़ी ने मुझे दिया। मैंने पढ़ा। उसने लिखा था—'शायद यह आदमी जो पेशकार के बराबर बैठा है, ख़ास मेहमान है। अगर यह मेहमान है तो मैं उम्मीद करता हूं कि रात का खाना आप और आप के मेहमान मेरे साथ खाएं और अगर यह मेहमान नहीं हैं, तो क़ाज़ी से जवाब तलब किया जाता है कि इसे ख़ास जगह क्यों दी गई ?'

बात साफ़ थी । क़ाज़ी ने सही बात बताने के लिए कुछ लाइनें लिख दीं और सुल्तान की दावत मन्जूर कर ली ।

इस तरह के कुछ मुक़दमों के फ़ैसले हमारे इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामे में लिखे हैं । सुल्तान के यहां दावत की सादगी पर बड़े अच्छे लफ़्ज़ों में चार-पांच पेज ख़र्च किए हैं । वह मालद्वीप की सैर को अपनी ख़ुशनसीबी कहता है । इसके बाद लिखता है—

'यह है एक हल्का-सा नक़्शा ज़मीन के इस छोटे से हिस्से का, जिसने अल्लाह के क़ानून को अपने लिए रहनुमाई बनाया है । वहां कैसा अमन मैंने पाया । वहां अल्लाह की रहमत बरसती है । यह राज्य अपनी बहुत-सी ख़ूबियों की बुनियाद पर दुनिया के तमाम देशों को दावत दे रहा है कि अल्लाह के बन्दो ! दुनिया में अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत 'इस्लाम' और 'इस्लामी क़ानून' मौजूद है । उसकी भलाई और बरकत का तजुर्बा क्यों नहीं करते । जीवन बूटी मौजूद है फिर भी तुम तरह-तरह की बीमारियों में फंसे हो ।'

शुफ़ारान का मैदाने जंग

यूरोप वालों को नाज़ है कि 'रेड क्रास' सोसाइटी की बुनियाद उन्होंने डाली, लेकिन जब हमने इस सफ़रनामे को पढ़ा तो मालूम हुआ कि वह 'हमारा इब्ने बतूता' था जो अचानक एक ऐसे मैदान में पहुंच गया, जहां हज़ारों ज़ख़्मी इंसानों को देख कर उसका दिल तड़प उठा और फिर वह (हमारा इब्ने बतूता) ही था, जिसने उस मैदान के आस-पास के गांवों से मदद पहुंचाई । इस मदद में उसको ख़ुदा के जितने बन्दे मिल सके, उनकी रहनुमाई करके वह कारनामा अन्जाम दिया, जो यादगार रह गया । फिर जब हमारा इब्ने बतूता इस मुहिम से निपटा तो उसने अपनी एक ऐसी तहरीर (रचना) छोड़ी जिससे 'रेड क्रास' सोसायटी की दाग़ बेल पड़ी । यह सही है कि इस काम के लिए उसने जो पार्टी बनाई थी उसका नाम 'रेड क्रास' सोसाइटी नहीं रखा था, लेकिन काम यही था ।

यूरोप इस बात में बड़ा चालाक है । वह दूसरों की बुनियाद पर इमारत बनाता है और उस पर अपना बोर्ड लगा देता है । ख़ैर इस बारे में 'हमारा इब्ने बतूता असल क़िस्सा इस तरह लिखता है कि—

मैं सिसली द्वीप होता हुआ इटली गया । वहां से उत्तर की तरफ़ अल्पस के दर्रों से होता हुआ एक लम्बे-चौड़े मैदान में पहुंच गया । यह शुफ़ारान का इलाक़ा कहलाता है । मैं इस मैदान से गुज़र रहा था, अचानक मैंने एक ओर चील, कौवों

और गिद्धों को मंडलाते देखा । ये सब गिनती में इतने ज़्यादा थे कि मैंने बख़ूबी अन्दाज़ा लगा लिया कि उनके उतरने की जगह पर उनके खाने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा खाना मौजूद है । 'क्या हो सकता है उनके लिए ?' मैं इस सवाल का जवाब दिल ही दिल में सोचने लगा । 'कोई बड़ा-सा मुर्दा जानवर !' लेकिन चील, कौवे और गिद्ध तो हज़ारों की तादाद में हैं । एक, दो या दस, पांच बड़े से बड़े मुर्दा जानवरों के लिए सौ-पचास होना चाहिए । आख़िर ये इतने क्यों गिर रहे हैं ? सवाल के जवाब में खोज पैदा हुई और फिर मेरे पैर आप से आप उसी ओर उठ गए ।

थोड़ी ही देर बाद मैं एक लम्बे चौड़े मैदान में था । उस मैदान में मेरी नज़रों ने जो भयानक और दर्दनाक नज़ारा देखा, उसे बयान करने के लिए मेरे पास सही अल्फ़ाज़ नहीं हैं । पूरा मैदान हज़ारों इंसानों की लाशों और कराहते, तड़पते और चीख़ते हुए ज़ख़्मी फ़ौजियों से भरा पड़ा था । उन्हें देख कर मैं समझ गया कि दो-चार दिन पहले इस मैदान में घमासान और फ़ैसलाकुन लड़ाई हो चुकी है । उफ़ ! दोनों फ़ौजों ने इतनी लाशें और इतने ज़ख़्मी फ़ौजी छोड़े और फिर किसी ने उनकी फ़िक्र न की और उन्हें कुत्तों, चील-कौवों और गिद्धों की ख़ोराक बनने के लिए छोड़ दिया ।

मेरी आंखों के सामने अंधेरा छा गया । मुझे चक्कर-सा आने लगा । मैं सिर पकड़ कर बैठ गया । अगर मैं न बैठ जाता तो ज़रूर ही गिर जाता । कुछ देर बाद मेरी आंखों के सामने का अंधेरा छट गया तो मैंने खड़े होकर उन बदनसीबों पर फिर एक नज़र डाली, जिन्हें किसी एक इंसान की ख़ुदाई क़ायम करने और किसी एक इंसान की ख़ुदाई बचाने के मक़सद से अपने आप को क़ुर्बान कर दिया था और फिर हार जाने वाले की बात ही क्या, जीतने वाले ने भी इन बेचारों को न पूछा और इन्हें सिसकता और तड़पता छोड़ कर चला गया । आख़िर उसके फ़ौजी भी तो इन कट-मरने वालों और ज़ख़्मियों में शामिल हैं ।

जो फ़ौजी कट मरे थे, उनका ज़िक्र ही क्या । जो बहुत ज़्यादा ज़ख़्मी होते हुए भी ज़िन्दा थे, उनकी हालत बहुत ही क़ाबिले रहम थी । चारों ओर हाथ, पैर और सिर कटे पड़े थे । मरे हुए फ़ौजियों की लाशें फूल गई थीं । बहुत-सी सड़ चुकी थीं और उनसे बड़ी बदबू आ रही थी । और जो ज़ख़्मी थे वे मिट्टी और ख़ून में लिथड़े पड़े थे और तड़प रहे थे । ज़ख़्मों के दर्द के मारे चीख और चिल्ला रहे थे लेकिन उनके ज़ख़्मों पर मरहम-पट्टी करने वाला तो दूर रहा, कोई उनके सूखे मुंह में एक बूंद पानी डालने वाला भी न था । शुफ़ारान के मैदान में, जहां चलते-फिरते और हंसते-बोलते इंसानों को गाजर-मूली की तरह काट कर

फेंक दिया गया था, उसी मैदान में जंगली परिंदे, कुत्ते, गीदड़ और गिद्ध वग़ैरह उन्हीं इंसानों को नोच-नोच कर खा रहे थे। ज़िन्दा-मुर्दा सभी इन जानवरों का खाना थे। बहुत से मर चुके थे। बहुत से दम तोड़ रहे थे। बहुत से तड़प और कराह रहे थे। चीख़ रहे थे, चिल्ला रहे थे। गिड़गिड़ा रहे थे। ये सब मदद के मुहताज थे, मगर किसी के क़ानों तक उनकी आवाज़ नहीं पहुंच सकती थी। इनमें बहुत-सी ऐसी क़ीमती जानें थीं, जिन पर उनके देश वाले नाज़ करते थे और जो थोड़ी-सी तवज्जोह और देख-भाल से सेहतमन्द हो सकती थीं, मगर मौत के पंजे से जकड़ी हुई दम तोड़ रही थीं। आसमान उनके हाल पर आंसू बहा रहा था। पर ज़मीन पर कोई ऐसा न था, जिसकी आंखों में उनके लिए आंसुओं की एक भी बूंद होती।

लड़ाई के मैदान की यह भयानक और दर्दनाक हालत देख कर मैं तड़प गया। सोचने लगा कि इन घायलों की जान किस तरह बचाई जा सकती ? मेरी समझ में एक तरकीब आई। मैं एक तरफ़ को भागा। मैंने सोचा था कि मैदान के आस-पास जो गांव भी मिलेगा, उसके रहने वालों को मदद के लिए पुकारूंगा। शायद अल्लाह अपने बन्दों में से किसी को उन ग़रीबों की मदद को तैयार कर दे। इस उम्मीद में मैं एक ओर भागम्-भाग जा रहा था। कई घंटों की दौड़ भाग के बाद मैं एक गांव में पहुंचा। गांव में पहुंचते ही चीख़ने-चिल्लाने लगा, 'दौड़ो ! बचाओ ! मदद के लिए दौड़ो ! अगर तुम ज़मीन वालों पर रहम करोगे तो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।'

मेरी पुकार सुन कर एक-एक, दो-दो, चार-चार और फिर भीड़ की भीड़ लोग आकर मेरे पास जमा हो गए। जो आता मेरी बदहवासी देख कर पूछता, 'भाई ! तुम कौन हो, कहां से आए हो, तुमको किसने सताया है ?'

लोगों के जमा हो जाने के बाद मैंने मैदाने जंग के मुर्दों और ज़िन्दों का हाल रो-रोकर कह सुनाया। हाल सुनकर लोगों के दिल भर आए। उन्होंने बताया, 'पिछले हफ़्ते इस मैदान में घमासान की लड़ाई हो चुकी है। उन दिनों हम सब लोग अपने-अपने घरों से भाग गए थे। हम लोग लड़ाई ख़त्म होने के बाद वापिस आए। अब तुम बताओ क्या चाहते हो ?'

यह सुन कर मेरी हिम्मत बढ़ी। मैंने लड़ाई के मैदान में पड़े बेसहारा और बेबस ज़ख़्मियों की मदद के लिए उकसाया तो देखते-देखते बहुत से मर्द-औरतें, लड़के और लड़कियां मदद के लिए उठ खड़े हुए और फिर घण्टा भर के अन्दर ही जब वे मेरे साथ निकले तो सब के सब खाने-पीने और दवाओं के तरह-तरह के सामान से लदे हुए थे और एक न थकने वाली हिम्मत के साथ जा रहे थे।

लड़ाई के मैदान में पहुंचते ही मैंने काम बांट दिया । कुछ लोग ठहरने के लिए जगह सही करने लगे । कुछ लोग जल्दी-जल्दी घायलों की मरहम-पट्टी करने लगे कुछ ज़ख़्मियों को उठा-उठा कर लाने लगे । कुछ लोग खाना खिलाने और पानी पिलाने में लग गए । ग़र्ज यह कि मिल-जुल कर और बेग़रज़ी से काम किया गया तो दो बातों का तजुर्बा हुआ । एक यह कि कोई इंसान थकने का नाम नहीं लेता था और ज़्यादा से ज़्यादा काम करने की हिम्मत कर रहा था । दूसरे यह कि अल्लाह ने हमारी मदद के लिए ग़ैब से ऐसा सामान कर दिया, जिसे हम में से कोई सोच भी नहीं सकता था । हुआ यह कि यह ख़बर आस-पास के गांवों में आप से आप पहुंच गई । ख़बर होते ही बेग़रज़ी और अपनी ख़ुशी से ख़िदमत करने वाले रज़ाकार सामान ले-लेकर आने लगे और हमारा हाथ बटाने लगे । जो लोग नहीं आ सकते थे, लेकिन दिलों में इंसानी हमदर्दी का दर्द रखते थे, उन्होंने इमदाद और रक़म भेज दी इस मदद का नतीजा यह हुआ कि जो काम हमारे अन्दाज़े के मुताबिक़ कई महीनों का था, वह एक ही महीने में ख़त्म हो गया । यह ठीक है कि जिसकी मौत आनी थी, उसे हम न बचा सके, लेकिन जिनकी ज़िन्दगी बाक़ी थी वे सब अल्लाह की मेहरबानी से अच्छे हो गए । इन ज़िन्दा बचने वालों की तादाद लगभग चार हज़ार थी । इन चार हज़ार में हारी हुई फ़ौज के लोग भी थे और जीतने वाली फ़ौज के भी । लेकिन यह हैरतनाक बात देखने में आई कि अच्छा होने पर वही लोग, जिन्होंने एक-दूसरे को ज़ख़्मी कर दिया था, अब वे उन्हें मुहव्वत की नज़र से देख रहे थे । हर अच्छा होने वाला फ़ौजी दूसरे मजबूर की ख़िदमत में लग जाता था । अब उनमें से किसी के दिल में यह चोर न था कि कौन किस फ़ौज की ओर से लड़ने आया है । अच्छा हो जाने के बाद जो फ़ौजी घर जाना चाहता था, उसके सफ़र का इन्तिज़ाम करके सफ़र का सामान देकर रवाना कर दिया जाता । लेकिन ज़्यादातर ऐसे थे जो अच्छा होने के बाद ख़िदमत की ख़्वाहिश ज़ाहिर करते और रुक जाते थे ।

यह काम ख़त्म होन के बाद मैंने फ़ौजियों को रवाना किया । जाते वक़्त बहुत से लोगों ने मुझसे कहा कि जब आप सफ़र के लिए निकले हैं तो हमारे शहर चलिए । मैंने अभी उनको कोई जवाब नहीं दिया था कि मेरे सामने एक अधेड़ उम्र का आदमी आया । उसने मुझसे कहा, 'आपने इंसानी हमदर्दी का वह बेमिसाल नमूना पेश किया है कि रहती दुनिया तक भुलाया न जा सकेगा, लेकिन मैं चाहता हूं कि यह काम अभी अधूरा हुआ है, इसकी तक्मील हो जानी चाहिए ।' मैंने पूछा, 'वह कैसे ?' उसने बताया, 'इस तरह कि लड़ाई के इस मैदान में पहुंच कर आपने जो कुछ देखा, सुना और किया है उस पर एक तफ़्सीली लेख लिख दें । हम उसको ज़्यादा से ज़्यादा फैलाएंगे । उस लेख को फैलाने का मक़सद यह

होगा कि इंसानी हमदर्दी के लिए एक ऐसी पार्टी बन जाए, जो उन लोगों की मदद को दौड़ पड़े, जिनकी मदद करने वाला कोई न हो। लेख के छपने के बाद मेरा ख़्याल है कि ख़िदमत करने वाली एक ऐसी पार्टी बन जाएगी, जिसका मक़्सद ऐसी ही घटनाओं से पीड़ित बेसहारा लोगों की अपनी ख़ुशी से मदद करना होगा। इस लेख को लिखने के लिए आप मेरे साथ चलें। मेरे घर के पीछे जो बाग़ीचा है, वह आपके लिए बहुत अच्छा रहेगा और लिखने-पढ़ने के लिए भी मुनासिब रहेगा।'

उस आदमी की बात मेरे दिल में उतर गई। मैं उसके साथ हो लिया। वह मुझे अपने साथ अपने घर ले गया। मैंने उसके यहां ठहर कर लेख (मज़मून) लिखना शुरू कर दिया। मैंने सोचा था कि बेसहारा और मजबूर लोगों की दर्दनाक हालत दिखा कर यह अपील करूंगा कि उनकी मदद के लिए एक मुनज़्ज़म पार्टी बननी चाहिए। ऐसी पार्टी जो बेग़रज़ी से काम कर सके। परन्तु जब लेख लिखना शुरू किया तो वह फैलता चला गया। नए-नए छोटे-छोटे शीर्षकों ने ज़न्म लेना शुरू कर दिया। लड़ाई के अस्बाब, हुकूमत की हवस, इंसान पर इंसान की हुकूमत का इरादा, लड़ाई के असरात, हथियारों की दौड़, आर्थिक और मआशी बदहाली, मंहगाई, चोर बाज़ारी, अख़्लाक़ी गिरावट, लड़ाई की रोक-थाम की तदबीरें, ख़ुदा का डर, ख़ुदा के सामने जवाबदेही की याद, हुकूमत का मालिक सिर्फ़ ख़ुदा है। ये और ऐसी ही दूसरी चीज़ें आती चली गईं और लेख बढ़ते-बढ़ते किताब की शक्ल इख़्तियार कर गया। यह काम मैंने चार महीने की दिन-रात मेहनत से पूरा किया। जिस समय मैंने यह किताब अपने मेज़बान के सामने रखी और उसने मुझसे पढ़वा कर सुनी तो वह ख़ुशी से झूम उठा। वह इतना ख़ुश था कि कभी वह मेरा हाथ चूमता, कभी मेरे माथे को बोसा देता। इसके बाद उसने तीन मुन्शी इस किताब को नक़ल करने के लिए बिठा दिए। फिर जब उसकी कापियां नक़ल हो-होकर जनता तक पहुंची तो उनकी मांग की यह हालत थी कि नक़ल करने वालों का एक अच्छा-ख़ासा गिरोह इस काम के लिए बैठ गया। थोड़े ही दिनों में उस किताब का नाम देश के कोने-कोने में हो गया। दर्दमन्द दिल रखने वालों ने उसे हाथों हाथ लिया, पढ़ा, इसके बाद मुझसे आ-आकर मिले। ज़बानी बात-चीत हुई। राय-मशविरा हुआ। फिर सचमुच एक ऐसी पार्टी बन गई, जिसका ख़्वाब मेरे मेज़बान ने देखा था। बेसहारा और यतीमों की मदद के लिए प्रोग्राम तैयार किया गया। काम करने वालों की लिस्ट तैयार हुई और काम शुरू कर दिया गया। रहनुमाई का काम मेरे ही सुपुर्द किया गया। तीन साल मैंने उस पार्टी से मिल कर काम किया। इसके बाद जब मैंने देखा कि काम चल पड़ा तो वहां से विदा होकर दूसरे देशों के सफ़र के लिए चल दिया।

यह बात लिखने के बाद हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि मग़रिबी क़ौमों में मुनज़्ज़म होकर काम करने का जज़्बा उभर रहा है और वे हर बात तहरीक और आन्दोलन के तौर पर चलाने के लिए अपने को तैयार कर रहे हैं । अगर वे इसी तरह काम करते रहे तो मेरा ख़्याल है कि वे बहुत जल्द पूरी दुनिया पर छा जाएंगे ।

हड्डियों की लाइब्रेरी

हमारे इब्ने बतूता ने 'हड्डियों की लाइब्रेरी' के नाम से अपने सफ़रनामे में एक हैरतनाक लेख लिखा है । भूमिका में उसने लिखा है कि मैंने क़ाफ़ पहाड़ के 'हू' नामक दर्रे में बनी हुई एक ख़ानक़ाह में हड्डियों की लाइब्रेरी सजी हुई देखी है । इस लाइब्रेरी में ईसाइयों के माने हुए, वलियों, हिन्दुओं के बड़े-बड़े योगियों, बुद्धमत के भिक्षुओं, पारसियों के आबिदों और दूसरे धर्मों के मशहूर रहनुमाओं के जिस्मों की हड्डियां अच्छे ढंग से सजी हुई रखी हैं । कहीं उनकी खोपड़ियां लाइब्रेरी की सजावट बनी हुई हैं तो कहीं उनके हाथों और पैरों की हड्डियां लाइब्रेरी की रौनक़ बढ़ा रही हैं । शीशे की एक अलमारी में एक ईसाई वली का पूरा ढांचा मौजूद है और उसी के पास हिन्दुस्तान के एक हिन्दु राजा दीधेश के अवशेष महफ़ूज़ हैं ।

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि हालांकि ये सारी हड्डियां बड़ी सफ़ाई और हिफ़ाज़त से सजी हुई हैं । लेकिन जब पहले पहल इन पर नज़र पड़ती है तो देखने वाले पर एक डर-सा छा जाता है और वह इसे भूतों की कोठरी महसूस करता है । ये सारी खोपड़ियां, हड्डियां, मुकम्मल, नामुकम्मल ढांचे, कई धर्मों के उन महात्माओं और रहनुमाओं के हैं जो अपने ज़माने में अपनी ढंग की ख़ास इबादत और रियाज़त में अपनी मिसाल आप थे । उनमें से कोई तो ऐसा था, जिसने तीस साल का मौनव्रत (ख़ामोशी का रोज़ा) रखा था । उसे बोलते किसी ने नहीं देखा । कोई ऐसा था जो जंगलों में मारा-मारा फिरता रहा और घास-फूस खाकर ज़िंदगी बसर करता रहा । कोई किसी जगह एक ख़ास अन्दाज़ में बैठ गया और फिर वहीं जमा रहा । उम्र भर उस जगह से उठा ही नही । उनमें से ख़ुदा के किसी वली ने अपने आप को उम्र भर एक चट्टान से बांधे रखा, तो किसी ने ज़ंजीरों से जकड़े रखा था । किसी ने जानवरों के भटों को अपनी रहने की जगह बनाया था, तो किसी ने अंधे कुंए को । ये मेहनतकश वली उन जगहों पर ख़ुदा की इबादत में पूरे तौर पर लगे रहते थे । उनके ज़माने के लोगों ने इन वलियों, योगियों, सन्यासियों, बुद्धभिक्षुओं और इबादत गुज़ारों को विलायत और इबादत का बहुत ऊंचा दर्जा

दे रखा था । इन्हीं अक़ीदतमन्दों को इन वलियों और बुज़ुर्गों के शरीर का जो हिस्सा भी कहीं मिल गया चूम कर उठा लिया और यादगार के तौर पर रख छोड़ा ।

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि पुराने ज़माने में ईरान का एक ज़बरदस्त विजेता शहंशाह पोरस था । पोरस को इन वलियों और बुज़ुर्गों की हड्डियां जमा करने का शौक़ पैदा हुआ । इस वजह से उसने अपनी जीत के दौरान हर देश से ये चीज़ें भी हासिल कीं, फिर जब वापिस हुआ तो अपने आख़िरी दौर में यह ख़ानक़ाह बनवाई और उसमें वह कुछ जमा कर दिया जो मैंने देखा । क़ाफ़ पहाड़ के 'हू' दर्रे की हड्डियों की लाइब्रेरी में जिस सन्यासी या वली के शरीर का जो हिस्सा जहां रखा है, उसके नीचे उसी का परिचय और उसकी इबादत व रियाज़त का तरीक़ा भी लिखा है । मैंने इसी परिचय से फ़ायदा उठा कर इसलिए यह लेख लिखा है, ताकि अल्लाह के बन्दे सबक़ हासिल कर सकें ।

इसके बाद हमारा इब्ने बतूता अपना लेख शुरू करता है । वह लिखता है---

अल्लाह ने तो अपने बन्दों के लिए एक़ ही दीन पसन्द किया था और उसी की हिफ़ाज़त के लिए वह अपने रसूल भेजता रहा । सबसे आख़िर में अपने आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिए उस दीन को मुकम्मल कर दिया ।

शुरू-शुरू में इंसान इन्हीं सीधे तरीक़ों पर अल्लाह की इबादत करता था, जो रसूलों ने बताए थे । वह इस तरह की सख़्त इबादतों और रियाज़तों से वाक़िफ़ न था । लेकिन जहां-जहां हद से लोग बढ़ने लगे, इस तरह की इबादतें जन्म लेने लगीं ।

दुनिया का यह भी अजीब और हैरतनाक रंग देखा गया है कि एक ही वक़्त में एक ही तरह की इबादतें पूरी दुनिया में पाई जाती रहीं । अतः हम देखते हैं कि जिस वक़्त मिस्र के पूजाघरों में फ़क़ीरों और दुरवेशों ने दुनिया छोड़ने की ओर रुख़ किया, ठीक उसी वक़्त ईरान, हिन्दुस्तान और दूसरे देशों में भी लोग दुनिया से बेज़ार और नफ़रत करते दिखाई देने लगे । इतिहास से पता चलता है कि जब यूरोप के ईसाइयों में लज़्ज़त छोड़ देने की बीमारी फैली, ठीक उसी ज़माने में हिन्दुस्तान के योगियों, सन्यासियों और बौद्ध भिक्षुओं को जंगलों में इबादत करते देखा गया । ऐसा मालूम होता है कि जैसे एक महसूस न होने वाली लहर चलती है जो पूरब से पश्चिम तक पूरी ज़मीन को अपनी लपेट में ले लेती है । कुछ पता नहीं चलता कि जिस देश और धर्म के दुरवेशों ने किस से असर लेकर इबादत और तपस्या के ये ढंग अपना लिए । शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है । उसने उनको छोड़ने, त्याग करने कुंवारा रहना और ब्रह्मचर्य को अख़्लाक के ऊंचा करने का सबसे ऊंचा

नमूना समझाया। कहीं यह दिल में डाला कि जवानी में ख़ूब 'अल्लाह-अल्लाह' कर लिया, अब छोड़ो यह दुनिया और ख़ुदा से लौ लगाओ और हटाओ यह बखेड़ा। इस तरह बहका कर वनवास की ओर आमादा किया और वे घने जंगलों में इबादत करने जा बैठे। कहीं यह समझाया कि बात तो जब है कि शुरू उम्र ही से ब्रह्मचारी रहा जाए। उम्र भर शादी-विवाह न किया जाए और न दुनिया के कारोबार ही से किसी तरह का फ़ायदा उठाया जाए। इसलिए ऐसे लोग भी हुए हैं जो हमेशा कुंवारे रहे। यूरोप में तो राहिबों का एक बराबर गिरोह पाया जाता रहा है, जिसने कुंवारे रहने में कमाल हासिल किया। चर्च में मज़हबी ख़िदमत करने के लिए जो लोग रखे जाते थे, उनके लिए वह बात बहुत ना-पसन्द समझी जाती थी कि वे शादी करें, बाल-बच्चों के झमेलों और ग्रहस्ती के बखेड़ों में पड़ें। ऐसा क्यों हुआ ? इसकी तीन वजहें थीं।

पहली यह कि दुनिया में जहां-जहां शिर्क ने अपने पंजे जमाए, जहां-जहां इंसान तौहीद के तक़ाज़ों को भूला और उसने आख़िरत के हिसाब-किताब को भुला दिया, वहां-वहां पहले दुनिया तलबी आई, फिर बद-किरदारी और शहवानियत का ज़ोर हुआ। उसका तोड़ करने के लिए हिन्दुस्तान के योगियों और सन्यासियों ने, ईसाइयों के राहिबों ने, पारसियों के आबिदों ने और बौद्ध भिक्षुओं ने बीच की राह अपनाने के बजाए, इन्तिहा पसन्दी की राह अपनाई। उन्होंने अस्मत और पाकदामनी पर इतना ज़ोर दिया कि औरत और मर्द का जायज़ ताल्लुक़ भी उनको नापाक, घिनौना और दीन के ख़िलाफ़ मालूम होने लगा। उन्होंने इसमें ऐसी सख़्ती अपनाई कि एक दीनदार आदमी के लिए जायदाद और माल रखना एक घिनौनी चीज़ समझा जाने लगा और दीनदार से कहा कि वह धन-दौलत और दुनिया के कारोबार से कोई रिश्ता न रखे। इसी तरह मुश्रिक क़ौमों की लज़्ज़त परस्ती के ख़िलाफ़ नफ़्स को मारना और इच्छाओं को दबाना दीन का सबसे बड़ा काम समझ लिया गया। इस मक़सद के लिए जिस्म को तरह-तरह की तक्लीफ़ देना आदमी की रूहानियत का कमाल समझा जाने लगा।

इन इबादतों और रियाज़तों के आम होने का दूसरा सबब यह था कि उन दुरवेशों की इबादतों और रियाज़तों को देख कर जनता उनको ख़ुदा का प्यारा समझ बैठी और उनसे यह उम्मीद लगाई कि उनके ज़रिए मुरादें पूरी हो सकती हैं। ये नादान लोग उनकी ओर बढ़े। शुरू-शुरू में इन दुरवेशों ने उनसे बचने की कोशिश की, लेकिन अक़ीदतमन्दों से बच न सके। वनों और जंगलों में उनके पास था ही क्या, जो देते, तावीज़ और गण्डे देने लगे। फ़ाल-गीरी (ज्योतिष) का धन्धा शुरू करके ग़ैब की बातें भी बताने लगे। ज़िन्नों और भूतों को फूंकों से भगाने लगे। जनता

दे रखा था । इन्हीं अक़ीदतमन्दों को इन वलियों और बुज़ुर्गों के शरीर का जो हिस्सा भी कहीं मिल गया चूम कर उठा लिया और यादगार के तौर पर रख छोड़ा ।

हमारा इब्ने बतूता लिखता है कि पुराने ज़माने में ईरान का एक ज़बरदस्त विजेता शहंशाह पोरस था । पोरस को इन वलियों और बुज़ुर्गों की हड्डियां जमा करने का शौक़ पैदा हुआ । इस वजह से उसने अपनी जीत के दौरान हर देश से ये चीज़ें भी हासिल कीं, फिर जब वापिस हुआ तो अपने आख़िरी दौर में यह ख़ानक़ाह बनवाई और उसमें वह कुछ जमा कर दिया जो मैंने देखा । क़ाफ़ पहाड़ के 'हू' दर्रे की हड्डियों की लाइब्रेरी में जिस सन्यासी या वली के शरीर का जो हिस्सा जहां रखा है, उसके नीचे उसी का परिचय और उसकी इबादत व रियाज़त का तरीक़ा भी लिखा है । मैंने इसी परिचय से फ़ायदा उठा कर इसलिए यह लेख लिखा है, ताकि अल्लाह के बन्दे सबक़ हासिल कर सकें ।

इसके बाद हमारा इब्ने बतूता अपना लेख शुरू करता है । वह लिखता है—

अल्लाह ने तो अपने बन्दों के लिए एक ही दीन पसन्द किया था और उसी की हिफ़ाज़त के लिए वह अपने रसूल भेजता रहा । सबसे आख़िर में अपने आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिए उस दीन को मुकम्मल कर दिया ।

शुरू-शुरू में इंसान इन्हीं सीधे तरीक़ों पर अल्लाह की इबादत करता था, जो रसूलों ने बताए थे । वह इस तरह की सख़्त इबादतों और रियाज़तों से वाक़िफ़ न था । लेकिन जहां-जहां हद से लोग बढ़ने लगे, इस तरह की इबादतें जन्म लेने लगीं ।

दुनिया का यह भी अजीब और हैरतनाक रंग देखा गया है कि एक ही वक़्त में एक ही तरह की इबादतें पूरी दुनिया में पाई जाती रहीं । अतः हम देखते हैं कि जिस वक़्त मिस्र के पूजाघरों में फ़क़ीरों और दुरवेशों ने दुनिया छोड़ने की ओर रुख़ किया, ठीक उसी वक़्त ईरान, हिन्दुस्तान और दूसरे देशों में भी लोग दुनिया से बेज़ार और नफ़रत करते दिखाई देने लगे । इतिहास से पता चलता है कि जब यूरोप के ईसाइयों में लज़्ज़त छोड़ देने की बीमारी फैली, ठीक उसी ज़माने में हिन्दुस्तान के योगियों, सन्यासियों और बौद्ध भिक्षुओं को जंगलों में इबादत करते देखा गया । ऐसा मालूम होता है कि जैसे एक महसूस न होने वाली लहर चलती है जो पूरब से पश्चिम तक पूरी ज़मीन को अपनी लपेट में ले लेती है । कुछ पता नहीं चलता कि जिस देश और धर्म के दुरवेशों ने किस से असर लेकर इबादत और तपस्या के ये ढंग अपना लिए । शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है । उसने उनको छोड़ने, त्याग करने कुंवारा रहना और ब्रह्मचर्य को अख़्लाक के ऊंचा करने का सबसे ऊंचा

नमूना समझाया । कहीं यह दिल में डाला कि जवानी में ख़ूब 'अल्लाह-अल्लाह' कर लिया, अब छोड़ो यह दुनिया और ख़ुदा से लौ लगाओ और हटाओ यह बखेड़ा । इस तरह बहका कर वनवास की ओर आमादा किया और वे घने जंगलों में इबादत करने जा बैठे । कहीं यह समझाया कि बात तो जब है कि शुरू उम्र ही से ब्रह्मचारी रहा जाए । उम्र भर शादी-विवाह न किया जाए और न दुनिया के कारोबार ही से किसी तरह का फ़ायदा उठाया जाए । इसलिए ऐसे लोग भी हुए हैं जो हमेशा कुंवारे रहे । यूरोप में तो राहिबों का एक बराबर गिरोह पाया जाता रहा है, जिसने कुंवारे रहने में कमाल हासिल किया । चर्च में मज़हबी ख़िदमत करने के लिए जो लोग रखे जाते थे, उनके लिए वह बात बहुत ना-पसन्द समझी जाती थी कि वे शादी करें, बाल-बच्चों के झमेलों और ग्रहस्ती के बखेड़ों में पड़ें । ऐसा क्यों हुआ ? इसकी तीन वजहें थीं ।

पहली यह कि दुनिया में जहां-जहां शिर्क ने अपने पंजे जमाए, जहां-जहां इंसान तौहीद के तक़ाज़ों को भूला और उसने आख़िरत के हिसाब-किताब को भुला दिया, वहां-वहां पहले दुनिया तलबी आई, फिर बद-किरदारी और शहवानियत का ज़ोर हुआ । उसका तोड़ करने के लिए हिन्दुस्तान के योगियों और सन्यासियों ने, ईसाइयों के राहिबों ने, पारसियों के आबिदों ने और बौद्ध भिक्षुओं ने बीच की राह अपनाने के बजाए, इन्तिहा पसन्दी की राह अपनाई । उन्होंने अस्मत और पाकदामनी पर इतना ज़ोर दिया कि औरत और मर्द का जायज़ ताल्लुक़ भी उनको नापाक, घिनौना और दीन के ख़िलाफ़ मालूम होने लगा । उन्होंने इसमें ऐसी सख़्ती अपनाई कि एक दीनदार आदमी के लिए जायदाद और माल रखना एक घिनौनी चीज़ समझा जाने लगा और दीनदार से कहा कि वह धन-दौलत और दुनिया के कारोबार से कोई रिश्ता न रखे । इसी तरह मुश्रिक क़ौमों की लज़्ज़त परस्ती के ख़िलाफ़ नफ़्स को मारना और इच्छाओं को दबाना दीन का सबसे बड़ा काम समझ लिया गया । इस मक़्सद के लिए जिस्म को तरह-तरह की तक्लीफ़ देना आदमी की रूहानियत का कमाल समझा जाने लगा ।

इन इबादतों और रियाज़तों के आम होने का दूसरा सबब यह था कि उन दुरवेशों की इबादतों और रियाज़तों को देख कर जनता उनको ख़ुदा का प्यारा समझ बैठी और उनसे यह उम्मीद लगाई कि उनके ज़रिए मुरादें पूरी हो सकती हैं । ये नादान लोग उनकी ओर बढ़े । शुरू-शुरू में इन दुरवेशों ने उनसे बचने की कोशिश की, लेकिन अक़ीदतमन्दों से बच न सके । वनों और जंगलों में उनके पास था ही क्या, जो देते, तावीज़ और गण्डे देने लगे । फ़ाल-गीरी (ज्योतिष) का धन्धा शुरू करके ग़ैब की बातें भी बताने लगे । जिन्नों और भूतों को फूंकों से भगाने लगे । जनता

उनको पहुंचा हुआ बुज़ुर्ग समझती थी । इन पहुंचे हुए लोगों ने उन्हें अल्लाह से इतना दूर पहुंचा दिया कि फिर उनके लिए पलटना बहुत ही मुश्किल हो गया ।

ऐसी इबादतों के फैलने का तीसरा सबब यह था कि उनके पास दीन की हदें तय करने के लिए कोई ऐसी साफ़ और सादा शरीअत और खुली हुई सुन्नत न थी जिससे वे हिदायत हासिल करते और समझ सकते कि इसमें हमारे लिए कहां तक पाबन्दी और गुंजाइश है, अल्लाह की किताबें (तौरात व बाइबिल आदि) में काफ़ी रद्दो-बदल हो चुका था । पारसियों के पास (उन्हीं के कहने के मुताबिक़) ख़ुदाई किताब थी । उसका तर्जुमा करके जब लोगों के सामने लाया गया, तो वह एक ऐसा गोरखधन्धा था कि लोग समझ ही न सके । यही हाल हिन्दुस्तान के लोगों का था । यहां के लोग वेदों का नाम तो लेते हैं परन्तु उन्हें मालूम नहीं कि वेदों में असल इलहाम (आकाशवाणी) क्या है और ग़ैर-इलहाम क्या है । यह तो ज़ाहिर है कि अल्लाह ने हिन्दुस्तान में भी अपने रसूल भेजे 'अला कुल्लि क़ौमिन हाद' लेकिन अफ़सोस कि यहां के बाशिन्दों को यह भी नहीं मालूम कि उनके रसूलों का नाम और उनका असल मुक़ाम क्या था । इन ग़रीबों ने ले देकर 'दन्त कथाओं' पर भरासो किया । मैंने अपने सफ़र के दौरान हिन्दुस्तान के एक विद्वान से पूछा, 'क्या तुम अपने धर्म की परिभाषा (तारीफ़) बता सकते हो ?' तो वह कुछ न बता सका ।

कहने का मतलब यह है कि शरीअत और नबियों के तरीक़ों के मौजूद न होने से, उनमें नई-नई बातें फूट पड़ीं । दुनिया को छोड़ देना भी इन्हीं नई बातों में से एक नई बात है । हिन्दुस्तान में तो इतिहास लिखने का चलन ही न था । इसलिए यहां के बारे में तो कहा ही नहीं जा सकता कि वह पहला इंसान कौन था, जिसने सबसे पहले दुनिया से रिश्ता तोड़ा । ईसाइयों के इतिहास से मालूम होता है कि उनमें दुनिया छोड़ने का ख़याल सबसे पहले मिस्र के ईसाइयों में आया । सन् 250 ई० में वही सबसे पहली ख़ानक़ाह बनी जो सन् 350 ई० तक यानी सौ साल बाक़ी रही । उसे सैन्ट एन्थानी ने क़ायम किया था । इसके बाद दूसरी दरगाह लाल सागर के किनारे क़ायम हुई और फिर यह सिलसिला आग और सैलाब की तरह आस-पास फैल गया । दुनिया को छोड़ देने वाले राहिब मर्द और औरतों के लिए दरगाहें बनने लगीं । शाम, फ़िलिस्तीन, अफ़्रीका, यूरोप (और शायद हिन्दुस्तान भी) सब इस चपेट में आ गए । बहुत-सी दरगाहों में एक साथ तीन-तीन हज़ार राहिब रहते थे । हिन्दुस्तान के एक-एक वन में हज़ारों ऋषि और मुनि दुनिया छोड़ कर सन्यांस लिए हुए थे ।

क़ाफ़ पहाड़ के दर्रे 'हू' की हड्डियों की लाइब्रेरी में हर वली के बारे में जो

मालूमात मौजूद हैं उसे देख कर मालूम होता है कि उन में से कुछ तो केवल कहानियां हैं । मिसाल के तौर पर दाधीश के बारे में लिखा है कि वह 'नौमेशारान' नामक जंगलों के निकट आबाद बस्तियों का नेक राजा था । उसके दौर में एक बार अहरमन और यज़दान (बदी और नेकी के ख़ुदा) के बीच हौलनाक लड़ाई छिड़ी । दाधीच के तार्रुफ़ में अहरमन और यज़दान फ़ौजों को देवता और राक्षस कहा गया है । देवताओं और राक्षसों में लड़ाई छिड़ी तो राक्षस जीतने लगे। देवताओं ने मशविरा किया कि राक्षसों को कैसे हार दी जा सकती है । एक देवता ने अपने इल्म के ज़ोर से बताया कि अगर शहंशाह दाधीश अपनी रीढ़ की हड्डी हमें दे दें और हम उसकी रीढ़ की कमान और पसलियों के तीर बना कर लड़ें तो राक्षसों को हरा सकते हैं ।

अतः देवताओं ने दाधीश से दरख़्वास्त की, दाधीस ख़ुशी-ख़ुशी तैयार हो गया । रीढ़ की हड्डी देने का तरीक़ा यह अपनाया कि वह एक ऐसे तालाब में खड़ा हो गया जिसमें जोंक और छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े ज़्यादा तादाद में पाए जाते थे । जोंकों ने उसके शरीर का ख़ून पी लिया । कीड़े-मकोड़ों ने गोश्त खा लिया । जब ढांचा रह गया तो देवताओं ने उसे निकाला और उसे इस्तेमाल करके राक्षसों पर जीत हासिल की । हक़ीक़त अल्लाह ही जानता है ।

इस लाइब्रेरी में ईसाई वलियों की हड्डियों की एक लम्बी क़तार है । इन बुज़ुर्गों में ऐसे भी थे जिन्होंने लज़्ज़त और स्वाद छोड़ने के लिए गली-सड़ी चीज़ें खाकर अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दी । कोई किसी कुएं में उल्टा लटक गया । एक सन्त बेसारियूल चालीस दिन तक कांटों वाली झाड़ी में पड़ा रहा ताकि शरीर को कोई सुख न मिल सके । इसके बाद चालीस साल तक धरती से पीठ न लगाई । एक वली तीन साल तक इबादत में एक टांग पर खड़ा रहा, इस पूरे समय में न वह कभी बैठा और न लेटा । आराम के लिए बस एक चट्टान का सहारा ले लेता । उसका खाना सिर्फ़ वह चीज़ थी जो उसके मानने वाले दे जाते थे ।

इसी प्रकार की मालूमात के साथ लाइब्रेरी में सैकड़ों मुकम्मल ढांचे रखे हैं । इनमें सबसे ज़्यादा दर्दनाक उन बुज़ुर्गों की कहानी है, जिन्होंने ख़ुदा की मुहब्बत में अपने को लोगों से अलग कर रखा था । यहां तक कि अपने मां-बाप, भाइयों और बहनों तक को अपने से मिलने नहीं दिया । इन वलियों ने शादी अपने ऊपर हराम कर ली थी । और इस वजह से कि कहीं ख़ुदा की मुहब्बत कम न हो जाए, इन सारी मुहब्बतों को क़ुरबान कर दिया था, जिनके हक़दार उनके घर वाले थे । इनमें से कुछ दिल दहला देने वाली बातें ये हैं ।

एक सन्त एवागरेस के बारे में लिखा है कि वह सालों तक जंगलों में तपस्याएं

और रियाज़तें करता रहा । एक दिन अचानक उसके पास उसके मां-बाप के ख़त पहुंचे जो सालों से उसकी जुदाई में तड़प रहे थे । सन्त को अन्देशा पैदा हुआ कि इन ख़तों को पढ़ कर मां-बाप की मुहब्बत उभर आएगी, उनको उसने पढ़े बिना आग में झोंक दिया ।

एक और सन्यासी थ्योडोरस था। उसकी मां और बहन बहुत से पादरियों के सिफ़ारिशी ख़त लेकर उसकी ख़ानक़ाह में पहुंचीं और चाहा कि बस एक नज़र बेटे और भाई को देख लें, मगर सन्यासी जी ने उनके सामने आने से इनकार कर दिया।

एक और 'साहब' ने कमाल ही कर दिया । वह अपने मां-बाप को छोड़ कर सत्ताइस साल तक ग़ायब रहे । बाप तो बेटे के ग़म में मर गया । मां ज़िंदा थी । जब उसने सुना कि मेरा बेटा वली हो गया तो वह उससे मिलने चली । परन्तु ख़ानक़ाह के अन्दर किसी औरत के जाने की इजाज़त नहीं थी । मां ने लाख ख़ुशामद की कि यदि मुझे अन्दर नहीं बुलाते तो ख़ुद ही बाहर अपनी एक झलक दिखा दो, मैं इतनी दूर से देखने के लिए आई हूं । मगर शाबाश है 'ख़ुदा के वली' ने साफ़ इनकार कर दिया । तीन दिन और तीन रात वह बूढ़ी औरत ख़ानक़ाह के दरवाज़े पर भूखी-प्यासी पड़ी रही । आख़िरकार वहीं उसने दम तोड़ दिया । तब सन्यासी जी निकल कर बाहर आए । मां को देख कर आंखें डबडबा आईं । बस इस ग़लती पर कि आंखों में आंसू भर आए, मां को देख कर वापस गए तो अपनी आंखें फोड़ लीं ।

ऐसी ही बेदर्दी दुनिया छोड़ने वाले इन वलियों ने अपनी औलाद के साथ की । एक आदमी म्युटीयस का क़िस्सा इस तरह लिखा हुआ है कि वह एक ख़ुशहाल आदमी था । अचानक उस पर दुनिया छोड़ देने का दौरा पड़ा । वह अपने आठ साल के इकलौते बेटे को लेकर आश्रम में पहुंचा । वहां उसकी रूहानी तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी था कि बेटे की मुहब्बत दिल से निकाल दे । इसलिए सबसे पहले उसे बेटे से अलग रखा गया । इसके बाद बहुत दिनों तक उसके सामने उसके बेटे को तरह-तरह की तक्लीफ़ें पहुंचाई गईं । विलायत का उम्मीदवार यह सब कुछ देखता रहा और सहन करता रहा । इस इम्तिहान में पास हो गया तो आश्रम के शेख़ ने उसे हुक्म दिया कि अपने प्यारे बेटे को ख़ुद अपने हाथों से नदी में फेंक दे । जब वह बेटे को नदी में फेंकने के लिए तैयार हो गया तो दूसरे लोगों ने बच्चे की जान बचा ली, जो बच्चे नदी में डूबने से बचाने के लिए पहले से तैनात कर दिए गए थे । इसके बाद यह मान लिया गया कि वह अल्लाह का वली हो गया ।

हमारे इब्ने बतूता ने इस प्रकार के क़िस्से लिखने के बाद इबादत के इस तरीक़े पर कड़ी तनक़ीद की है । उसने तनक़ीद करते हुए लिखा है कि इबादत का यह तरीक़ा फ़ितरत से खुली लड़ाई है । दुनिया छोड़ने वालों ने जब फ़ितरत से हार खाई तो वे सारे आश्रम और वे सारे स्थान जो ख़ुदा की पूजा के गढ़ थे, बद-अख़्लाक़ी और बद-किरदारी का अड्डा बन गए । हमारे इब्ने बतूता ने अपने लेख में हर देश के हार खाए हुए सन्यासियों की बद-किरदारी के क़िस्से लिखे हैं । लेकिन हम उन अश्लील क़िस्सों को लिखना नहीं चाहते । अपना लेख पूरा करते हुए उसने बड़े फ़ख़्र के साथ इस्लामी इबादतों का ज़िक्र किया है और आख़िर में यह हदीस लिखी है—

'इस्लाम में रहबानित (सन्यास) नहीं है ।'